सत्यमेव जयते

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

राजभाषा

रत्नसिंधु

संयोजक

बैंक ऑफ़ इंडिया

रिश्तों की जमापूँजी

रत्नागिरी अंचल

हिंदी छमाही पत्रिका | अंक : 12 | नवंबर 2018

वाह बच्चों ...!

मखदुम अब्दुल नाकाडे
पदविका
(सिविल इंजिनिअरिंग - 82%)
सुपुत्र, अब्दुल अजीज नाकाडे,
आकाशवाणी

स्वागत...

आलोक कुमार सिंह
सहायक आयुक्त,
सीमा शुल्क रत्नागिरी

आपकी राय....

भा. कृ. अनु. प. - के. मां. प्रौं. स., वेरावल

प्रिय महोदय,

उपर्युक्त विषय एवं संदर्भानुसार आपके नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका ''राजभाषा रत्नसिंधु'' का अंक इस कार्यालय को प्राप्त हुई जिसकी प्राप्ति स्वीकृति भेज रहा हूं। राजभाषा हिन्दी के प्रयोग की दिशा में आपके नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का प्रयास सराहनीय है और ऐसे ही आगे बढ़े।

सधन्यवाद.

(टोम्स सी जोसेफ)
अध्यक्ष, न.रा.का.स. एवं
प्रभारी वैज्ञानिक

इंडियन ऑयल कार्पोरेशन लिमिटेड

संपादक, राजभाषा रत्नसिंधु
महोदय,

आपके विभाग द्वारा प्रकाशित राजभाषा रत्नसिंधु का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका का मुखपृष्ठ आकर्षक है तथा कृषि को समर्पित है। हिंदी का राजभाषा तक का सफर, जल बचाओ, जीवन बचाओ, काफी अच्छी रचनाएँ हैं तथा यह पत्रिका राजभाषा की गतिविधियों का जीता जागता दस्तावेज है। आशा है कि यह पत्रिका निश्चित ही हमारे संस्थान में राजभाषा हिंदी की प्रगति दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी।

संपादन मंडल की पूरी टीम को बधाई एवं शुभकामनाओं सहित,

शिखा जैन,
सहायक हिंदी अधिकारी, गुजरात रिफायनरी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग कार्यालय
महालेखाकार (लेखा व हक) राजस्थान

प्रिय महोदय,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका ''राजभाषा रत्नसिंधु'' के 11 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनायें प्रभावशाली एवं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया सुश्री अंजलि राकेश पवार का लेख ''आजादी'', सुश्री सुधा पण्डित का लेख ''काबिलियन और कामयाबी'', श्री. सी. जे. महामुलकर का लेख ''सत्यनिष्ठा'' तथा श्री. चन्द्रकान्त कुमार का लेख ''स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत'' प्रशंसनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कल्याण अधिकारी/ राजभाषा कक्ष

राजभाषा रत्नसिंधु

अध्यक्षीय संबोधन....

प्रिय साथियों,

तमसो मां ज्योतिर्गमयः

आप सभी को सस्नेह नमस्कार तथा हार्दिक शुभकामनाएं।

अभी-अभी दीवाली का त्योहार संपन्न हुआ है। हमारे भारत देश की संस्कृति विविधता से भारी है, विविध प्रदेश, विविध संस्कृति, विविध धर्म, विविध भाषाओं से संपन्न है। प्राचीनकाल से भारत को देवताओं तथा संतो की भूमि माना गया है। वैसे ही विविध धर्म जाति के लोग विविध त्योहार मनाते है। त्योहारों की शृंखला प्रकृति के ढांचे के अनुसार होती है और मौसम के अनुसार रसोई की आरोग्यवर्धक व्यवस्था होती है। इसलिए मुझे लगता है कि भारत में मनाए जाने वाले त्योहार मनुष्य के जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, जो सभी का उत्साह, जोश और आनंद दुगना करके आपने जीवन की सफलता में अपना महत्व रखते है।

आप सभी सदस्य कार्यालयों के सहयोग से ही हमारी समिति पिछले १४ साल से अपना कार्य प्रगति के साथ कर रही है। इस में समिति ने अपना स्वतंत्र कार्यालय तथा पुस्तकालय प्रारंभ किया। समिति पिछली दो साल से स्वयं की वेबसाईट चलती है साथ में गृह मंत्रालय की वेबसाईट भी अपडेट रखी है। समिति के वेबसाईट पर सभी गतिविधियां आपको देखने को मिलेगी और राजभाषा विषयक सभी जानकारी पा सकते है। हिंदी प्रचार-प्रसार हेतु हिंदी पख्वाडे का आयोजन करती है। इसी दौरान विविध समारोह तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

समिति अपनी 'राजभाषा रत्नसिंधु' हिंदी पत्रिका प्रत्येक छमाही अंतराल पर प्रकाशित करती है, यह सदस्य कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के प्रतिभा को उजागर हेतु एक मंच उपलब्ध करती है। ई पत्रिका 'प्रेरणा' के माध्यम से समिति राजभाषा ज्ञान को बढाने का प्रयास करती है। जिससे सभी सदस्य कार्यालय के स्टाफ सदस्य लाभान्वित हुए हैं। समिति के इन सभी कार्यों के फलस्वरूप समिति को क्षेत्रीय कार्यान्वयन का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। यह केवल आप सभी के सहयोग से ही हुआ है। इसलिए मैं अध्यक्ष के रूप में आपको धन्यवाद दूंगा और इसी तरह आगे आपके सहयोग की अपेक्षा करूंगा।

मंगल कामनाओं के साथ धन्यवाद!

बी. वी. एस. अच्युतराव
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

राजभाषा रत्नसिंधु

अध्यक्षीय संबोधन....

प्रिय साथियों,

तमसो मां ज्योतिर्गमयः

आप सभी को सस्नेह नमस्कार तथा हार्दिक शुभकामनाएं।

अभी–अभी दीवाली का त्योहार संपन्न हुआ है। हमारे भारत देश की संस्कृति विविधता से भारी है, विविध प्रदेश, विविध संस्कृति, विविध धर्म, विविध भाषाओं से संपन्न है। प्राचीनकाल से भारत को देवताओं तथा संतो की भूमि माना गया है। वैसे ही विविध धर्म जाति के लोग विविध त्योहार मनाते है। त्योहारों की शृंखला प्रकृति के ढांचे के अनुसार होती है और मौसम के अनुसार रसोई की आरोग्यवर्धक व्यवस्था होती है। इसलिए मुझे लगता है कि भारत में मनाए जाने वाले त्योहार मनुष्य के जीवन में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है, जो सभी का उत्साह, जोश और आनंद दुगना करके आपने जीवन की सफलता में अपना महत्व रखते है।

आप सभी सदस्य कार्यालयों के सहयोग से ही हमारी समिति पिछले १४ साल से अपना कार्य प्रगति के साथ कर रही है। इस में समिति ने अपना स्वतंत्र कार्यालय तथा पुस्तकालय प्रारंभ किया। समिति पिछली दो साल से स्वयं की वेबसाईट चलती है साथ में गृह मंत्रालय की वेबसाईट भी अपडेट रखी है। समिति के वेबसाईट पर सभी गतिविधियां आपको देखने को मिलेगी और र ा ज भाषा विषयक सभी जानकारी पा सकते है। हिंदी प्रचार–प्रसार हेतु हिंदी पख्वाडे का आयोजन करती है। इसी दौरान विविध समारोह तथा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

समिति अपनी 'राजभाषा रत्नसिंधु' हिंदी पत्रिका प्रत्येक छमाही अंतराल पर प्रकाशित करती है, यह सदस्य कार्यालय के स्टाफ सदस्यों के प्रतिभा को उजागर हेतु एक मंच उपलब्ध करती है। ई पत्रिका 'प्रेरणा' के माध्यम से समिति राजभाषा ज्ञान को बढाने का प्रयास करती है। जिससे सभी सदस्य कार्यालय के स्टाफ सदस्य लाभान्वित हुए हैं। समिति के इन सभी कार्यों के फलस्वरूप समिति को क्षेत्रीय कार्यान्वयन का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ था। यह केवल आप सभी के सहयोग से ही हुआ है। इसलिए मैं अध्यक्ष के रूप में आपको धन्यवाद दूंगा और इसी तरह आगे आपके सहयोग की अपेक्षा करूंगा।

मंगल कामनाओं के साथ धन्यवाद!

बी वी एस ए राव

बी. वी. एस. अच्युतराव
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

राजभाषा
रत्नसिंधु

अंतरंग

त्यौहारों के बदलते रंग 1

भारतीय संस्कृति में यात्राओं का महत्त्व 2

स्वच्छता अभियान 4

भारत में सामाजिक विकास स्रोत परमाणु ऊर्जा 6

बच्चे ईश्वर का एक हसीन वरदान 9

कार्मिक मनोविज्ञान 10

स्वच्छ जल, स्वच्छ भारत 12

भारत सपनों का ! 14

रेल विकास की ओर... 15

भारत के आर्थिक विकास के सक्षम बाधाएं 16

आचार्य द्रोण : आधुनिक अध्यापकों के मिथक (मनु शर्मा के उपन्यासों के संदर्भ में) 17

वर्तमान में बैंकिंग परिवेश 22

हिंदी साहित्य में पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांकों की प्रासंगिकता एवं उपादेयता 24

अध्यक्ष
बी वी एस अच्युतराव
अध्यक्ष एवं उप महाप्रबंधक,
बैंक ऑफ इंडिया

संपादक
रमेश गायकवाड
सदस्य सचिव
एवं वरिष्ठ प्रबंधक राजभाषा,
बैंक ऑफ इंडिया

संपादन सहयोग
पुरुषोत्तम डोंगरे
आकाशवाणी

लक्ष्मीकांत भाटकर
सीमा शुल्क

सतीश रानडे
न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी

संतोष पाटोळे
कोंकण रेलवे

सूरज माने
बैंक ऑफ इंडिया

विकास हेलोडे
न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी

फत्तेसिंह यादव
भारतीय जीवन बीमा निगम

संपर्क कार्यालय : अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, रत्नागिरी महाराष्ट्र - 415 639.
ई-मेल - ratnasindhu10@gmail.com, वेबसाइट - http://narakasratnagiri.co.in.

● प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के स्वयं के है। अतः यह आवश्यक नहीं की इनसे सम्पादक मण्डल सहमत हो।

त्यौहारों के बदलते रंग

हर त्यौहार का होता अपना मिजाज
खुशियों का संदेशा देता हर एक साज
त्यौहारों का राज है हमारा देश
मिलकर रहें, खुश रहें, यही त्योहार का संदेश

भारत त्यौहारों का राजा है, क्योंकि हम भारतीय कालगणना के अनुसार देखें, तो हर माह में एक या दो त्यौहार आ ही जाता है। हर माह में आनेवाला हर एक त्यौहार का अपना अलग महत्व है। आजकल हर त्यौहारों में परिवर्तन आ गया है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। हम काल के अनुसार परिवर्तन नही करेंगे, तो हम पीछे ही रहेंगे, इसलिए बदलाव वक्त की जरुरत है। इसका यही मतलब नहीं की, आप हर बदलाव को स्वीकार कर लें, बदलाव सही और अच्छे के लिए हो तो ठीक है, पर त्यौहार के बदलाव की बात की जाये, तो भारतीय ऋतुओं के अनुसार भारतीय त्यौहार हर विशिष्ट ऋतुओं में आयोजित किये गये हैं। जिस तरह ऋतुओं के अनुसार मौसम में प्रकृति में परिवर्तन आ जाता है। उसी तरह हमारे शरीर और मन-मस्तिष्क में परिवर्तन आ जाता है। इसलिए त्यौहार के खाद्यपदार्थ भी हमारे पूर्वजों ने ऋतुओं के अनुसार तय किये गये है।

पर आज हमने अपने त्यौहारों में इतना बदलाव किया है कि, उस बदलाव के ढंग में हमने त्यौहारों के मूल उद्देश्य और हमारी अच्छी संस्कृती और अच्छे संस्कारों को नष्ट कर दिया है। जिन्दगी को खुशहाल और रिश्तों को मजबूत बनाने में अटूट कड़ी त्यौहार निभाते है, पर आजकल त्यौहारों के अवसर पर भी रिश्ते व्यवहारिता में बटे नजर आ रहे है। त्यौहारों पर तोहफे, उपहार देना, हमारी संस्कृती की परम्परा रही है। हम भाईदूज, रक्षाबन्धन और दीपावली के त्यौहार के अवसर पर एकदूसरे को तोहफा देते है। पहले जमाने में उपहारों के पीछे छुपी भावना देखी जाती थी। पर आजकल क्वालिटी और ब्रांड देखे जाते है, यानी दिखावे की भावना प्रबल हो गयी है। सामनेवाला जिस तरह का उपहार हमें देता है, उसी के अनुरुप हम उसे उपहार पेश करते है। इस तरह हमारी त्यौहार के पीछे की भावना बदलती चली जा रही है।

आज त्यौहारों के साथ प्रतियोगिता भी जुड गयी है। इसका उदाहरण हम गणेशोत्सव, दहीहंडी और नवरात्र के अवसर पर देखते है। लोकमान्य तिलक जी ने सार्वजनिक गणेशोत्सव इसलिए आयोजित किया था कि, लोग समाज में एकता के साथ मिल-जुलकर रहे। पर आज समाज में अनेक गणेशोत्सव के मंडल गणेशमूर्ती की आकार से लेकर मिरवणूक तक दूसरे गणेशोत्सव मंडल के साथ प्रतियोगिता करने में लगे हुए है। इसके कारण समाज में संघर्ष या स्पर्धा बढ़ती है और समाज के लोगों में संकुचित भावनाएँ पैदा होती है। यही हाल हम कृष्णजन्माष्टमी के दहीहंडी के त्यौहारों में देखतें है। दहीहंडी फोड़ने के लिए बडे-से बडे पुरस्कार दिए जाते है, और नवयुवक पुरस्कार की लालच में उस समय तनाव में रहते है। ज्यो त्यौहार खुशी के साथ मनाना चाहिए, उसे हम प्रतिस्पर्धा लेकर तनावपूर्ण बनाते है। नवरात्र त्यौहार की बात करे, तो नवरात्र त्यौहार भी इससे अलग नही रहा है। नवरात्र के अवसर पर गरबा नृत्य का आयोजन किया जाता है, और उसमे प्रमुख अतिथी के तौर पर बड़े-बड़े सेलिब्रेटी बुलाये जाते है। लोग गरबा पर विशेष ध्यान न देकर सेलिब्रेटी के साथ सेल्फी निकालने की चाह में उनके आगे-पीछे घुमते रहते है। इसके कारण हम अपने मित्र परिवार के साथ गरबा खेलने का और मौजमजा करने का आनन्द खो बैठते है। त्यौहार के परिवर्तन जो हम में लालच पैदा कर, हमारी खुशियाँ छीन ले, तो यह त्यौहारों के बदलते रंग क्या हमारी जिन्दगी में आनन्द लायेंगे? बिलकुल नही उससे हमारे परेशानियाँ और ही बढ़ती जायेगी। इसलिए त्यौहारों में आनेवाले परेशानीयुक्त बदलाव रोकने होंगे, क्योंकि हमारे त्यौहार उत्साह और उमंग लेकर जिन्दगी में आते है, और हमें खुशी से रहना सिखाते है, ना की प्रतियोगिता करना।

भारतीय त्यौहार समाज के, देश के आदर्श है। इस में कालानुसार बदलाव होने चाहिए। समय की बचत होनी चाहिए। परंतु रुढी-परंपरा बनी रहे, तो पीढियाँ सच में नया रंग लेकर बहेगी।

श्वेता प्रदीप आंब्रे
गोगटे-जोगलेकर महाविद्यालय, रत्नागिरी

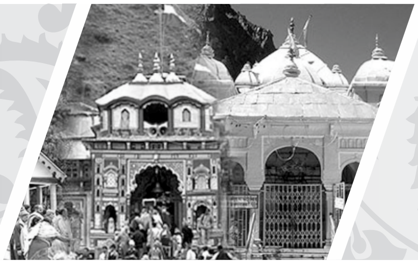

भारतीय संस्कृति में यात्राओं का महत्त्व

जब हम भारतीय संस्कृति का विचार करते है तो उसकी विशालता का अंदाजा नही किया जा सकता। विभिन्न धर्म, जाति, संप्रदाय, भाषाएँ हमारी संस्कृति को प्रभावित करती आई है। भौगोलिक स्तर पर भी हमारा देश विविधता से भरा हुआ है। कहीं नदियां उफान पर रहती है, तो कही पूरी तरह सुखा। कही घने जंगलों से भरे प्रदेश, तो कहीं बर्फिले पहाड़। हमारी संस्कृति, परंपरा, इतिहास तथा साहित्य की खोज करना इतना आसान तो न होगा। जिन महानुभावों ने हजारों वर्षों से हमारी संस्कृति का जतन किया है तथा उन्हें दुनिया के सामने लाने का प्रयास किया है, वे निश्चित ही अभिवादन के पात्र है। साहित्य के माध्यम से आज हमारी संस्कृति हमें विरासत में मिली है।

भारतीय संस्कृति को जानने के लिए मेरे हिसाब से यात्राओं का महत्व अधिक रहा होगा। जिन्होंने हमारा इतिहास लिखा है, वे घर में बैठकर तो इसे नहीं लिख सकते। हमारा इतिहास, संस्कृति, परंपरा जानने के लिए उन्हें दर-दर भटकना पड़ा होगा, खोज करनी पड़ी होगी, अपने जिंदगी के अनमोल क्षण खर्च करने पड़े होंगे। इसमें निश्चित ही यात्रा का महत्त्व अपने आप समझ में आता है। हमारी संस्कृति में यात्राओं का विशेष महत्त्व रहा है, क्योंकि इस विविधता भरी भरती में 'एक संस्कृति' का प्रश्न जुड़ा हुआ है। कालिदास कहते है, ''तेषां दिक्षु प्रथित विदिशा''। उस दिशा में मात्र विदिशा नहीं, दासों दिशाएँ है। सात समंदर, तेरहों नदियाँ, पहाड़-पर्वत, नगर-जनपद, झाड़-जंगल... फिर अपना छोटा-सा गाँव। शहरी परंपरा से दूर हमें लगता है कि काश मैं भी किसी गांव में रहता, गांव के पास होकर एक नदी बहती होती, नदी नदी तो मेरा गांव किसी पहाड़ी की तराई पर होता, गांव के बाहर घना जंगल अगर होता तो कितना मजा होता। इन सबको पाने के लिए, देखने के लिए हमें यात्रा की आवश्यकता महसूस होती है। कवी रवींद्रनाथ ठाकुर की पंक्तियां कहती है, मैं भी मानो बासाछाड़ा पंछी की तरह बाहर निकलने के लिए तड़प उठता हूँ - 'हेथा नय, अन्य कोथा, अन्य कोथा, अन्य कोन खाने।' अर्थात यहाँ नहीं, कहीं और, किसी और ठिकाने।

अनेक साधू-संत, साहित्यिक, दार्शनिक तथा वैज्ञानिक यात्रा के माध्यम से हमारी संस्कृति, हमारे इतिहास का वर्णन करते देखे गए है। तिक न्यात हन्ह ने तो बहुत ही सूक्ष्म तरीके से बुद्ध की साधना गति को बताया है। बोधि-प्राप्ति के लिए जब सिद्धार्थ गौतम निकल पड़े तो उन्होंने पींपल के पेड़ को बहुत ही हरा-हरा देखा था। श्री अरविंद की 'सावित्री' जिसने गहन प्रेम में जंगल में लकड़ी काटते सत्यवान को देख कर 'इमेरॉल्ड ग्रीन' का अनुभव किया था।

महर्षि वाल्मिकी ने जो रामायण में सटिक वर्णन किया है उससे स्पष्ट है कि वे पूरे देश में घूम चुके थे। तभी तो रामायण के हर स्थान, क्षेत्र का वर्णन कितना हुबहू था।

योगियों, संन्यासियों, कवियों, व्यापारियों की यात्राएँ 'एक संस्कृति' का ताना-बाना अवश्य बुनती रही है। साधारणजन ने तीर्थयात्रा के स्तर पर तथा बुद्धिजीवियों ने देशाटन के स्तर पर सारे देश को कश्मिर से कन्याकुमारी तक बांध के रखा हैं। यात्रा के माध्यम से हमें अनंत और अदृश्य स्थानों पर जाने की प्रेरणा मिलती हैं। हमारी संस्कृति जानने के लिए पुराणों के आख्यान यात्राओं की छवियों से ही भरे पड़े है। रामायण, महाभारत, वेद और उपनिषद यात्रा प्रसंगों का एक विस्तारित रूप ही हैं। इन ग्रंथों में पुरों, राजप्रासादों, जंगलों, दुर्गम घाटियों तक आने-जाने की अनेक रोचक व रोमांचक यात्राओं की विशाल शृंखला ही दिखाई देती हैं। इन्हीं यात्राओं ने संसार के लिए नए-नए तिलिस्म खोले, नए स्थान खोजे, नई संस्कृतियों से परिचित कराया। कविवर्य रवींद्रनाथ ठाकुर कहते है, ''इतनी बड़ी पृथ्वी को, कितना भर जानता हूं?''

पहले संसाधनों का अभाव यात्रा को सुखकर बनाने वाला भले ही न रहा हो, पर किसी न किसी उद्देश्य की पूर्ति करने वाला था। ऐसे समय में हमारे घुमक्कडों द्वारा जो विरासत हमारे सामने प्रस्तुत की है उनमें से एक महापंडित राहुल सांकृत्यायन हिंदी में 'घुमक्कड़ शास्त्र' के प्रणेता थे। वो जीवन भर भ्रमणशील रहे। वे अपने जैसे घुमक्कड़ो की खोज कर उनका संक्षिप्त जीवन-चरित भी लिखते है। कभी बस और घोड़े के सहारे और कभी कई दफ़ा पैदल भी की गई यात्रा का वर्णन करते हुए राहुलजी क्षेत्र के इतिहास, भूगोल, वनस्पति, लोकसंस्कृति आदि अनेक पहलुओं की जानकारी जुटाते हैं। सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' पूर्वोत्तर के जिन कस्बों, जंगलों, माझुली जैसे द्वीप के बारे में उत्तर भारत का निवासी जहां आज भी बहुत नहीं जानता, अज्ञेय ने चालीस के दशक में उन्हें फ़ौजी ट्रक हांकते हुए नापा था। उन्होंने असम से बंगाल, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, तक्षशिला (अब पाकिस्तान में), एबटाबाद (जहां हाल में ओसामा बिन लादेन को मारा गया था), हसन अब्दाल, नौशेरा, पेशावर और अंत में खैबर - यानी भारत की एक सीमा से दुसरी सीमा की यात्रा की थी तथा उसमें तरह-तरह के अनुभव प्राप्त किए थे। फ़णीश्‍वरनाथ रेणुजी जी की यात्राएं केवल तफ़रीह के लिए नहीं होतीं थी। 'मैला आंचल और परती परिकथा' जैसी ज़मीनी कृतियों के रचयिता रेणु ने दो संस्मरण लिखे, जो इस विधा को नई भंगिमा देते है। दोनों में उनके अपने बिहार की जानी-पहचानी जगहों की यात्रा है, जो साल 1966 में दक्षिणी बिहार में पडे सुखे के वक्त को नितांत भयावह दिनों की थी। बाद में साल 1975 में पटना और आसपास के क्षेत्र में बाढ़ की लीला को उन्होंने क़रीब से देखा। दोनों जगह उनके साथ उनकी नज़र विपरीत परिस्थितियों में भी मानवीय करुणा को दर्शाती है। बाढ़ का इलाक़ा हो या सूखा क्षेत्र, उनका वर्णन हर जगह

संवेदनशील कथाकार का रहता है। गंभीर पर्यवेक्षण, जो उनकी चिर-परिचित ठिठोली को भी उन हालात में भूलने नहीं देता। मोहन राकेश जी ने गोवा से कन्याकुमारी तक की यात्रा सन 1952-53 में तीन माह में की थी। उन्होंने अपने लेखन हेतु देश के दक्षिण और समुद्र क्षेत्र की पहली यात्रा की थी। इसके साथ ही मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, निराला, प्रेमचंद, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, जैनेंद्र कुमार, मुक्तिबोध, निर्मल वर्मा जैसे अनेक साहित्यिक, कवी तथा लेखक ज्ञान के अर्जन में देश के अनेक सुदूर अंचलों की यात्राएं कर चुके थे। नेहरू जी ने 'भारत एक खोज' के माध्यम से इतिहास हमारे सामने प्रस्तुत किया है। वीर सावरकर द्वारा अपने अंदमान के काले पानी की सजा का बेहद रोचक वर्णन किया है।

हजारों वर्ष पूर्व अनेक विदेशी घुमक्कड हमारे देश में आए, उन्होंने हमारी संस्कृति का अध्ययन किया तथा देश-विदेशों में इसे फैलाया। फ़ाहियान या फ़ाशियान एक चीनी बौद्ध भिक्षु, यात्री, लेखक एवं अनुवादक थे जो 399 ईसवी से लेकर 412 ईसवी तक भारत, श्रीलंका और आधुनिक नेपाल में स्थित गौतम बुद्ध के जन्मस्थल कपिलवस्तु धर्मयात्रा पर आए। उनकी यात्रा के समय भारत में गुप्त राजवंश के चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का काल था और चीन में जिन राजवंश काल चल रहा था। उनकी खोज तथा वृत्तांत में इतिहास के कई पन्ने छुपे हुए हैं। चीन पहुँचकर उन्होंने अनेक बौद्ध धर्मग्रंथों के अनुवाद में जुट गए थे। अन्य विद्वानों के साथ मिलकर उसने कई ग्रंथों का अनुवाद किया, जिनमें से मुख्य हैं - परिनिर्वाणसूत्र और महासंगिका विनय के चीनी अनुवाद शामिल है। 'फौ-कुओ थी' अर्थात 'बौद्ध देशों का वृत्तांत शीर्षक जो आत्मचरित्र उन्होंने लिखा है वह एशियाई देशों के इतिहास की दृष्टी से महत्त्वपूर्ण है। विश्व की अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद किया जा चुका है। इसी तरह ह्वेन त्सांग एक प्रसिद्ध चीनी बौद्ध भिक्षु था। वह हर्षवर्धन के शासन काल में भारत आया था। वह भारत में 15 वर्षों तक रहा। उसने अपनी पुस्तक सी-यू-की में अपनी यात्रा तथा तत्कालीन भारत का विवरण दिया है। उसके वर्णनों से हर्षकालीन भारत की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक अवस्था का परिचय मिलता है। वह संस्कृत में भी पारंगत था।

तात्पर्य यही हैं की हमारी भारतीय संस्कृति जानने के लिए तथा उसका प्रचार-प्रसार करने के लिए हमारे साहित्यिकों, अध्ययनकर्ताओं को सुदूर तक भटकना पड़ा है तब कही भारतीय संस्कृति के दर्शन वे शब्दांकित कर पाए है। कहते है आम का पौधा लगाने वाला कभी आम नही खा पाता, लेकीन उसके बाद की अनेक पीढियां इसका उपभोग लेकी है। निश्चित ही अनेकों विदेशी आक्रमणों के बाद भी हमारी संस्कृति, परंपरा अगर जीवित है तो उसमें हमारे घुमक्कडों का बड़ा योगदान रहा है। लेकिन हमारी संस्कृती को जानने के लिए, उसका जतन करने के लिए हमारी नई पिढ़ी को हमारी इस धरोहर को सुरक्षित रखना होगा।

डॉ. रवि गिरहे
बैंक ऑफ़ इंड़िया

स्वच्छता अभियान

स्वच्छ भारत अभियान भारतीय सरकार द्वारा चलाया जाने वाला एक राष्ट्रव्यापी सफाई अभियान है। इस अभियान द्वारा भारत को गन्दगी-रहित बनाया जायेगा। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण करवाना, पिने का साफ़ पानी हर घर तक पहुँचाना, ग्रामीण इलाकों में स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, सड़कों की सफाई करना और देश का नेतृत्व करने के लिए देश के बुनियादी ढाँचे को बदलना शामिल है। स्वच्छ भारत अभियान को क्लीन इंडिया मिशन या क्लीन इंडिया ड्राईव्ह भी कहा जाता है। स्वच्छ भारत का सपना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देखा था। इस सन्दर्भ में गांधीजी ने कहा था कि, "स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरुरी है"। उनका ये कहना था की निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वस्थ और शान्तिपूर्ण जीवन का अनिवार्य भाग है। स्वच्छ भारत अभियान 2 अक्तूबर 2014 को गांधी जंयती के दिन भारत के प्रधान मंत्री माननीय श्री. नरेंद्र मोदी जी ने राजघाट, नयी दिल्ली में शुरू की। इस अभियान की शुरुवात में मोदी जी ने भारत के दोन सपुतों महात गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री श्री. लाल बहादुर शास्त्री जी को श्रद्धांजली दिए। गांधीजी के 145 वे जन्म दिन पर मोदी जी ने गांधीजी द्वारा देखा गया सपने को शुरु किया और 2 अक्तूबर 2019 (बापू के 150 वी जन्म दिवस) तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। प्रधान मंत्री मोदी जी ने कहा कि भारत को स्वच्छ बनाने का काम किसी एक व्यक्ति या अकेले सरकार का नही है, ये काम तो देश के 125 करोड लोगों जो भारत माता के संतान हैं, उनके द्वारा किया जाना है। उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान को एक जन आंदोलन में तब्दील करना चाहिए। उन्होंने कहा कि बापूजी के 150 वी जन्म दिवस पर उनके लिए सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजली होगी।

यह सभी बातें और तथ्य हमें यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि हम भारतीय साफ-सफाई के मामले में भी पिछड़े हुए क्यूं हैं? जबकि हम उस समर्थ एवं गौरवशाली भारतीय संस्कृति के अनुयायी हैं जिसका मुख्य उद्देश्य सदा 'पवित्रता' और 'शुद्धी' रहा है। वास्तव में भारतीय जनमानस इसी अवधारणा के चलते एक उलझन में रहा है। उसने इसे सीमित अर्थों में ग्रहण करते हुए मन और अंतःकरण की शुचिता को ही सर्वोपरि माना है इसलिए कहा जाता है कि "मन चंगा तो कठौती में गंगा"।

कुल मिलाकर सार यही है कि वर्तमान समय में स्वच्छता हमारे लिए एक बड़ी आवश्यकता है। यह समय भारतवर्ष के लिए बदलाव का समय है बदलाव के इस दौर में यदि हम स्वच्छता के क्षेत्र में पीछे रह गए तो आर्थिक उन्नति का कोई महत्त्व नहीं रहेगा। हाल ही में हमारे प्रधानमंत्री जी ने 25 सितंबर 2014 को "मेक इन इंडिया" अभियान से अधिक गति तो अवश्य मिलेगी लेकिन इसके साथ ही हमें प्रदूषण के रूप में एक बड़ी चुनौती भी मिलने वाली है हमें अपने दैनिक जीवन में तो सफाई को एक मुहीम की तरह शामिल करने की जरुरत है साथ ही हमें इसे एक बड़े स्तर पर भी देखने की जरुरत है ताकि हमारा पर्यावरण भी स्वच्छ रहें। स्वच्छता समान रुप से हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है। हमें अपनी आदतों में सुधार करना होगा और स्वच्छता को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाना होगा हालांकि आदतों में बदलाव करना आसान नहीं होगा लेकिन यह इतना मुश्किल भी नहीं है। प्रधानमंत्री जी ने ठीक ही कहा कि जल्दी हम कम से कम खर्च में अपनी पहली ही कोशिश में मंगल ग्रह पर पहुंच गए तो क्या हम स्वच्छ भारत का निर्माण सफलतापूर्वक नहीं करत सकते हैं । कहने का तात्पर्य है कि क्लिन इंडिया का सपना पूरा करना कठिन नहीं हमें हर हाल में इस लक्ष्य को वर्ष 2019 तक प्राप्त करना होगा तभी हमारी ओर से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व उनकी 150 वी जयंती पर सच्ची श्रद्धांजली होगी।

हमारे प्रधानमंत्री जी ने 2 अक्तूबर के दिन सर्वप्रथम गांधी जी को राजघाट पर जाकर श्रद्धांजली अर्पित की और फिर नई दिल्ली स्थित वाल्मिकी बस्ती में जाकर झाडू लगाई । अब समय आ गया है कि हम सवा सौ करोड भारतीय अपनी मातृभूमी को स्वच्छ बनाने का प्रण करें। क्या साफ-सफाई केवल सफाई कर्मचारियों की जिम्मेदारी है? क्या यह हम सभी की जिम्मेदारी नहीं हैं हमें यह नजरिया बदलना होगा मैं जानता हूं कि इसे केवल एक अभियान बनाने से कुछ नही होगा। पूरानी आदतों को बदलने में समय लगता है यह मुश्किल काम है मैं जानता हूं लेकिन हमारे पास वर्ष 2019 तक का समय है।

प्रधानमंत्री जी ने 5 साल में देश को साफ सुथरा बनाने के लिए लोगों को शपथ दिलाई कि, ना मैं गंदगी करुंगा और ना ही गंदगी करने दूंगा। अपने साथ में 100 लोगों को साफ सफाई के प्रति जागरुक करुंगा और उन्हें सफाई की शपथ दिलवाऊंगा। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति साल में 100 घंटे का श्रम दान करने की शपथ ले और सप्ताह में कम से कम 2 घंटे सफाई के लिए निकालें अपने भाषण में प्रधानमंत्री ने स्कूलों में गांव में शौचालय निर्माण की आवश्यकता पर भी जोर दिया।

स्वच्छ भारत अभियान को पुरा करने के लिए 5 वर्ष (2 अक्तूबर 2019) तक की अवधी निश्चित किए गई है। इस अभियान पर लगभग दो लाख करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान लगाया गया है। इसके अंतर्गत 4041 शहरों को सम्मिलित किया जाएगा। इस अभियान की सफलता को सुनिश्चित करने के लिए पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय 1 लाख 34 हजार करोड़ और केंद्रीय शहरी विकास मंत्रालय 62 हजार करोड़ की आर्थिक सहायता प्रदान करेंगे।

इसके साथ ही केंद्रीय मंत्री श्री. नितीन गडकरी ने स्वच्छ भारत कैंपेन के तहत प्रत्येक ग्राम पंचायत को सालाना 20 लाख रुपए देने की घोषणा की। यह अभियान अभी प्रारंभिक चरण में ही है लेकिन सरकारी प्रयासों से यह आभास हो रहा है कि सरकार इस अभियान को निर्धारित

समयावधि में पूर्ण करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस अभियान के प्रति जनसाधारण को जागरुक करने के लिए सरकार समाचार पत्रों, विज्ञापनों आदि के अतिरिक्त सोशल मीडिया का भी उपयोग कर रही है।

स्वच्छ भारत नाम से एक नई वेबसाइट की भी शुरुआत की गई है। और फेसबुक जैसे प्रसिद्ध नेटवर्किंग साइट के माध्यम से भी लोगों को इस से जोड़ा जा रहा है। ट्विटर पर भी माइक्रो इन इंडिया के नाम से एक ट्विटर हैंडल का अकाउंट का भी शुभारंभ किया गया है। प्रत्येक नागरिक की सक्रीय भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री जी ने सभी से अपील की है कि लोग पहले गंदी जगह की फोटो सोशल नेटवर्क साइट पर अपलोड करें और फिर उस स्थान को साफ करके उसकी वीडियो तथा फोटो भी अपलोट करें इस अभियान में प्रधानमंत्री जी ने मशहूर हस्तियों को भी शामिल किया है उन्होंने इसके लिए 9 लोगों को नामित भी किया है।

इन 9 हस्तियों में अनिल अंबानी, सचिन तेंडुलकर, सलमान खान, प्रियंका चोपड़ा, बाबा रामदेव, कमल हसन, मृदुला सिन्हा, शशी थरुर और शाजिया इल्मी शामील है। इसके अलावा उन्होंने टीवी सीरियल "तारक मेहता का उल्टा चश्मा" की पूरी टीम को भी नामित किया है। उन्होंने कहा कि यह सभी लोग स्वच्छता अभियान के लिए काम करें। इस तरह स्वच्छता अभियान ना रहकर एक आंदोलन बन जाएगा उन्होंने कहा यह दायित्व सिर्फ सफाई कर्मचारियों का नहीं है सभी 125 करोड भारतीयों का है।

मोदीजी ने स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने के लिए कई सारे प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया। इन प्रतियोगिताओं में महाराष्ट्र से अनंत और गुजरात से भाग्यश्री विजेता रहे।

स्वच्छ भारत अभियान ग्रामीण का लक्ष्य है :

1. साल 2019 तक खुल में शौच को पुरी तरह से रोकना।
2. साल 2019 तक सभी के घर में पिने की पानी को उपलब्ध करना।
3. ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के जीवन शैली में सुधार लाना। उनके सोच-विचारों को बदलना।
4. स्वच्छ भारत के लक्ष्य को पुरा करने हेतु ग्रामीण क्षेत्रों में साफ सफाई के लिए लोगों को प्रेरित करना।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में रास्ता और गल्ली मोहल्ले को साफ करके ठोस और तरल कचरा का प्रबंध ग्राम पंचायत द्वारा करना।
6. ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को साफ सफाई के बारे में जागरुक करना।

इस स्वच्छ भारत अभियान को 'एक कदम स्वच्छता की ओर' का नारा दिया है।

रुपाली राहुल घाडगे
कोंकण रेलवे लि. रत्नागिरी.

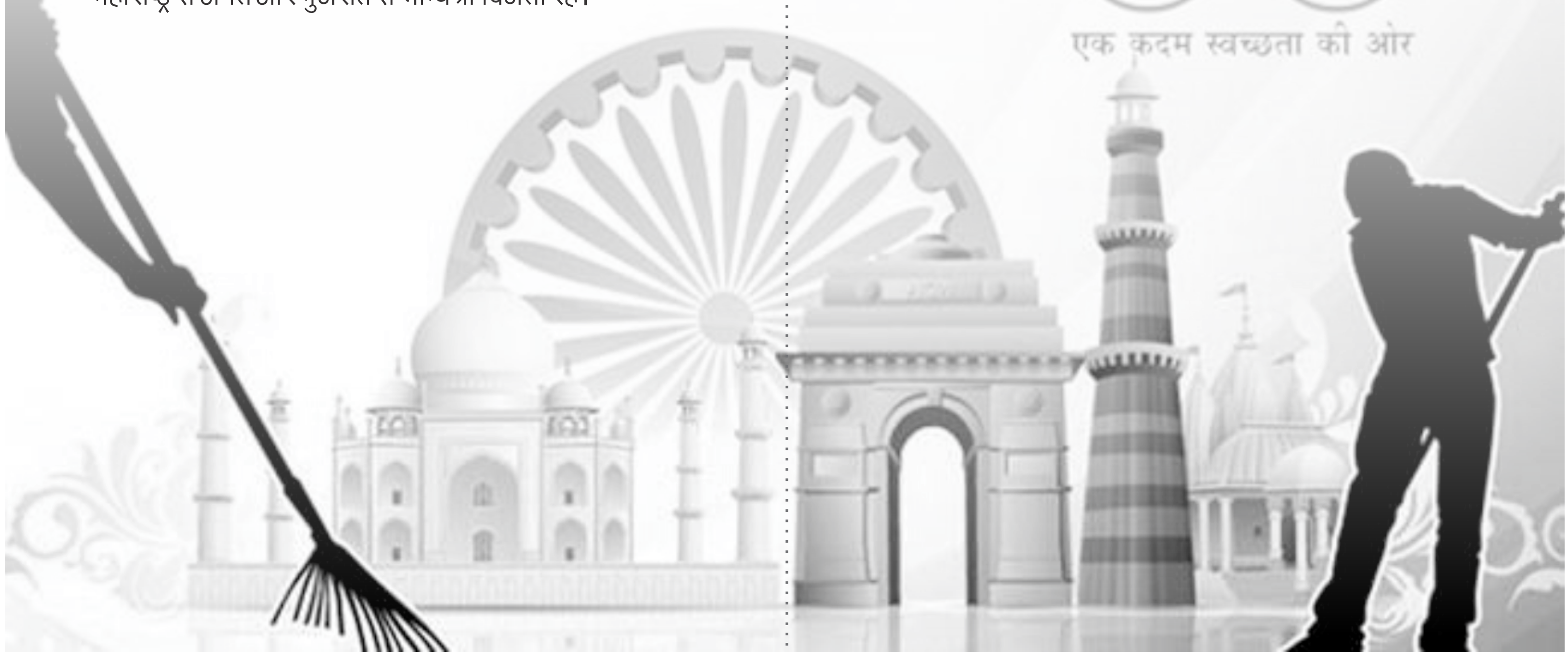

भारत में सामाजिक विकास स्रोत परमाणु ऊर्जा

''न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत ।
कार्यते ह्यवश कर्म सर्वः प्रकृति जैर्गुणैः।।''

1947 में जब अंग्रेज भारत से विदा हुए तो यहाँ के नेताओं, चिंतकों, वैज्ञानिकों एवं समाजशास्त्रियों के लिए एक बहुत ही चुनौती पूर्ण स्थिति में इस देश के विशाल जनसमुदाय को छोड़ गए। इन्हें विरासत में एक ऐसा देश प्राप्त हुआ जो बड़ी जटिल समस्याओं, बिमारियों, गरीबी, भूखमरी एवं अंधविश्वासों से भयंकर रुप से ग्रस्त था। यह इस देश का सौभाग्य था कि इसका नेतृत्व वैज्ञानिक सोच वाले पंडित जवाहर लाल नेहरू के हाथों में आया। उन्हें इस बात का एहसास था कि परमाणु शक्ति के शांतिपूर्ण उपयोग से देश को इस विकट परिस्थिति से शीघ्रता से उबारा जा सकता है। उन्हें इस कार्य को अमली जामा पहनाने के लिए डॉ.होमी जे. भाभा जैसे प्रतिभावान, राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत एवं निष्ठावान वैज्ञानिक प्राप्त हुए। फलस्वरुप स्वतंत्रता प्राप्ति के एक वर्ष में ही देश के ही देश के वैज्ञानिकों को परमाणु शक्ती का प्रशिक्षण देने देश के विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थाओं में परमाणू शोध को बढावा देने एवं अणु शक्ती से संबंधित खनिजों का औद्योगिक पैमाने पर दोहन करने के लिए, अगस्त 1948 में एटमिक एनर्जी कमीशन की स्थापना की गई।

परमाणु शक्ति के विकास एवं उपयोग के लिए विभिन्न कार्यक्रम बनने लगें। अगस्त 1954 में अणु ऊर्जा कार्यक्रम को लागू करने के लिए जो निष्पादन अभिकर्तत्व (Executive Agency) बनी वह अणु ऊर्जा का विभाग था। तत्पश्चात तेजी से काम होने लगा। 1957 में मुम्बई के पास ट्राम्बे में भाभा अणु शोध केन्द्र की स्थापना हुई जो अणु सोध के कार्य को निर्देशित करने वाला सबसे बड़ा वैज्ञानिक संस्थान है। यह पाँच विभिन्न रिएक्टरों को अपने में सम्मिलित किए हुए है जिनका उल्लेख उस निबंध के अगले भाग में विशेष रुप से किया गया है। हमारा देश एक कृषीप्रधान देश होते हुए भी यहाँ के लोग आजादी के उन प्रारम्भिक वर्षो में दाने-दाने के लिए तरस रहे थे। भूख से पीडित समाज का विकास करना एक बहुत ही कठीन कार्य था। कहा भी है - ''भूखे भजन न होत गोपाल''। अतः जब समाज विकास के बारे में योजनाएँ बढाने लगे तो देश को कृषि उपज में आत्मनिर्भर बनाना ही सर्वप्रथम लक्ष्य निश्चित हुआ। यह कार्य बिना विज्ञान कि सहायता के संभव नही था। अणु शक्ति के उपयोग ने कृषि उपज को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, फलस्वरुप आज एक अरब से अधिक आबादी का मात्र पेट ही नहीं भरता है अपित लाखों टन अनाज विश्व के अन्य देशों को भी निर्यात किया जाता है। इस बड़ी उपलब्धि के बाद भी हमारे समाज का चौमुखी विकास करने में हम सक्षम हुए है। यह एक स्वयं सिद्ध तथ्य है कि किसी भी देश का विकास बिना विद्युत ऊर्जा के संभवन नहीं हैं। विद्युत तो मानव को वरदान के रूप में प्राप्त हुई है एवं समाज के हर क्षेत्र में इसकी उपयोगिता में दिन प्रतिदिन वृद्धी होती जा रही है। 1951 से ही देश परमाणु विद्युत उत्पादन कर विद्युत के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त करेंगे की राह पर अग्रसर है। आज हमारा देश विश्व के उन सात राष्ट्रों में से एक है जिन्होंने परमाणु विद्युत उत्पादन की नवीनतम तकनीक में प्रवीणता प्राप्त कर ली है। प्रेशराइज्ड हेवी वाटर रिएक्टर (पी.एच.डब्ल्यू.आर.) सिद्धांत पर आधारित रावतभाटा (राजस्थान), नरोरा (उ.प्र.), कलपक्कम (तमिलनाडु) एवं काकरापार (सुरत-गुजरात) के परमाणु एवं अणु बिजलीघर विद्युत उत्पादन कर एसे गाँव-गाँव तक पहुँचाने में सक्षम हैं।

रेडियोधार्मिता के प्रयोग से हमने कृषि, चिकित्सा एवं औद्योगिक क्षेत्र में नवीन उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। कृषि के क्षेत्र में पौधों में जीन उत्परिवर्तन, नई किस्मों का निर्माण व उर्वरक की क्षमताओं में वृद्धि आदि से आश्चर्यजनक परिणाम सामने आए है। औद्योगिक क्षेत्र में इसका उपयोग पाइपलाइनों के रिसाव को रोकने में, आधारभूत संरचनाओं की जाँच, उपकरणों की जाँच जैसे कार्यों में भी इसका योगदान दर्शनीय है। पृथ्वी का जन्म, पृथ्वी पर मानव के अंश आदि सभी परमाणु तत्वों से किए हुए अनुसंधानों का फल है। परमाणु बम के जापानी शहरों पर किए गए विस्फोटों ने मानवता को दहला दिया था। विशेष रुप से गरीब एवं अविकसित राष्ट्रों के लिए तो अणुशक्ति एक दानवीय शक्ति के रूप में माने-जाने लगी थी। भारत के इस शक्ती के शांतीपूर्ण उपयोगों ने इन राष्ट्रों के लिए अपने विकास हेतु आशा की किरणें प्रस्फुटित की हैं। ''सूरज हूँ चमक छोड जाऊंगा, डूब भी गया तो सबक छोड जाऊंगा''। ''मूलभूत अनुसंधान व अनुबंध शिक्षा संबंध'' परमाणू ऊर्जा आयोग, 1948 के तत्वाधान में गठित परमाणु ऊर्जा विभाग, 1954 की विभिन्न नीतियों का निर्धारण किया गया, यह मुख्यतः अनुसंधान व विकास, परमाणु ऊर्जा संबंध एवं औद्योगिक क्षेत्रों में विकास के हेतु कार्यरत हैं। अनुसंधान व विकास, परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण भाग हैं जो विभिन्न परम्पराओं द्वारा अनेक कार्यो का संचालन कर रहा है। इस कार्यक्रम की सफलता हेतु हर निम्न संस्थाएँ कार्यरत है -

1. भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बार्क), ट्राम्बे-मुंबई
2. इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केन्द्र (इग्कार) कलपक्कम, तमिलनाडू
3. आधुनिक अनुसंधान केन्द्र (कैट) इन्दोर, मध्य प्रदेश
4. परिवर्तन ऊर्जा, साइक्लोट्रोन केन्द्र, कलकत्ता, प. बंगाल

बार्क का गठन 1957 में परमाणु ऊर्जा केन्द्र, ट्राम्बे के रुप में हुआ था। तत्पश्चात 1967 में इसका नाम भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (बार्क) के रूप में सामने आया। यह नाम डॉ. होमी जे. भाभा के नाम पर रखा गया है जो की आज अनुसंधान का एक प्रमुख केन्द्र है। इन अनुसंधान कार्यो के तहत अनेक कार्य किए गए - 1. देश का पहला अनुसंधान रिएक्टर अप्सरा 1956 में स्थापित किया गया जिसकी क्षमता एक मैगावाट थी।

2. सिरस - 40 मैगावाट की क्षमता का एक अनुसंधान रिएक्टर है जो तारापूर में 1960 में स्थापित किया गया था। इसका मुख्य कार्य अनुसंधान, शोध, प्रयोग, प्रशिक्षण के साथ साथ आईसोटोप का निर्माण करना है।

3. पूर्णिमा 1 यह प्लुटोयिम पर आधारित रिएक्टर है जो ट्राम्बे में

स्थित है।

4. पूर्णिमा 2 यह पूर्णिमा 1 का रुपांतरित प्रकार है जो यू-233 का प्रयोग करता है।

5. ध्रुव एक स्वनिर्मिती 100 मेगावाट की क्षमता का रिएक्टर है जो 1985 में नाभिकी भौतिक एवं आइसोटोप निर्माण में सहायक है।

6. कामिनी - कलपक्कम में एक न्युट्रोन स्त्रोत रिएक्टर है। बार्कने टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान के सौजन्य से 14 मैगावाट की क्षमता वाले एक पैलिट्रान एक्सेलेटर की स्थापना की है साथ ही बैरिलियम संयत्र एवं रेडियो फार्मास्युटिकल प्रयोगशाला, वाशी नई मुम्बई का भी गठन किया है। परिवर्तित ऊर्जा साइक्लोट्रोन केन्द्र कलकत्ता नाभिकी रासायनिक एवं रेडियोधर्मी हानि अध्ययन के क्षेत्र में कार्यरत है। सेस्मिक एक्टिविट मॉनिटरिंग स्टेशन, गौरीबीदनूर, बंगलौर विश्व के किसी भी स्थान में किए गए भूमिगत परमाणु विस्फोट की जानकारी प्रदान करता है। परमाणु अनुसंधान प्रयोगशाला श्रीनगर एवं उच्च एल्टिटुराड अनुसंधान प्रयोगशाला गुलमर्ग जम्मू कश्मीर वायुमण्डलीय भौतिकी व कास्मिक रे भौतिकी में अनुसंधान कार्यो में कार्यरत है। विकिरण औषधि केन्द्र, मुम्बई रेडियोधार्मिक आइसोटोप से चिकित्सा कार्य में प्रयोग के अनुसंधान में रत है। फार्मास्युटिकल उत्पादन सुविधाएँ वाशी बंगलौर एवं हैदराबाद में उपलब्ध है। ट्राम्बे में आइसोमेड स्टरलाइजेशन संयत्र भी कार्यरत है। बार्क सम्पूर्ण विश्व कि हित में उच्च ताप सुपर कंडक्टर के निर्माण में कार्य कर रहा है। और इस क्षेत्र में कुछ सफलताएँ भी प्राप्त की है जैसे एक ही तत्त्व जो बिस्मिभलैड कैल्शयम स्ट्रानशियम आक्साइड का जिसका ताप टीसी-120के है। बार्क कोल्ड फ्यूजन के क्षेत्र में आई.आई.टी. मद्सार की मदद से प्रयोग में कार्य कर रहा है। बार्क के शोध से यह सिद्ध हुआ है कि डुट्रान डुरट्रान की क्रिया से ट्रिटियम मिलता है, न की न्युट्रॉन। एक अन्य शोध कार्य में बारीक कणों व विकरणों से प्लाजमा फ्यूजन अनुसंधान से प्लस पावर एवं पारटिकल बीम टेक्नॉलॉजी की शोध पर भी कार्य चल रहा है। आदित्य प्लाजमा अनुसंधान केन्द्र, गांधीनगर, अहमदाबाद मे स्थापित एक स्वचालित रिएक्टर है जो पाँच मिलियम डिगर सेलसियस पर भी प्लाजमा का निर्माण करने में सक्षम है। इस रिएक्टर के द्वारा किए गए शोध विश्व फ्युजन अनुसंधान कार्यक्रम का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन गए है। इंदिरा गांधी परमाणु अनुसंधान केन्द्र मुख्यः एफ.बी.टी.आर. टेक्नॉलॉजी से संबंधित है। भारत में एप.बी.टी.आर. का प्रयोग अक्टूबर 1985 से शुरू हुआ। यह एक स्वनिर्मिती उपकरण है जो सोडियम कार्बाइड का उपयोग करता है। इसका निर्माण फ्रैंच रेपसोडाइ रिएक्टर की प्रतिभूमिका पर हुआ था एवं इसकी क्षमता एक मैगावॉट के लगभग है। इसका उद्देश्य मुख्यतः सामग्रियों को इरेडियेशन क्षमता का पता करना एवं इन्हें लिक्विड मेटल कूल्ड फास्ट ब्रीडररिएक्टर के अंदर परखा जाता है। इग्कार ने अनेक ऐसे संवेदनशील सेंसरों का निर्माण किया है जो लिक्विड सोडियम जो कि परमाणु रिएक्टर में कूलेंट के रुप में प्रयोग में आता है कि शुद्धता की जाँच कर सके। 500 मैगावॉट की क्षमता वाले ए.बी.टी.आर. प्रोटोटाइप की संरचना नई शताब्दी तक तैयार होने की संभावना है। कैट, इंदौर अनुसंधान के क्षेत्र में फ्यूजन, लेजर व एक्सलेटर पर कार्यरत है। हाल ही सिनक्रोट्रान विकिरण व उच्च रूप से निर्मित वर्सेटाइल लेजर का निर्माण किया गया है जो 70 वॉट व 400 वॉट कार्बन डाइआक्साइड लेजर के रुप में कार्य कर रहा है। बार्क ने तकनीकी विकास से कूलेंट के जीवन काल में वृद्धि कर भारत को इस तकनीकी तक पहुँचाने वाला दुसरा देश बना दिया है। एक नई प्रणाली जिसे कुलेंट चैनल रिप्लेसमेंट मशीन (सी.सी.आर.एम.) के नाम से जाना जाता है का निर्माण किया है। एवं इसके हेतु एक नए संमिश्रण का निर्माण किया है जिसकी कार्य अवधि तीस साल मापी गई है। मेपस-11 भारत का प्रथम चालित रिक्टर है जो स्वनिर्मिती तकनीकों का पूर्ण प्रयोग कर सकता है। बार्क ने भारत के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को बढ़ाने के लिए एक नए ऊर्जा रिएक्टर की नींव रखी है जिससे कि परमाणु आधारभूत ढाँचा फिजन ऊर्जा को प्राप्त कर सके। इस क्षेत्र में 'घोरीयम ब्रीडर रिएक्टर' (ए.बी.टी.आर.) की विचार धारा पर शोध किया जा रहा है। 4 जून 1999 को परमाणू ऊर्जा विभाग ने सिंक्रोट्रान विकिरण स्त्रोत इंदस-1 को इंदौर में शुरू किया। यह अनुसंधान कार्य क्षेत्रों में मदद प्रदान करने में संभव होगा। यह विकिरण स्त्रोत अब तक सभी स्त्रोतों में से सबसे अधिक चमकीला है व इसके कण बिजली की गति के साथ चलते हैं और चुम्बकिय क्षेत्र में पहुँचने पर अपने मार्ग से दूर हो जाते हैं। यह यंत्र तीन एक्सलेटरों से मिलकर बना है। माइक्रोटोन, बूस्टर सिंक्रोट्रान एवं स्टोरेज रिंग। इससे इलेक्ट्रान व माइक्रोट्रान की गति को बढाया जाता है ताकि वे गतिशील होकर अधिकाधिक ऊर्जा प्रदान कर सकें। अनुपम एक अत्याधुनिक सुपरकम्प्युटर है जो परमाणु नाभिकी तकनीक का ही फल है। इस क्षेत्र में प्रमुख अनुसंधान का कार्य परमाणु ऊर्जा विद्युत उत्पादन का ही रहा है। यह विद्युत उत्पादन मुख्यतः रावतभाटा (राजस्थान), नरोरा (उत्तर प्रदेश), कलपक्कम (तमिलनाडू) एवं काकरापार (सूरत-गुजरात) है। रावतभाटा में खराब हुए संयत्र एवं ईकाई का कार्य भारतीय वैज्ञानिकों के सामने एक चुनौती के रुप में आई। परंतु डॉ. चतुर्वेदी के निर्देशन व प्रशिक्षण में हमारे देश के वैज्ञानिकों ने बाहरी सहायता के बिना ही उस ईकाई को ठीक किया और वह भी बताई लागत के एक तिहाई में। दी गई शोध संस्थाएँ अनेक ऐसे कार्यों में जुटी हुई हैं जो मानव जीवन के अनेक पहलुओं में हमारी जिंदगी को आसान बनाने के लिए तत्पर हो। ''आवश्यकता आविष्कार की जननी है।'' जैसे-जैसे हमारी आवश्यकता बढ़ती जाती है, मानव उन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपनी बुद्धि के बल पर अनुसंधान कर आविष्कारों को जन्म देता है और फलस्वरुप अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह आविष्कार एवं अनुसंधान तब तक संभव नहीं है जब तक एक विकसित मस्तिष्क इस कार्य को करने में नहीं लगे। सामान्य विज्ञान की गुढ बातों का अध्ययन ही मस्तिष्क को परिपक्व बना सकता है, उस बात पर मनुष्य सोच विचार कर सकता है, एक नए सिद्धांत का प्रतिपादन करत सकता है और अंततः एक अनुसंधान में लग सकता है। परमाणु विज्ञान एक ऐसी शाखा है जो विज्ञान के प्रत्येक प्रकार को संजोती हुई एक स्वतंत्र शाखा के रुप में विकसित हो चली। यह भौतिक, रासायनिक,

जैविक एवं समस्त शाखाओं के अंश को लेकर एक अलग शाखा के रुप में विकसित हुई है जो आज के युग का एक महत्तवपूर्ण अंग है।

भौतिक विज्ञान से संबंध : परमाणू क्रियाओं से बाइंडिंग ऊर्जा का रिसाव होता है जो धीरे-धीरे ताप व गर्मी में बदलती है और इस ऊर्जा के बल पर अनेक बिजली के उपकरण कार्य करते है, और यदि यह ऊर्जा अचानक निकल जाती है तो परमाणु विस्फोटक के रुप में कार्य करती है। आइनस्टाईन ने 1905 में ऊर्जा व पदार्थ के बीज सामंजस्य स्थापित किया और E = mc2 का सिद्धांत दिया। इसके अनुसार ऊर्जा व पदार्थ, द्रव्य आपस में परिवर्तनशील है। ऊर्जा पदार्थ में बदल सकती है और पदार्थ ऊर्जा के रूप में प्रकट होत सकता है। इसी के आधार पर परमाणु बम का सिद्धांत प्रकट हुआ। बम रुपी पदार्थ विस्फोट के पश्चात ऊर्जा में बदल जाता है। चैन रिएक्शन के अनुसार एक अणु दो में टुटता है, दो-चार में और यह क्रम चलता रहता है। इस प्रकार से परमाणु विज्ञान का भौतिकी से गहरा संबंध है।

रसायन विज्ञान के संबंध : रसायन विज्ञान में अणुओं की विवेचना का अध्ययन किया जाता है। परमाणु प्रक्रिया में एक अणु न्युट्रॉन से प्रक्रिया करके या तो छोटे-छोटे टुकडों में बिखरता है या उन सब का समावेश करके एक बड़े टुकड़े का निर्माण करता है। यू-238 में 92 प्रोटॉन एवं 146 न्युट्रॉन होते हैं जो उसके नाभिकी में उपस्थिती होते है। बाहरी न्युट्रॉन के आने पर इनका सामंजस्य बिगड जाता है और ये टुटकर ऊर्जा निकालते है। नाभिकी संरचना के आधार पर ही वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि यह परमाणु फ्यूजन रिएक्शन देगा अथवा फिसन रिएक्शन। रसायन विज्ञान की सहायता से ही हम उसका भार व परमाणु संख्या ज्ञात कर सकते है। परमाणु रासायनिक एक उभरता हुआ क्षेत्र है जिसमें अनेकानेक रासायनिक गतिविधियों की सहायता से निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। परमाणु की संख्या, भार, उसका चट्टानों में पाया जाना, सांद्रता आदि सभी रासायनिक परिवेश को उजागर करते है। क्रिया के पुरी होने के बाद निकली हुई ऊर्जा से वायुमंडल पर प्रभाव, ब्रीडर रिएक्टर कर निर्माण, कंट्रोल रोड, इंधन आदि सभी का रासयनिक गुण दोष ही क्रिया को प्रभावित करता है। द्रव्यों का ऊर्जा से बनना भी एक रासायनिक प्रक्रिया ही दर्शाती है । अतः इसका रासायनिक विज्ञान से गहरा संबंध है।

जीव विज्ञान से संबंध : परमाणु ऊर्जा के फलस्वरुप कृषि व चिकित्सा क्षेत्र में अनेक परिवर्तन दर्शनीय है। परमाणु ऊर्जा के प्रयोग से जीनों का उत्परिवर्तन किया जा सकता है। अच्छी किस्म के पौधों व बीजों को तैयार किया जा सकता है। चिकित्सा के क्षेत्र में रोगों की जाँच व बिमारियों का विकास संभव है। इस प्रकार यह जीव विज्ञान को प्रभावित करता है। परमाणु ऊर्जा से वायू प्रदूषण, जल प्रदूषण की समस्याएँ भी उत्पन्न होती है। भूमिगत गड्ढों में परमाणु कचरे को दबाने से मिट्टी की उर्वरक क्षमता में कमी होती है। यह मानव शरीर को भी हानि पहुँचाते हैं। मुख्यतः चमडी रोग, नाड़ी रोग, तंत्रिका रोग एवं कैंसर जैसी घातक बीमारी भी मनुष्य को हो सकतीहै। जीन उत्परिवर्तनों से होनेवाली संतानों में कई बिमारियाँ पाई जाती है। बच्चे जन्म से ही अपाहिज हो सकते है। इस प्रकार परमाणु विज्ञान ऊर्जा का जीवविज्ञान पर बहुत गहरा प्रभाव पडता है और साथ ही इसके साथ संबंध स्थापित हो जाता है। अनुसंधानों का कोई अंत नहीं है। परमाणु बिजली घरों में कार्यरत कर्मचारियों को अनेक प्रकार के रोग से बचाने के लिए भी अनुसंधान कार्य किया जा सकता है। तत्त्वों को क्रिया कर के ऐसा करना, जिससे उनकी कार्यक्षमता वही रहे परन्तु बुरे प्रभावों व विकिरणों में कमी आ सके। ऐसी तकनीक का विकास करना जिससे अधिक से अधिक रेडियोधर्मी पदार्थों को चट्टानों से पृथक किया जा सके। इस प्रकार के अनेक अनुसंधान के विषय है जिन पर हमारे भावी वैज्ञानिकों का ध्यान आकर्षित करना होगा। परमाणु ऊर्जा इस शताब्दी का वह महत्त्वपूर्ण अंश बन चुका है कि हर नागरिक को यह पता होना चाहिए की परमाणु ऊर्जा का क्या कार्य है। आम मनुष्य के मस्तिष्क पटल पर परमाणु शब्द सुनते ही हिरोशिमा व नागासाकी की दर्द त्रास्दी का चित्र उभरने लगता है और वह बोखला उठता है। भारत द्वारा 1998 में किए गए परमाणु परीक्षण भी कई लोगों के लिए चिंता का विषय बन गए थे। अतः यह अत्यंत आवश्यक है की सभी मनुष्यों को इस बात की पूर्ण जानकारी हो और इसे विवादास्पद नही बनाए। देश में अनुसंधान की आवश्यकताएँ बढती रहती है क्योंकि हमारा देश एक विकसनशील व प्रगतीशील देश है। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तरों पर परमाणु ऊर्जा विषयक विविध जानकारी छात्र-छात्राओं को प्रदान की जाएँ और नई-नई तकनीकों से अवगत कराया जाए, उन्हें उपनें बौद्धिक स्वर का उपयोग करने का मौका दिया जाए, विज्ञान विषयक प्रश्नोत्तरी का आयोजन हो, छात्र-छात्राओं में विज्ञान के प्रति रुझान पैदा किया जाए और इन सभी बातों को ध्यान में रखकर ही हम एक विकसित देश बन सकेंगे। छात्र-छात्राओं को यह समझाना आवश्यक है कि वैज्ञानिक जन्म से नहीं होते अपितु परिस्थितियों से समझौता करके अपने अधिक परिश्रम के बल पर ही वे सफलता अर्जित करते हैं। रुझान जन्म से नहीं होता अपितु पैदा करने से बनता है। विज्ञान के इस युग में हमें समय के साथ चलना अत्यंत आवश्यक है और लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहना भी।

स्वामी विवेकानंद ने सत्य ही कहा है - ''उत्षिठत जाग्रत प्राप्यविरान्बोधत्'' अर्थात - उठो, जागो और तब तक नहीं रुक जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो।

सतीश धुरी
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लि,

बच्चे ईश्वर का एक हसीन वरदान

'मानव... विधाता की एक सर्वश्रेष्ठ कृती और इस सर्वश्रेष्ठ कृती का एक अनुपम रूप... बच्चे... ईश्वर का एक हसीन वरदान। हर माता पिता के लिए वो दिन या वो क्षण अनमोल होता है, जिस दिन खुशियों की पोटली के रूप में उनका एक नन्हासा प्यारा सा बच्चा उनकी जिंदगी में आता है। उसकी किलकारीयों से घर आंगन खुशी से झुम उठता है। बच्चे के आने के बाद जाने-अनजाने में ही माँ-पिता हसते है, खेलते है, गाते है, बजाते है वह सब कुछ करते है जो वो अब तक भूल चुके होते है और अपना जीवन एक नए सिरे से जीने लगते है।

ईश्वर की इस अमूल्य भेट का लालन-पालन और उसके सर्वांगीण विकास के लिए उसे अच्छे संस्कार देकर संस्कारित करना माता-पिता का परम कर्तव्य बन जाता है। माता-पिता सृष्टी के मूल है। बच्चे का सबसे पहले सम्बन्ध माँ और पिता से ही बनता है। संसार के सारे सम्बन्ध तो जन्म लेने के बाद बनते है पर माता पिता का सम्बन्ध तो जन्म से पहले ही प्रारम्भ होता जाता है।

बच्चे को सुसंस्कारित बनाने का सबसे उपयुक्त समय उसका गर्भकाल गर्भधारण काल में माता का चिंतन, चरित्र और व्यवहार तीनों ही उसके उदर में पल रहे बच्चे को प्रभावित करते है, जिस तरह का वातावरण उसे मिलता है वह सब बच्चे के अंदर सूक्ष्म रूप से समाहित होता जाता है। माता की आदतें, इच्छाएँ आदि संस्कार भी बच्चे के अंदर सूक्ष्म रूप से समाहित होते जाते है। इस अवस्था में माता जो भी देखती है, सीखती है, महसूस करती है, इच्छा करती है, कल्पना करती है, उसके अनुरूप ही उसके बच्चे के व्यक्तित्व का निर्माण बीज रूप में हो जाता है, जो समयानुसार विकसित होता है। इसका उदाहरण हम महाभारत के अर्जुनपूत्र 'अभिमन्यू' के रूप में देख सकते है। अभिमन्यू ने अपनी माता के गर्भ में ही चक्रव्यूह में जाने की शिक्षा ली थी। गर्भसंस्कार 16 संस्कारों में से एक महत्वपूर्ण संस्कार है। बच्चे के इस प्रारंभिक संस्कार शिक्षा में माता को शारीरिक, मानसिक एवं अध्यात्मिक रूप से सक्षम रहना चाहिए ताकि वो एक सुसंस्कारित बच्चे को जन्म दे सके।

एक बच्चा जन्म के साथ ही समझदार होता है, उसे पता है कि मुझे कब रोना है। उसका मनोविज्ञान इतना उच्च कोटी का होता है कि, जिसकी कल्पना तो बडे कर भी नही पाते। अपनी बात मनवाने के सभी नुस्खे उसे आते है।

लेकिन बच्चा बडा होकर कहीं गलत दिशा में ना चले जाएँ इसके लिए जरुरी है उसे अच्छे संस्कार देना।

बच्चें... मन के सच्चे... खुद रुठे खुद मन जाए... फिर हमजोली बन जाए....

झगडा जिनके साथ करें.... अगले ही पल फिर बात करें...

बच्चें... मन के सच्चे...

एक बच्चें का मन कोरे कागज की तरह होता है। हम जो छवि बच्चों के मनमस्तिष्क पर डालेंगे उसका आजीवन असर उनके उपर दिखेगा। बच्चा निष्पाप होता है। हमारे दिए संस्कारों, प्रदान किये गए परिवेश के बीच वह बडा होता है।

बच्चों में संस्कारों का विकास हमेशा अपनों से बडों को देखकर ही होता है, इसलिए अपने आचरण को भी सही रखना उतना ही जरुरी है जितना बच्चे पर ध्यान देना। कहते है न.. अगर ठीक से खाद डाल जाए तो पौधा बहुत सुंदर होता है.. और संस्कार उसी खाद का काम करते है।

बच्चें... मानवता की दिव्यतम निधी है। इनके लालनपालन में स्नेह एवं मार्गदर्शन में विवेकपूर्ण दृष्टी तथा दूरदर्शिता की आवश्यकता रहती है। बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में माता पिता के त्याग, धैर्य, परिश्रम आदि वे सूत्र है जिनके द्वारा उनमें आत्मविश्वास भरा जा सकता है।

बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण की पहली कार्यशाला उसका परिवार है। बच्चों को 'बचपन' से ही सामान्य सुरक्षा एवं प्रोत्साहन देना आवश्यक है। घर ही ऐसा स्थान है जहाँ बच्चों को निपुणता प्राप्त होती है एवं घर तभी एक पूर्ण घर माना जाता है, जब वे बालक का लालन पालन इतने अच्छे ढंग से करे कि बच्चे का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं सामाजिक रूप से पूर्ण विकास हो।

श्रीमती अंजली राकेश पवार

कोकण रेलवे लि. रत्नागिरी

कार्मिक मनोविज्ञान

औद्योगिक मनोविज्ञान के बदलते हुए स्वरुप ने उद्योग संस्थानों तथा व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के समुचित संचालन में कर्मचारियों के महत्त्व को उजागर किया तथा योगपतियों एवं शीर्ष प्रबंधकों ने कर्मचारी-परक नीतियों को अपनाने का फैसला किया। इस नीति वर्तन ने उद्योगों के विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और उद्योग संस्थानों के वातावरण में वांछित परिवर्तन होने लगे। कर्मचारियों में उद्योग संस्थान के साथ तादात्म्य बढ़ने लगा जिसका धनात्मक प्रभाव उनके मनोबल पर पड़ा और संस्थानों की उत्पादन क्षमता बढ़ने लगी। एक संतुष्ट कर्मचारी उद्योग संस्थान के लिए कितनी बड़ी नेमत है इस तथ्य को स्पष्ट रूप से महसूस किया जाने लगा। और मनोवैज्ञानिकों के एक समूह ने औद्योगिक मनोविज्ञान को एक नया नाम दिया - 'कार्मिक मनोविज्ञान'। इसके अन्तर्गत कर्मचारी के चयन से लेकर उसका प्रशिक्षण, स्थान निरुपण, प्रेरणा, मनोबल, कार्य संतुष्टि आदि के विश्लेषणात्मक अध्ययन किए जाने लगे। आर्थर एस. रेबर (Arthur S. Reber 1995) ने कार्मिक मनोविज्ञान की परिभाषा देते हुए कहा, ''औद्योगिक अथवा संगठनात्मक मनोविज्ञान के उस अंग का नाम कार्मिक मनोविज्ञान है जो कर्मचारियों के चुनाव, निरीक्षण, मूल्यांकन, तथा कार्यों से संबद्ध अनेक तत्त्वों-यथा, मनोबल, व्यक्तिगत, संतुष्टि, प्रबंधन-कर्मचारी संबंध, परामर्श आदि के अध्ययन से ताल्लुक रखता है।'' कार्मिक मनोविज्ञान की दूसरी परिभाषा जे. पी. चैपलिन (1975) ने दी है। उसकी मान्यता है कि 'व्यावहारिक मनोविज्ञान की वह शाखा कार्मिक मनोविज्ञान है जो रोजगार की प्रक्रिया, चयन प्रणाली, कर्मचारियों का नियोजन, स्थानान्तरण, प्रोन्नति, पुरस्कार तथा कुछ मामलों में सीमित परमार्श एवं उपचार की गवेषणा करती है।'' औद्योगिक मनोविज्ञान का संक्षिप्त इतिहास तथा क्षेत्र मानव जीवन की जटिलताओं तथा मानव मन की दिनानुदिन बढ़ती हुई ग्रंथियों ने व्यक्ति के जीवन के हर पहलू में मनोविज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता को बढ़ाया है और औद्योगिक मनोविज्ञान ने घुटनों के बल चलना शुरू किया था तब इसका क्षेत्र इतना विस्तृत नहीं था जितना आज है। तब मनुष्य की अपेक्षा मशीन को उपयोग में अधिक महत्व जाता था। मशीनें महंगी होती थीं और उन पर काम करने वाले सस्ते मिला करते थे। उद्योगपतियों की नीतियां भी स्वार्थपूर्ण हुआ करती थीं कम-से-कम खर्चे से अधिक से अधिक लाभ उनका एक मात्र ध्येय होता था और अधिक लाभ के बिना अधिक उत्पादन का श्रेय मशिनों को मिला करता था मनुष्य को नहीं। फलतः उद्योगों में कार्यरत श्रमिकों में असंतोष बढ़ने लगा जिसका प्रत्यक्ष ऋणात्मक प्रभाव उत्पादन पर देखा जाने लगा। प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जब विभिन्न औद्योगिक संस्थोनों में उत्पादन कार्यक्षमता तथा कामगारों से संबंधित समस्याएँ बढ़ने लगीं तब औद्योगिक मनोवैज्ञानिकों की सलाह और सेवाओं के लिए उद्योगपतियों में तत्परता जगने लगी। इस समय औद्योगिक मनोविज्ञान को एक विशिष्ट एवं सम्मानपूर्ण अस्तित्व मिला। हालाँकि इसके पूर्व सन 1901 ई. में अमेरिका में और उसके शीघ्र ही इंग्लंड में औद्योगिक मनोविज्ञान का जन्म हो चुका था। इस सदी के प्रथम चतुर्थांश में औद्योगिक मनोविज्ञान की प्रगति बहुत तीव्र गति से हुई। प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों में 'ग्रेट ब्रिटेन' में थकान शोध परिषद की स्थापना की गयी जिसके कार्यकलापों में काम के घंटों; कार्य परिस्थितियों, थकान तथा ऊब से संबंधित समस्याओं, दुर्घटना तथा सुरक्षा आदि अनेक तत्वों को शोध एवं विश्लेषण के लिए शामिल किया गया था। विज्ञापन एवं विपणन ने भी औद्योगिक मनोविज्ञान का ध्यान आकर्षित किया और उसके शीघ्र बाद ही कार्यकर्ता-चयन, प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन संस्थानों से संबंधित शोधकार्य शुरू हो गए। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद औद्योगिक संस्थानों में बढ़ती हुई। मानव समस्याओं ने औद्योगिक मनोविज्ञान का ध्यान आकर्षित किया और सन 1925 ई. तक औद्योगिक मनोविज्ञान की सीमा रेखा में समाज मनोविज्ञान का पदार्पण हो गया और औद्योगिक संस्थानों में समूह व्यवहार, प्रेरणा के सिद्धान्त, विचारों के संप्रेषण, अन्तर्वैक्तिक संबंध आदि पर शोध किये जाने लगे। सन 1927 में हॉर्थन समूह (Hawthorne Group) द्वारा प्रो एल्टन मेयो (Elton Mayo) के दिग्दर्शन में रोथिल्सबर्गर (Roethilsberger) डिक्सन (Dickson), व्हाईटहेड (Whitehead) तथा होमेन्स (Homans) के द्वारा वेस्टर्न इलेक्ट्रिक कंपनी में किए गए अध्ययनों ने औद्योगिक मनोविज्ञान के विकास को एक नयी दिशा तथा ठोस आधार प्रदान किया। इन अध्ययनों ने औद्योगिक मनोविज्ञान के दृष्टीकोण को र्थिक से बदलकर सामाजिक कर दिया तथा उद्योगपतियों की नीतियों को कार्यपरक न रहने देकर कार्यकर्ता परक बनाने का प्रयास किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ग्रेट ब्रिटेन की चिकित्सा शोध समिति (Medical Research Council) व्यावहारिक मनोविज्ञान शोध शाखा ने औद्योकि संस्थानों की अनेक समस्याओं का शोधपूर्ण अध्ययन कर उनके समाधान प्रस्तुत किए। सन 1945 के लगभग इंजीनिअरिंग मनोविज्ञान, जिसे Human Engineering के नाम से भी जाना जाता था, औद्योगिक मनोविज्ञान का एक अंग बन गया और इंजीनियर्स तथा मनोवैज्ञानिकों ने मिलकर मानव-मशीन समस्याओं का हल प्राप्त करने का प्रयत्न शुरु किया। मानव-मशीन समस्याओं के अध्ययन ने औद्योगिक मनोविज्ञान के क्षेत्र को और विस्तृत किया। औद्योगिक मनोविज्ञान के आर्थिक से सामाजिक हुए स्वरुप एवं पहले की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक एवं सम्मान जनक स्थानन उद्योगों में रत कार्यकर्ताओं के महत्त्व पर अधिक जोर दिया और बताया कि उत्पादों एवं वितरण के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अंग उद्योग कार्यकर्ता ही होते हैं मशीन नहीं। इस सदी के पांचवे तथा छठे दशकों में औद्योगिक मनोविज्ञान

के क्षेत्र के अन्तर्गत मानव संबंधों तथा सामाजिक समस्याओं से संबंधित अनेक शोध हुए जिनमें निरीक्षण संबंधी समस्याएँ, समूह संचालक शक्ति का, समूह अन्तर्प्रक्रिया, नेतृत्व तथा नेतृत्व-प्रशिक्षण, कार्यकर्ताओं की मनोवृत्ति, मनोबल, कार्य संतुष्टि तथा विचारों के पारस्परिक आदान-प्रदान की प्रक्रियाओं आदि पर किए गए कार्य सर्वोपरि थे। इस सदी के छठे दशक तक आते-आते औद्योगिक मनोविज्ञान अपना स्वरुप काफी हद तक बदल चुका था। उद्योगपतियों, उद्योगों में सेवारत प्रबंधक तथा औद्योगिक मनोवैज्ञानिक ने अब तक अच्छी तरह समझ लिया था कि औद्योगिक संस्थान अथवा व्यावसायिक संस्थान किसी एक व्यक्ति या चन्द व्यक्तियों के समूह का एकतरफा निर्णय से नहीं चल सकते। उन क्षेत्रों में उद्योगपतियों, प्रबंधक, निरीक्षक, श्रमिक वर्ग तथा उपभोक्ता समूह के पारस्परिक संबंधों के एक संगठित स्वरूप को पहचाना जा चुका था जिसके अभाव में कोई भी उद्योग या व्यवसाय प्रतिष्ठान अपने उद्देश्यों की पूर्ति नहीं कर सकता और यही कारण था कि सन् 1961 में लीविट ने कहा कि समय आ गया है कि औद्योगिक मनोविज्ञान को अब संगठनात्मक मनोविज्ञान कहना शुरू कर दिया जाए और उसके कुछ ही समय बाद औद्योगिक मनोविज्ञान की सीमारेखा में संगठनात्मक मनोविज्ञान का प्रवेश होने लगा तथा औद्योगिक परिस्थितियों में संगठन के तत्वों के समावेश पर जोर दिया जाने लगा। सम्प्रति संगठनात्मक मनोविज्ञान कर्मचारियों के मनोविज्ञान पर विशेष कर मानव, कार्य तथा उत्पादन के संदर्भ में, अधिक जोर दे रहा है। ''शुरू में औद्योगिक मनोविज्ञान मानव तथा संस्थानों में ही उलझा रहा किन्तु आज के औद्योगिक मनोविज्ञान का विकास औद्योगिक समस्याओं के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन से जुडा हुआ है।''

संतोष पाटोळे
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लिमिटेड, रत्नागिरी.

मराठी काव्य

बैरागी

आज परत त्या वळणावर पाऊले थबकती,
जी कधीच नव्हती माझी,
जेथे काहीच नव्हतं माझं,
क्षणांत अगदी काही क्षणांत परत ती आठवली।
ती आठवायला मला, तसं काहीच कारण नसतं
तरी ती आठवली की मन बेचैन सैरभैर होतं,
ती, तिचा मधुर स्वर, तिची गाणी
तिचा ओझरता स्पर्श, सुगंध
सर्व अगदी जसेच्या तसे आठवतं।
ती फुलांची आरास करायची कृष्णाईला
मी मात्र तिच्या दर्शनानेच पवित्र व्हायचो।
ती आठवली की माझं असं होतं,
परत वाहत जातो अनपेक्षितपणे त्या वाटेवर
फुलापानांसह ती, तो पाऊस, ते दिवस
ती स्वप्नं, ती सांजवेळ सगळं परत परत आठवतं मला
अगदी तो सुद्धा.... तो?
मन, काया, वाचा, धर्म सारेच तर अर्पिले तिने मला
मी मात्र तृप्त होऊनही बैरागीच बनून राहिलो
तेव्हाही अन आजही... अगदी या क्षणापर्यंत
मी बैरागीच! खरंच, मी बैरागी!

''नीलश्रावण''
निलेश श्रावणजी बारई
बैंक ऑफ इंडिया,

स्वच्छ जल, स्वच्छ भारत

हम रहेंगे स्वच्छ तो रहेगा भारत भी स्वच्छ। स्वच्छता अभियान हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री. नरेंद्र मोदी जी द्वारा शुरू किया गया है। स्वच्छ अभियान में हमें खुद को, अपने घर, आस-पास के वातावरण को, जल, भूमी, पशु एवं पक्षी सभी को स्वच्छ रखना है। भारत में पीने के पानी की समस्या एक गंभीर मुद्दा है। आज भी देश के करोड़ों लोगों को पीने का साफ पानी उपलब्ध नहीं है। आजादी के 70 वर्ष बाद यदि इतनी बडी आबादी को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं है, तो यह चिंता का विषय है। आज पूरा देश स्वच्छ पीने के पानी की समस्या से जुझ रहा है। प्रत्येक वर्ष 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने की मूलभूत अवधारणा संपूर्ण विश्व में पानी की चुनौतियों को कम करने के बारे में जन जागरुकता पैदा करना है, साथ ही, जल प्रदूषण व पीने के साफ पानी की समस्या से निपटने के लिए संबंधित व्यक्तियों/एजेंसियों को ठोस कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना है। इस वर्ष विश्व जल दिवस हेतु चुना गया विषय - 'नेचर फोर वाटर' है। इक्कीसवीं सदी में पानी की चुनौतियों को कम करने के लिए प्रकृति आधारित समाधानों की संभावनाओं को तलाशना है।

जल केवल मानव जाति के लिए ही नही बल्कि जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के लिए भी आवश्यक है। पृथ्वी पर जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। समस्त जीव जगत का आधार ही जल है। यदि हम जल ग्रहण करना ही बंद कर दें, तो हमारे शरीर के अंदर चलने वाली रासायनिक क्रियाएं जल के अभाव में पूर्ण रूप से रूक जाएंगी। जल एक अति महत्त्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है। यह प्राकृतिक की ओर से दिया गया एक निःशुल्क उपहार है। धरातल का दो-तिहाई भू-भाग पानी से घिरा है, लेकिन इसका 2 से 3 प्रतिशत ही इस्तेमाल के लायक है। भारत सहित विश्व के अनेक देश स्वच्छ जल संकट की समस्या से जूझ रहे हैं। जहां यह भी उल्लेखनीय है कि इस समय भारत में विश्व की 17 प्रतिशत आबादी का निवास है, यद्यपि जल केवल 4 प्रतिशत ही है। स्वच्छ दस ही जीवन है, लेकिन इसे पाना कठिन है। देश के कई क्षेत्रों में स्वच्छ जल लाने के लिए महिलाओं का पूरा दिन लग जाता है। शुद्ध जल की कमी के कारण किसान प्रदूषित जल का प्रयोग खेती में कर रहे हैं, इसमें मृदा का स्वास्थ्य दिनोंदिन बिगड़ता जा रहा है। जिसका प्रतिकूल असर अंततः हमारे स्वास्थ्य, पर्यावरण और खाद्य सुरक्षा पर पड़ रहा है।

स्वच्छ जल की कमी के कारण बदले परिवेश में स्वच्छ जल की आपूर्ति विश्व की गंभीरतम समस्याओं में से एक है। यह समस्या स्वतः ही विभिन्न समस्याओं को जन्म देती है। परंतु आज मानव गतिविधियों के कारण जल ज्यादा प्रदूषित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप मानव स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इसके अलावा जल संसाधनों की मात्रा व गुणवत्ता पर भी इसका विपरीत प्रभाव पड रहा है जिससे पेय जल, सिंचाई, दैनिक उपयोग एवं विकास कार्यों हेतु जल की उपलब्धता निरंतर प्रभावित हो रही है। स्वच्छ जल की आपूर्ति की समस्या से निपटने के लिए असरदार कार्य व्यापक तौर पर करने की आवश्यकता है। हम सभी यह भी समझ चुके हैं कि जल प्रदूषण के लिए जिम्मेदार सभी कारकों का केंद्र बिंदू कहीं ना कहीं मानव ही है। मानव समाज सुरक्षित जल की कमी की वजह से गंभीर संकट की चपेट में है। जल की कमी के कारण मानव पेड़-पौधों व जीव-जंतुओं का विकास और वृद्धी प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होती है। स्वस्थ जीवन के लिए हम सब को सुरक्षित जल की आवश्यकता जरुरी है। आज हम अपने-अपने भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति के लिए न केवल स्वच्छता का अंधाधुंद दुरुपयोग कर रहे हैं बल्कि जल प्रदूषण को बढ़ावा भी दे रहे हैं इससे ना केवल हमारा पर्यावरण प्रभावित होता है बल्कि संक्रमित जल पीने से मानव स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी सामने आ रही है।

संक्रमित जल और मानव स्वास्थ आजकल पीने के पानी की कमी व बढ़ते जल प्रदूषण के कारण कई स्वास्थ्य संबंधी घातक बिमारियां सामने आ रही है। जिस जल के सहारे हम जीवित हैं, वही आज प्रदूषित हो जाने पर अनेक बिमारियों का कारण बनता जा रहा है। प्रदूषित पानी पीने के कारण उत्पन्न होने वाले रोगों के कारण अनेक लोग अपनी जान गंवा बैठते हैं। हमारे शरीर में पनपने वाली अधिकांश बिमारियों का स्त्रोत संक्रमित में जल ही है। वर्तमान में दोषपूर्ण सिंचाई प्रणाली व खेती में बढ़ते कृषि रसायनों के प्रयोग से भूजल की गुणवत्ता में कमी जैसी समस्याएं सामने आ रही है। जिसका अंततः मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और दूसरी एजेंसियां भी स्वच्छ जल की कमी को लेकर चिंतित हैं। आज जहां विषाक्त जल के कारण विभिन्न प्रकार की बीमारियां लोगों में पनप रही है। कृषी रसायनों के गलत और अत्यधिक प्रयोग से जल स्रोतों में संक्रमण भी बढ़ता जा रहा है। रासायनिक उर्वरकों के असंतुलित और अनुचित प्रयोग से स्वच्छ पीने के पानी की समस्या भी गंभीर होती जा रही है, क्योंकि प्रयोग किए गए रासायनिक उर्वरकों का अधिकांश भाग भूमि में रिसकर या अन्य तरीकों से भूमिगत जल, नदियों, तालाबों और झरनों में मिल जाता है। पानी के स्रोत प्रदूषित होते जा रहे हैं साथ ही फसल उत्पादों में भी इन रसायनों की विषाक्तता भी बढ़ती जा रही है। अधिकांश रासायनिक उर्वरकों का प्रभाव श्वसन तंत्र व आहार तंत्र को प्रभावित करता है।

पानी से होने वाली बीमारियों को लेकर अब काफी जागरुकता आ चुकी है यही कारण है कि बोतल बंद पानी का कारोबार लगातार बढ़ता जा रहा है। साथ ही तरह-तरह के फिल्टर का प्रयोग भी दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। इन सबके बावजूद देश की बड़ी आबादी आज भी प्रदूषित जल पर ही

निर्भर है। हम साफ-सुथरे खाने पर तो ध्यान देते हैं, परंतु स्वच्छ पानी की कमी को नजरअंदाज कर देते हैं। पानी साफ करने वाले उपकरण अत्यधिक महंगे हैं। इसके अलावा कुछ क्षेत्रों में बिजली नहीं है। इस समस्या के समाधान के लिए सीएसआईआर के नागपुर स्थित राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान ने ऐसा फिल्टर तैय्यार किया है, जो पानी से फ्लोराइड हटा देता है। इसमें एक्टिवेटेड एलुमिना नामक पदार्थ का प्रयोग होता है, जो फ्लोराइड के प्रभाव को खत्म करता है। इसे चलाने के लिए बिजली की जरूरत नहीं होती है। देश के जिन भागों के भूजल में फ्लोराइड की मात्रा है या जिन क्षेत्रों में बिजली नहीं है या लोगों के पास महंगा वॉटर फिल्टर खरीदने की क्षमता नहीं है। उन क्षेत्रों के लिए यह फिल्टर वरदान है।

केंद्र सरकार ने 'वॉटर फॉर ऑल' धारणा के साथ शहर से गांव तक हर परिवार तक स्वच्छ पेयजल पहुचाने की पहल शुरू की है, इसके लिए वर्ष 2021 तक पेयजल को आर्सेनिक व फ्लोराइड से मुक्त करने के लिए कार्यक्रम शुरू किया गया है। बेहतर स्वास्थ्य के लिहाज से यह एक महत्त्वपूर्ण योजना है। जब हम जल बचाते हैं तो पर्यावरण व जीवन बचाते हैं। प्रदूषित जल-जनित बीमारियों की वजह से देश के हर वर्ष करोड़ों रुपए खर्च हो जाते हैं। अगर हम पीने और खाना बनाने में स्वच्छ जल का प्रयोग करते हैं तो इससे ना केवल हम स्वस्थ बने रहेंगे, बल्कि इन करोड़ों रुपए को देश के विकास कार्यों में लगाया जा सकता है। साथ ही हम शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहेंगे, तभी हम देश के विकास और उन्नति में योगदान दे सकेंगे, क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क रहता है। साथ ही हमारी औसत आयु भी बढ़ेगी। जल स्त्रोत जैसे जलाशय, नदियां और झील केवल भूजल स्तर के लिए जरुरी नहीं है, बल्कि यह एअर फिल्टर का भी काम करते हैं। ऐसे में इन्हें बचाकर, इनके आसपास प्रदूषण की समस्या से भी निपटा जा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार जल-स्त्रोत पार्टिकुलेट मैटर को फिल्टर करने का काम भी करते हैं। बाष्पीकरण के द्वारा जल स्त्रोत अपनी नमी हवा को देते हैं। इस क्रम में नमी के साथ पी.एम. कण भारी हो जाते हैं और जमीन पर आ जाते हैं, जिसके कारण हवा साफ हो जाती है। यही कारण है कि तालाबों, झीलों और नदियों के किनारे हवा ताजी बनी रहती है।

जल संक्रमण की समस्या के समाधान के लिए जल प्रदूषण को उसके स्त्रोत पर ही रोकना सबसे अच्छा उपाय होगा। पानी की निकासी सभी औद्योगिक इकाइयों के लिए प्राइमरी एफ्लूएंट ट्रीटमेंट प्लांट लगाना और सक्रिय रखना अनिवार्य होना चाहिए। इसके साथ ही जल प्रौद्योगिकियों में हमें ऐसे सुधार करने होंगे, जो हमारे जल स्त्रोतों को न केवल स्वस्थ व सुरक्षित बनाए रखें, बल्कि भूजल स्तर में उत्तरोत्तर वृद्धि भी करें। कुछ जल स्त्रोतों के आसपास पशुओं को बांधना व उनमें कूडा कचरा भी फेंका जाता है। जिससे जल स्त्रोतों का पानी संक्रमित हो जाता है। अतः इन समस्याओं के समाधान हेतु जन-जागरुकता अभियान चलाया जाना चाहिए। स्कूली बच्चों को भी इन जन-जागरुकता अभियान में शामिल किया जाना चाहिए। स्वच्छ जल के संबंध में जहां जागरुकता आयी है, वहां सुधार भी हो रहा है। स्वच्छ जल की बर्बादी को लेकर सख्त कायदे कानून बनाए जाने चाहिए। इस संबंध में जन-जागरुकता बहुत जरुरी है। लोगों को बताना होगा कि स्वच्छ जल को घरों, स्कूलों व कार्यालयों तक पहुंचाने में कितना श्रम व पूंजी खर्च होती है। स्वच्छ जल संरक्षण और जल की समस्या को दूर करने के लिए प्रति वर्ष स्कूली बच्चों के लिए जल संबंधी प्रतियोगिताएं आयोजित की जानी चाहिए। इस अवसर पर पानी बचाने से लेकर सबको पानी पहुंचाने की बात होनी चाहिए। हम सबको संरक्षणपूर्ण प्रौद्योगिकियों का प्रयोग कर स्वच्छ जल प्रबंधन पर जोर देना होगा। अंत में हम यह कह सकते हैं कि बचाव उपचार से कहीं ज्यादा अच्छा है। अगर स्वच्छ जल बचा रहा, तो इससे हम भी बचे रहेंगे।

प्रिया निकेत पोकले
कनिष्ठ अनुवादक,
कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन लि., बेलापूर

भारत सपनों का !

भारत को समय-समय पर विदेशी आक्रमणों का सामना करना पडा, जो उसके विकास में कठिणाईयाँ बने। देश ने औद्योगिक क्रांती की कमी महसूस की जिसने पश्चिम को एक आर्थिक शक्ती बना दिया। बढती जनसंख्या, आकाल तथा गरिबी के साथ कभी एक संपन्न देश रहा भारत अनुक्रमी विदेशी शासकों द्वारा दमन तथा दरिद्रता का शिकार बना गया।

अब भारत के पास विशाल पैमाने पर कुशल और दक्ष मानव संसाधन है। सरकार द्वारा आरंभ पंचवार्षिक योजनाओं तथा केंद्रित मिशन मोड कार्यक्रमों के कारण मानव संसाधन का बडे पैमाने पर विकास हुआ। अब भी वर्तमान सकल घरेलु उत्पाद विकास दर केवल 415 प्रतिशत है। गरिबी रेखा के नीचे 26 प्रतिशत जनसंख्या है और बेरोजगारी 30 प्रतिशत है। इस परिस्थिति में परिवर्तन की आवश्यकता है। देश के विकास की दूसरी अंतर्दृष्टी यानी वर्ष 2021 तक विकसित भारत के सपने से ही एक सकारात्मक आंदोलन शुरू हो सकता है।

सौभाग्य से ज्ञान युग के उद्भव के साथ भारत खुद को अत्यंत लाभकारी स्थिति में पाता है, क्योंकि यह शिक्षा, स्वास्थ, कृषी और शासन में सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करेगा। यह परिवर्तन बडे पैमाने पर रोजगारों, उच्च उत्पादकता, उच्च राष्ट्रीय विकास कमजोर वर्गो के सशक्तीकरण, समन्वित तथा पारदर्शी समाज और ग्रामीण समृद्धी को प्रोत्साहित करेगा।

बौद्धिक युग के दौरान भारत का गौरव फिर लौटकर आएगा, क्योंकि भारत के पास सूचना तथा संचार प्रौद्योगिकियों और बौद्धिक कार्यकर्ताओ की क्षमताएँ है। राष्ट्र निर्माण के उपयुक्त लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हमें अपनी क्षमता का पूरा लाभ उठाना होगा।

राष्ट्र निर्माण में प्रौद्योगिकी का महत्त्व आदरणीय राष्ट्रपती ए. पी. जे. अब्दुल कलाम सर का मेरे सपनों का भारत इस पुस्तक के लेखन का प्रेरक बिंदू है।

विकास वि. पेजे
कोंकण रेलवे, रत्नागिरी

रेल विकास की ओर ...

बहुत साल पुरानी बात है। उस वक्त रेल्वे का इंधन कोयले द्वारा चला करता था। उस वक्त लोगो को बहुत सारी कठिनाईयों का सामना करना पडता था। प्रदूषण भी खराब हुआ रहता था। प्रदूषण के कारण बिमारियाँ भी बढ़ती जा रही थी। लोगो के दिलों में अशांतता बनी रहती थी। रेलवे स्टेशनों पर किसी भी तरह की सुविधा नही मिलती थी। परेशानी और भी बढती जा रही थी। स्टेशनों पर स्वच्छता ठीक तरह से नही हुआँ करती थी। यात्रियों को हर दिन बहुत कठिनायों से गुजरना पडता था। धीरे-धीरे रेलवे का इंजन डिजल द्वारा चलने लगा। जिस प्रकार जैसे-जैसे सरकार बदलने लगी, उसी तरह से अपना देश भी अलग अलग राह पर चलने लगा। रेलवे यात्रियों को किसी प्रकार की कठिणाईयां नहीं होनी चाहिये, इस पर अपना देश बहुत अच्छी तरह से ध्यान देने लगा। टेक्नॉलॉजी द्वारा बहुत सारी सुविधाएँ होने लगी। जैसे की सायन्स, मेडीकल, विद्युत, कम्प्यूटर टेक्नॉलॉजी, इंटरनेट इस सभी विषय में अपना देश बहुत अच्छी तरह से पारंगत होने लगा। पहले रेलवे इंजन कोयले द्वारा चलने लगा, और अब रेल्वे इंजन विद्युत द्वारा चलने लगा है। यात्रियों के दिलो में एक आशा की किरण दिखाई देने लगी। हर बड़े बड़े स्टेशनों पर इलेक्ट्रॉनिक टेक्नॉलॉजी द्वारा ट्रॅव्हलर और एक्सिलेटर की सुविधा होने लगी। ताकि यात्रियों को रेलवे स्टेशनों पर किसी भी तरह की चढ-उतार ना करना पडे। जगह जगह पर फोन की सुविधाएँ होने लगी। ट्रॅव्हलर और एक्सलेटर द्वारा बच्चे और बुढ़े इन्सानों को अच्छी सुविधा मिलने लगी। हर स्टेशनों पर इंटरनेट के टॉवर दिखाई देने लगे। हर स्टेशनों के जगह-जगह पर मेडिकल की सुविधाएँ उपलब्ध होने लगी। स्टेशनों पर चोरी और गुंडो से सावधानी के लिए पुलिस थानों की बंदोबस्त जारी कर दी गयी। यात्रियों को ऐसी सुविधाए मिलने के उपरांत उनके भी कदम बड़े उत्साह से रेलवे की और बढ़ने लगे। और फिर एक बार सरकार में बदलाव सा छा गया। अपना देश स्वच्छता की राह पर चल रहा था। सरकार बदलने के दौरान भारत सरकार को प्रधानमंत्री के रूप में नरेंद्र मोदी जैसी महान व्यक्ती का आगमन हुआ। साल 2016 से प्रधानमंत्री जी ने भारत देश को एक स्वच्छता और समृद्धी के राह पर जाने की ठान ली। और उसी दिन से भारत देशभर में स्वच्छ देश- स्वच्छ भारत के अभियान की सुरुवात होने लगी। हर गली, शहरों, मोहल्लें में स्वच्छता अभियान दिखाई देने लगा। रेलवे स्टेशन, जिला परिषद, एस.टी. स्टँड ऐसी बड़े बड़े सरकारी कार्यालय में स्वच्छता अभियान एक उत्साह से होने लगा। जगह-जगह पर कुड़ादानों का इस्तेमाल अच्छी तरह से होने लगा। रेलवे स्टेशनों पर अधिकारी एवम् कर्मचारियों द्वारा रेलवे स्टेशन एवं रेलवे पटरी की स्वच्छता अभियान एक सतत की प्रणाली जारी कर दी गयी। और उसी प्रकार हर सरकारी कार्यालय में बड़ी आनंद और उत्साह से लोंगो की भरी संख्या के उपस्थिति में स्वच्छता अभियान की कार्यशाला की सतत की प्रणाली सुरू हो गई। रेलवे यात्रि भी इस स्वच्छता अभियान में बड़ी खुशियों से भाग लेने लगे है। जगह-जगह पर बैनर लगवाए गये। इसी प्रकार देशभर में एक ही नारा गुँजने लगा - 'स्वच्छ देश-स्वच्छ भारत'।

''एक डोर स्वच्छता की और स्वच्छ देश स्वच्छ भारत''

धीरे-धीरे यात्रियों के कदम बढ़ते गये। उसी प्रकार सुविधा भी बढ़ती जा रही थी। मान्सून द्वारा स्टेशनों पर प्लॅटफॉर्म शेड की सुविधा ताकि यात्रियों को परेशानी का मुकाबला ना करना पड़े। रेलवे मंत्री सुरेश प्रभु साहबजी ने रेलवे स्टेशनों पर बहुत कुछ सुविधा की, उन्होंने कोकण विकास प्रति बहुत अच्छा योगदान दिया। और अब कोंकण रेलवे का विकास बहुत ही अच्छी तरह से हो रहा है। कोकण रेलवे सिंगल पटरी से दौड रही थी; लेकिन अब 2016-17 से फिर एक बार प्रधान मंत्री जी ने रेलवे मंत्री पियुष गोयल जी का नाम की घोषणा कर दी। और इसी तरह आज रेलवे सिंगल पटरी से दौड रही है; कुछ सालों के बाद वह डबल रेल पटरी से दौडती हुई नजर आएगी। कोंकण भागों में डबल लाईन का कामकाज बहुत ही जोरों से हो रहा है। उसी प्रकार वृक्षारोपण भी हर स्टेशनों पर लगवाये जा रहे है। वृक्षारोपण लगवाने से हवामान सुरक्षित हो जाता है। इसी वजह से यात्रियों को प्रदूषण से परेशानी नही होती। पियुष गोयल साहब जी ने विकलांगो का विचार करते हुए, हर स्टेशनों पर उन्हें किसी बात की कठीणाई न होने का विचार करते हुएँ, स्टेशनों पर डिसेबल टॉयलेट का इंतेजाम किया। विकलांगो के लिए रॅम्प की सुविधा की। कर्मचारियों और यात्रियों की व्यावसाईक स्वास्थ्य में सुधार करने हेतु सवारि एवं माल डिब्बा कर्मचारी और कॉन्ट्रॅक्टर के कर्मचारियों के काम पर घायल और प्रथमोपचार मामलों में कमी लाने के उद्देश्य से अभियान शुरू किया गया। कर्मचारियों मे सुरक्षित ढंग से काम करने का आदत सुनिश्चित करने हेतु टैम्पलैट्स वितरित किए गए। समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कम्प्युटरों पर युनिकोड सक्रिय करने के साथ ही कम्प्युटर उपयोगकर्ताओं को हिंदी कुंजीयन का प्रशिक्षण दिया गया। हिंदु त्योहार के दिन कोंकण वासियों के लिए ज्यादा से ज्यादा रेल गाडी का आयोजन किया। छोटे छोटे नये स्टेशनों का प्रारंभ किया। हर नए स्टेशनों पर अलग से प्लॅटफॉर्म की सुविधा की। तांकि लोगों को किसी बात की परेशानी ना हो। हर स्टेशनों पर सुंदर ऐसे बाग-बगीचे बनवाये गये। कोंकण वासियों के शहर, गल्ली, मोहल्ले तथा देहातों में बच्चों के लिए कोंकण रेलवे कॉम्प्युटर शिक्षा का अभियान की सुरुवात की, ताकि बच्चों को कॉम्प्युटर की शिक्षा प्राप्त हो सके। इस प्रकार अनेक सुविधा प्राप्त होने लगी। लोगों ने भी इस अभियान में भाग लेते हुए बड़े उत्साह से प्रोत्साहन दिया।

अरुण पु. माळकर

कोंकण रेलवे कॉर्पोरेशन

सदस्य कार्यालय बैंक ऑफ इंडिया द्वारा 'प्रशासनिक कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन में भूमिका' इस विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

सदस्य कार्यालय बैंक ऑफ़ इडिया को उनके प्रधान कार्यालय द्वारा 'ख' क्षेत्र के लिये 2017-18 श्रेष्ठ राजभाषा कार्यनिष्पादन हेतु प्रथम पुरस्कार संयुक्त सचिव डॉ. बिपिन बिहारी के करकमलों से दिल्ली में प्रदान किया उसी समय बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री. ए. के. दास तथा महाप्रबंधक श्री. मिलिंद वैद्य, उपमहाप्रबंधक श्री. शैलेश कुमार मालवीय.

छमाही बैठक जून 2018 की झलकियां....

राजभाषा रत्नसिंधु

राजभाषा रत्नसिंधु
हिंदी छमाही पत्रिका

नराकास की वार्षिक कार्ययोजना 2018-2019
तथा ई-पत्रिका प्रेरणा का विमोचन

छमाही बैठक जून 2018 की झलकियां....

भारत के आर्थिक विकास के सक्षम बाधाएं

पिछले कुछ दशकों में भारत का विकास उत्साहवर्धक रहा है। आज हमारे देश की विश्व की तिसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, किन्तु अभी भी यह विश्व में उस स्थान को प्राप्त नहीं कर पाया है, जिसका यह वास्तव में हकदार है। इसके भी कई कारण हैं जैसे - देश में समस्याओं का अंबार लगा होना, जिनका समाधान एक कठिन चुनौती बनकर हमारे सामने खड़ा है।

देश के पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का मानना था कि, बिना इन समस्याओं का समाधान किए देश का आर्थिक विकास संभव नहीं है। उन्होंने कहा भी था कि आर्थिक मुद्दे हमारे लिए सबसे जरुरी हैं और यह बेहद महत्वपूर्ण है कि हम अपने सबसे बड़े दुश्मन गरीबी और बेरोजगारी से लड़े। जनसंख्या वृद्धी, गरीबी, बेरोजगारी, आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार, नारी-शोषण, सामाजिक शोषण, शोषण, अशिक्षा, औद्योगिकीकरण की मंद प्रक्रिया इत्यादि भारत के आर्थिक विकास के समक्ष मुख्य चुनौतियाँ है।

जनसंख्या वृद्धी हमारे देश के आर्थिक विकास के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती तो है ही, साथ ही बढ़ती जनसंख्या के अनुपात में रोजगार के अवसर सृजित न होने के कारण बेरोजगारी एवं गरीबी में भी वृद्धी होती हैं, जो आगे अनेक सामाजिक समस्याओं एवं बुराइयों का कारण बनती है। जनसंख्या तो बढ़ती ही है साथ ही उस अनुपात में हमारे संसाधनों में वृद्धि नहीं हो पाती जिसके फलस्वरूप सीमित संसाधनों का बंटवारा हमें पहले के मुक़ाबले अधिक लोगो के साथ करना पड़ता है। अर्थात हमारा आर्थिक विकास धीमा पड जाता है।

गरीबी अथवा निर्धनता उस स्थिति को कहा जाता है जिसमें व्यक्ति को अपने जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ रहता है। गरीबी के कारण देश की अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभवा पड़ता है एवं इसके विकास में अनेक प्रकार की समस्याएँ जन्म लेतीहैं। चोरी, अपहरण, हत्या, डकैती, नशाखोरी जैसी बुराइयों की जड़ में कही न कही गरीबी ही हैं। भारत के करोड़ो लोग अब भी घोर गरीबी की स्थिति में जीवन जीने को विवश हैं।

भारत के आर्थिक विकास में बेरोजगारी एक आर्थिक समस्या है। बेरोजगी के कारण देश के समुचित संसाधनों के कारण चोरी, अपहरण, हत्या, डकैती, नसखोरी जैसी बुराइयाँ जन्म लेती है। जिससे देश के आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

भ्रष्टाचार आज की तारीख में सबसे बड़ी समस्या बना हुआ हैं। कुछ लोग कानूनों की अवहेलना करके अपन उल्लू सीधा करते हुए भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं। इसकी वजह से नैतिक एवं चारित्रिक पतन होता हैं। वही दूसरी ओर देश को आर्थिक क्षति भी उठानी पड़ती है।

भारत की यह अजीब विडम्बना है कि यहां एक ओर तो धन कुबेरो की कमी नहीं हैं, जिनके पास बहुत संपत्ति हैं, वही दूसरी ओर ऐसे लोगो की भी कमी नहीं हैं जिनके पास दो वक्त की रोटी भी मयस्सर नहीं है। आर्थिक विषमता कि यह स्थिति भारत के आर्थिक विकास में बहुत बड़ी बाधा है।

हमारे देश का यह दुर्भाग्य रहा है कि यहा पूर्व में स्त्री शिक्षा पर बल नहीं दिया जाता था। यहाँ तक की स्त्रियों को चार दीवार तक सीमित रखा जाता था। उनका शोषण किया जाता था। आज भी इस आधी आबादी में से कुछ की ही स्थिति ठीक हैं, बाकी या तो घर की देखभाल में लगी हैं या फिर अशिक्षा या अन्य गलत परंपरा जैसे कारणों से किसी कार्य में संलग्न रहती हैं जिसके कारण देश का आर्थिक विकास पर प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है।

धनिक वर्ग द्वारा गरीबों का शोषण, उनकी मजबुरी का फायदा उठाना ही सामाजिक शोषण है। यदि मजदूरों का शोषण किया जाएगा, उन्हें उचित मजदूरी नहीं दी जाएगी, तो भला कैसे कोई देश आर्थिक विकास कर सकता है।

हम चाहे जीतने भी दावे कर लें, लेकिन सच्चाई यही है कि भारत की लगभग 30 प्रतिशत आबादी आज भी अशिक्षित है। इनमें पुरुषों की तुलना में महिलाओं की स्थिति और भी चिंताजनक है, आज भी लगभग 40 प्रतिशत महिलाएं अशिक्षित हैं। इतनी बड़ी आबादी के अशिक्षित होने से देश का आर्थिक विकास गंभीर रूप से बाधित होता है।

भारत की जनसंख्या जिस गति से बढ़ रही हैं, उसके यथोचित पोषण के लिए औद्योगिकरण की प्रक्रिया में जिस तीव्रता की आवश्यकता थी, उसे हम आज तक प्राप्त कर पाने में विफल हैं, फलस्वरूप आर्थिक विकास कि गति धीमी हुई है।

देश एवं समाज के आर्थिक विकास के लिए इन चुनौतियों का शीघ्र समाधान की आवश्यक है और उसका उत्तरदायित्व मात्र राजनेताओं अथवा प्रशासनिक अधिकारियों का ही नहीं है, बल्कि इसके लिए सयुक्त प्रयास किए जाने कि आवश्यकता है। देश भर में शिक्षा का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार कर एवं यहाँ कि जनता द्वारा 'छोटा परिवार, सुखी परिवार' का आदर्श अपनाकर बढती जनसंख्या पर काबू पाया जा सकता है। साक्षरता दर को ऊंचा उठाकर, कुटीर उद्योग आदि का विस्तार कर रोजगार के नए नए क्षेत्र तलाशे जाने जाहिए।

आर्थिक विषमता को दूर करने हेतु सरकार द्वारा अनेक नीतियों का गठन किया जाना चाहिए। इलेक्ट्रॉनिक एवं प्रिंट मिडिया को इन सुधार कार्यों में खुलकर सहयोग करने की आवश्यकता है। समाज सुधारकों, लेखकों, कलाकारों, एवं अन्य बुद्धिजीवियों वर्गों को भी जन-जन से जुड़कर लोगों में नई चेतना का संचार करना चाहिए, ताकि देश में सामाजिक क्रांति लाई जा सके।

मौ. नदीम,
आशुलिपिक,
भारतीय तटरक्षक अवस्थान, रत्नागिरी

आचार्य द्रोण : आधुनिक अध्यापकों के मिथक (मनु शर्मा के उपन्यासों के संदर्भ में)

भारतीय सांस्कृतिक सामाजिक परंपराओं में गुरू की महत्ता सर्वोपरि है। प्राचीन काल से लेकर आज तक भारतीय समाज में गुरू का स्थान माता-पिता के समान हमेशा से आदर्शवत रहा है। उसका महत्त्वपूर्ण कारण है - गुरू का उत्तरदायित्व। भारतीय संस्कृति के अनुसार बच्चे को जन्म देना तथा उसका भरण-पोषण करना माता-पिता का काम होता है। गुरू का कार्य इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण माना गया है, क्योंकि गुरू बालक या शिष्य के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यही वजह है कि गुरू का स्थान न सिर्फ माता-पिता से बढ़कर माना है, बल्कि उन्हें भारतीय संस्कृति के आदर्श मिथक स्वरूप देवों में गिना जाता है। प्राचीन भारतीय सभ्यता में गुरू के लिए आचार्य शब्द का प्रयोग किया जाता था। शिक्षा क्षेत्र में वह सर्वोच्च पद था। आचार्य शब्द का शब्दगत अर्थ - ''वह व्यक्ति जो विद्यार्थी से आचरशास्त्रों के अर्थ तथा बुद्धि का आचयन कराता है।'' आचार्य शब्द के गर्भित अर्थ को देखे तो गुरू का अर्थ मात्र ज्ञान (जानकारी) देने का न होकर वह विद्यार्थियों में आचारणगत शुद्धता तथा बौद्धिक परिमार्जन करता है। मानवी सभ्यता की उन्नति में मनुष्य का बौद्धिक तथा आचरणगत परिमार्जन ही अपेक्षित है। जाहिर है गुरू का दायित्व विद्यार्थियों को शिक्षित करने तक सीमित न मानकर परोक्ष रूप से उन्हें समाज को भी संस्कारगत बनाना स्वीकार किया गया है। इसलिए व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन में तथा सामाजिक जीवन में भी गुरू का स्थान उच्च माना गया है। व्यक्ति तथा समाज गुरू को उसके पद तथा दायित्व के कारण ही सम्मान की नजर से देखता है। दूसरे शब्दों में प्रकट कहे तो कोई व्यक्ति जो ज्ञानदान का काम करता है और उसे समाज द्वारा दिया जा रहा सम्मान उस व्यक्ति को न होकर उस पद को दिया गया सम्मान है। दर्शनशास्त्र की भूमि पर सोचे तो भारतीय समाज व्यवस्था ने गुरुपद की महत्ता स्वीकारते हुए उसे सर्वोच्च स्थान दिया है। जो भी व्यक्ति इस पद को प्राप्त करेगा वह सम्मान का अधिकारी बन जाता है।

व्यास रचित महाभारत में भीष्म द्वारा कौरव कुल के पुत्रों को शिक्षा देने की जिम्मेदारी द्रोण को सौंपी जाती है। जिससे वे समस्त कुरुकुल के गुरू बन जाते हैं और आचार्य पद प्राप्त करते हैं। द्रोण में शैक्षिक योग्यताएँ तो उच्च कोटि की थी। लेकिन गुरुपद के लिए आवश्यक जीवन दर्शन का अभाव था, जिससे महाभारत कालीन व्यवस्था ने उन्हें सम्मान तो दिया लेकिन प्रागैतिकासिक द्रोण को परवर्ती इतिहासकारों तथा आलोचकों ने आदर्शवादी गुरू की हैसियत से न देखकर एक पतनशील आचार्य के रूप में चित्रित किया है। उनका इस प्रकार का चित्रण कोरी काल्पनिकता नहीं है। इसके लिए प्रागैतिहासिक महाभारत को ही आधार बनाया गया है। अपने स्खलित गुरुत्व के कारण आचार्य द्रोण परवर्ती परचनाकारों के लिए एक मिथक बनकर रह गए। भारतीय साहित्य में द्रोणाचार्य के इसी स्खलन को इंगित करती रचनाएँ पाई जाती है। मनु शर्मा की कृति 'द्रोण की आत्मकथा' में द्रोण को एक साधारण व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है। जो अपनी विद्या को बेचकर जीविकोपार्जन करता है। मनु शर्मा के द्रोण महाभारतीय द्रोण होकर भी उसमें एक साधारण मनुष्य के समान बहुत सी न्यूनताएँ मुखरित होती है। इसी कारण उनका आचरण आधुनिक पीढ़ी के उन अध्यापकों के समान है जो शिक्षा और नैतिकता के आपसी संबंधो को दरकिनार करते हैं। सूर्यकांत बाली के मतानुसार, ''कोई बड़ा, श्रेष्ठ, आदर्श और मर्यादा स्थापक काम न करने के बावजूद द्रोण को अगर इतना सम्मान हमारी परंपरा में मिला है तो इसका कारण उनका गुरू होना है और ठीक इसी नाते वे गुरू को दिया जानेवाला सम्मान बटोरकर ले गए हैं। वे गुरू को उँचे आदर्शपूर्ण आसन तक नही पहुँच पाए। बल्कि जैसे वे खुद थे वैसे ही शिष्य उन्होंने बनाए। वे अपने आसपास के मर्यादाहीन राज, समाज के बीच रहकर वे कोई ऐसी मर्यादा स्थापित नहीं कर पाए, जो सामाजिक जीवन का मानदंड मानी जा सके।'' मनु शर्मा द्रोण के इस अधःपतन को पूर्णरुपेन द्रोण को जिम्मेदार नहीं मानते। यह व्यवस्था के बदलाव का परिणाम मानते हैं। जिस प्रकार पतझड़ के मौसम में हर वृक्ष के पत्ते झरते हैं उसी प्रकार जब समाज का अधःपतन होता है तो शिक्षा क्षेत्र में भी वह बात लागू होती है। द्रोण इस व्यवस्था का मात्र एक हिस्सा है। मनु शर्मा के उपन्यास में द्रोण को अति आदर्शवादी और अति पतित नहीं दर्शाया है। उन्होंने उपन्यास में व्यावसायिक अध्यापक की व्यावहारिकता को चित्रित किया है, जो पतनशील है।

1. प्रतिशोध पीड़ित व्यक्तित्व का मिथक :

भरद्वाज पुत्र द्रोण शास्त्र और शस्त्र ज्ञान में निपुण थे। ब्राह्मण होने के नाते तथा विरासत में मिले आश्रम को चलाकर विद्यादान का कार्य करना उनकी उपजीविका का साधन था। पिता की मृत्यु के पश्चात वे दीर्घ काल तक आश्रम को सुचारू रूप से नहीं चला सके। आचार्य परशुराम की संपत्ति पाने हेतु उनके पास चले गए, परंतु वे अपनी संपत्ति पहले ही बाँट चुके थे तो उनसे शस्त्रज्ञान हासिल करके वापस लौटे। परंतु परिवार चलाने की समस्या उनके सम्मुख थी। छात्रावस्था में जारकुमार द्रुपद की सहायता द्रोण ने की थी इसलिए वे चाहते थे कि अब वे उनकी सहायता करे परंतु राजा बनने पर द्रुपद ने द्रोण की सहायता न कर अपमानित किया, जिससे उनके अहंकार को ठेस लगी। चोट खाए अहं से ही प्रतिशोध का जन्म होता है। उपन्यास में द्रोण पत्नी कृपी द्रोण को समझाने का प्रयास करती हुई कहती है, ''इतना दुःखी होने से कोई लाभ नहीं। प्रतिहिंसा वह आग है जो स्वयं से ही पैदा होती है और स्वयं को ही जलाती है। जरा संयम से काम ले। आप ही ने कहा था कि हमारी संपत्ती हमारा संतोष है, हमारी विद्या, हमारा त्याग है।'' परंतु पत्नी द्वारा समझाने पर भी द्रोण का प्रतिशोध शांत नहीं

हुआ था। प्रतिशोध के लिए वे कुछ भी करने को तैयार थे। प्रतिशोध ने उनकी दार्शनिकता को तोड़ दिया था। इसलिए वे आश्रम परंपरा खंडित करके हस्तिनापूर के राजकीय चाकर बन गए। जिस क्षण उन्होंने राजकीय चाकर का मन बनाया तभी वे अपने गुरूगत अधिकार तथा सम्मान से दूर होकर अपमानित होते नजर आते हैं। मनु शर्मा के औपन्यासिक द्रोण कहते हैं, ''पर दुर्योधन माननेवाला नहीं था उसने कहा, आचार्य की नियुक्ति करना हमारे उपर है। हम उनकी नियुक्ति कराएंगे। इसमें कृपाचार्य की सहमति की क्या आवश्यकता? हम चाहे एक को आचार्य रखे था दस को। वृत्ति तो हमें देनी है। मुझे दुर्योधन के स्वर में अहंम की मात्रा आत्यधिक दिखाई पड़ी। उसमें छात्रोचित विनय का अभाव था। जब विनय नहीं तो विद्या कैसी? यदि मैं अपने आदर्शों का पालन करता तो दुर्योधन को कभी भी अपना शिष्य न बनाता, पर इस समय वह द्रोण मर चुका था। एक नए द्रोण का जन्म हो चुका था, जो प्रतिहिंसा व वैभव की आकांक्षा लेकर जन्मा था।'' द्रोण के इस वक्तव्य से ही स्पष्ट हो जाता है कि यह प्रतिशोध मात्र द्रुपद के प्रति न होकर द्रुपद द्वारा अपमान के मूल कारण गरीबी से भी है। इसलिए अपनी गरीबी को दूर करने के लिए भी उन्होंने अपनी आश्रम व्यवस्था को तोड़कर हस्तिनापूर के राजकीय चाकर बन गए। आधुनिक आलोचकों की दृष्टि से द्रोण की संपूर्ण जीवनयात्रा ही प्रतिशोध पर आधारित थी। प्रतिशोध ने उनके समुचे व्यक्तित्व को परिवर्तित कर दिया। जिसके कारण वे आदर्श की उँचाई छू नहीं पाए। सूर्यकांत बाली लिखते हैं, ''मन ही मन द्रुपद ने बदला लेने का संकल्प कर दिया और द्रोण का शेष जीवन अपने इस प्रतिशोध भरे संकल्प की पूर्ति में ही खर्च हो गया। महाभारत युद्ध में भीष्म शरशय्या पर गिर जाने के बाद द्रोण कौरव सेना के सेनापति बने तो युद्ध में द्रुपद को मारकर द्रोण ने अपने जीवन की महत्त्वाकांक्षा पूरी की।''

हस्तिनापूर के कुरुकुल के आचार्य बनने के बाद अर्जुन के रूप में उन्हें एक ऐसा छात्र मिला जिससे वह द्रुपद से अपना प्रतिशोध पुरा कर ले। इसलिए विधिवत शिक्षा समाप्ति के पश्चात उन्होंने गुरुदक्षिणा के रूप में बंदी द्रुपद की माँग की। अर्जुन ने इस गुरुदक्षिणा की पूर्ति की और द्रुपद को बंदी बनाकर आचार्य द्रोण के सामने खड़ा किया। आचार्य द्रोण ने उसका आधा राज्य ले लिया और स्वयं राजा बन गए। तथा द्रुपद से मित्रता की बात करने लगे। तब द्रुपद द्रोण को धिक्कारते हुए कहते हैं कि, ''वाह रे गुरू, वाह रे गुरु दक्षिणाएँ। तुम्हारी इन आकांक्षाओं के भीतर से तुम्हारे मन का कलुष झाँकता है द्रोण! मैं अर्जुन द्वारा बंदी बनाया गया हूँ, परंतु तुम्हे तुम्हारी अनीतियों ने बंदी बनाया है, तुम्हारी पतित आकांक्षाओं ने बंदी बनाया है। मेरा शरीर बंदी है, तुम्हारा मन बंदी है। मेरा बंधन बाह्य है, तुम्हारा आंतरिक। मेरा बंधन टुट भी सकता है, किंतु तुम इस बंधन से कभी मुक्त नहीं हो सकते। मैं बंदी होकर भी उन्मुक्त हूँ और तुम उन्मुक्त होकर भी बंदी।'' द्रुपद के इस वक्तव्य से द्रोण की कलुषित मानसिकता का ना केवल पर्दाफाश होता है बल्कि यह भी प्रकट होता है कि प्रतिशोध किसी व्यक्ति के प्रत्येक कार्य को किस तरह से प्रभावित करता है। एक गुरू होने के बावजूद न स्वयं के मन से प्रतिशोध हटा सके बल्कि अपने छात्रों का उपयोग भी अपने प्रतिशोध की अग्नि के लिए समिधा जुटाने के लिए किया। दाजी पणशीकर तो इस प्रतिशोध के प्रवाह को बहुत दूर तक देखते हैं। वे कहते हैं, ''द्रुपद का प्रतिशोध चिंतन और द्रोण का शस्त्र सामर्थ्य इतना भयावह था कि इन दोनों के प्रतिशोध पूर्ति के लिए दृष्टद्युम्न और द्रौपदी पर बीते महाभयंकर वस्त्रहरण प्रसंग में आचार्य द्रोण का तटस्थ रहना शायद द्रुपद के प्रति अपने प्रतिशोध की पूर्ति का कारण भी माना जा सकता है।

2. संस्थागत अध्यापकों की परवशता :

आचार्य द्रोण उन सभी संस्थागत अध्यापकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अशैक्षिक व्यक्ति द्वारा स्थापित शिक्षा व्यवस्था में वेतनभोगी बनकर अध्यापन का कार्य करते है। इतना ही नहीं इस प्रकार की व्यवस्था के वे आद्य अध्यापक है जो अध्यापकों की पतनशीलता का मुख्य कारण भी है। आचार्य द्रोण द्वारा भारतीय महान गुरू परंपरा को खंडित करनेवाले जितने भी कार्य हुए हैं उसमें इस व्यवस्था की प्रत्यक्ष या परोक्ष भूमिका रही है। अध्यापक जब संस्थागत सेवा प्रदान करता है तो वह अध्यापक न रहकर संस्था के कार्यनिर्देशों के अनुसार कार्य करनेवाला चाकर बन जाता है। परमार प्रीति रणवीर सिंह के मतानुसार, ''यहाँ से गुरू द्रोण के जीवन में भयंकर प्रकार का मोड़ आता है। अपनी विपन्नता को त्यागकर वह हस्तिनापूर जाते हैं और पांडवों तथा कौरवों के गुरुपद का स्वीकार करते हैं। कुटिया से महल तक की यात्रा तो वह कर लेते हैं परंतु यहाँ से एक अनैतिक परंपरा की शुरुआत होती है - वैतनिक गुरू परंपरा।'' कोई भी संस्था अपने अधिनस्थ सेवकों को कार्य की खुली छूट नहीं देती। अतः उनके कार्य पर संस्था का नियंत्रण रहता है। और अध्यापकों का कार्य बहुत हद तक संस्थापक के नीति-नियमों द्वारा नियंत्रित रहता है। ऐसे में किसे, कब व कैसे शिक्षा देनी है यह सब संस्था द्वारा निर्धारित किया जाता है। आचार्य द्रोण की परवशता पहली बार मुखरित होती है जब वह एकलव्य को अपना शिष्य बनाने से इन्कार कर देते हैं। ऐसा नहीं था कि एकलव्य में आचार्य द्रोण का शिष्य बनने की योग्यता नहीं थी। खुद आचार्य द्रोण एकलव्य से प्रभावित थे परंतु अपनी असमर्थता के चलते उन्होंने उसे शिक्षा देने से इन्कार किया। मनु शर्मा के औपन्यासिक द्रोण कहते हैं, ''इन कुछ क्षणों में ही मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ। मेरे मन ने मुझसे कहा, इस बालक में तुम्हारे शिष्य होने की पूर्ण योग्यता है। इसे अपना शिष्य स्वीकार करतो। शास्त्रों की व्यवस्था तोड़ दो। शिष्य की पात्रता देखो। तुम आचार्य हो न। किंतु मेरी बुद्धि बोल उठी, तुम ऐसा कभी मत करना। तुम्हारा

शिष्यत्व प्राप्त होते ही इसका तेज सूर्य की तरह प्रचंड हो जाएगा। तब तुम्हारे शिष्य कौरव और पांडवों का क्या होगा? इनमें से शायद कोई भी इस बालक का सामना न कर सके। तुम सोचतो हो कि आर्यावर्त के आचार्यों की महान परंपरा में मैं एक आचार्य हूँ। यह तुम्हारी भूल है। तुमने तो अपना आचार्यत्व बेच दिया है। इस समय तुम हस्तिनापूर के मात्र राजकीय चाकर हो। राजकीय अनुमति के बिना तुम किसी को शिक्षा नहीं दे सकते। कहाँ है तुम्हारा आचार्यत्व? कहाँ है तुम्हारा गुरुत्व?'' अपनी इस परवशता को लेकर आचार्य द्रोण का मन सदैव कचोटता रहा। भले ही प्रतिशोध के चलते या गरीबी के कारण उन्होंने हस्तिनापूर का आचार्यत्व स्वीकार किया हो लेकिन एक आचार्य होने के नाते व्यक्ति की स्वतंत्रता पर सोचते हुए अपने ईर्द-गिर्द अदृश्य बंधनों को महसूस करते हैं। और उसी अदृश्य बंधनों के कारण अपनी विद्या योग्य छात्र को न देकर सिर्फ सत्ताधिकारियों को या यों कहे पूंजीपतियों को बेचते रहें। भले ही एकलव्य को अन्य कारण देकर शिक्षा से दूर रखा हो। लेकिन उनका मन अपनी परवशता को जानता था। स्वप्नदृश्य में भी यह चिंतन उन्हें नहीं छोड़ता। सदैव अपने को अपराधी समझता रहा। ''मुझे ऐसा लगा मेरे चारों ओर बहुत सारे बालक है। जानते हो हम कौन है? हम है इस देश के अभागे छात्र, जिन्हें मनचाही शिक्षा न मिल सकी, क्योंकि तुम्हारे ऐसे लोगों ने आश्रम की संस्कृति और अपनी विद्या थोड़े से स्वर्ण खंडों पर राजघरानों के हाथों बेच दी। हम तो तुम्हें प्रणाम करेंगे, पर हमारी संततियाँ कभी तुम्हें क्षमा नहीं करेगी। इस देश का भविष्य कभी तुम्हें नहीं छोड़ेगा।'' द्रोण की यह परवशता आजीवन रही। इस व्यवस्था ने उन्हें इतना पंगु बना दिया कि कौरव कुल के कुमारों को पढ़ाने के पश्चात उन्होंने अन्य किसी को भी अपना शिष्य नहीं बनाया। चाहते तो दुबारा आश्रम चला सकते थे लेकिन इस व्यवस्था ने एक गुरू के पूर्णत्व को खंडित कर इस शिक्षा व्यवस्था का एक कल-पुर्जा बना दिया, जिसकी सार्थकता केवल व्यवस्था में ही है। व्यवस्था के बार वह मूल्यहीन बन जाता है।

संस्थागत अध्यापक की परवशता की चरमसीमा आचार्य द्रोण के ही आचरण से प्रकट होती है, जब द्रौपदी का वस्त्रहरण हुआ। आधुनिक संवेदनशील लोगों के प्रतिनिधी व आलोचक सूर्यकांत बाली आचार्य द्रोण पर आरोप लगाते हैं कि, ''क्या कौरव और पांडवों के गुरू होने के नाते उन्हें बोलना नहीं चाहिए था? क्या उन्हें कुछ करना नहीं चाहिए था? पर द्रोण चुप रहे, कुछ करना तो दूर। तो क्या इसे उनके उत्साहभंजन चरित्र का एक और नकारात्मक पहलू नहीं माना जाए?'' मनु शर्मा का उपन्यास 'द्रोण की आत्मकथा' के आचार्य द्रोण भले ही अपने बचाव में इस प्रसंग को टालते नजर आए या झूठ का सहारा लेकर अपनी अनुपस्थिति को बयां करें। यहां लेखक मनु शर्मा ने मनौवैज्ञानिक ढंग से द्रोणाचार्य के चरित्र को प्रकट किया है। जिसमें वस्त्रहरण प्रसंग में वे सभा में उपस्थित न होकर सभागार के बाहर घूमते दिखाए हैं। अगर कोई द्रोण से पूछे कि तुमने द्रौपदी के बचाव के लिए कोई उपाय क्यों नहीं किया तो द्रोण को जवाब देना मुश्किल हो जाएगा। एक तरफ आचार्य होने की नैतिकता और दुसरी तरफ हस्तिनापुर के चाकर की परवशता ऐसे में किसका पक्ष लें। इसलिए आचार्य द्रोण ने अपनी अनुपस्थिति दिखाकर उपन्यास में अपने को बचाने की कोशिश की है। आचार्य द्रोण की द्रौपदी वस्त्रहरण प्रसंग में अनुपस्थिति स्वयं लेखक भी स्वीकार नहीं करते क्योंकि उन्हीं के महाभारत पर आधारित अन्य उपन्यासों में आचार्य द्रोण की वस्त्रहरण प्रसंग में उपस्थिति दर्शायी गई है। तो इस प्रकार का चित्रण मात्र एक अध्यापक का अपने आपको लोगों की नजरों से बचाने का उपाय हो सकता है। फिर भी आचार्य द्रोण के चरित्र पर दाग तो पड़ गया। द्रोण यहाँ हस्तिनापुर के अनैतिकता की आग को बुझाने के बजाय अपनी अनुपस्थिति दिखाकर पर्दा डालने की कोशिश करते हैं, जिसमें उनका ही दामन जल जाता है। आधुनिक काल में राजनीतिक तथा पूँजीपतियों द्वारा खोले गए शिक्षा संस्थानों में संस्थापकों के (दुर्योधन व दुःशासन रुपी) प्रतिनिधि जगह-जगह दिखाई देते हैं। लेकिन अध्यापक नीति-अनीति जानते हुए भी वेतनभोगी होने के कारण कान-आँख-मुँह सब बंद कर लेते हैं। अध्यापकों का आचरण नीतिगत होने के बावजूद अपने मानदंड संस्थापकों के पारिवारिक छात्रों पर नहीं लगा सकते। इसलिए अन्याय के अस्तित्व को स्वीकारते हुए भी चूप रहना पड़ता है। उनके अंदर का आचार्य मात्र चाकर बनकर रह गया है और चाकर अपनी नैतिकता संस्थापकों पर थोप नहीं सकता। दूसरी बात यह भी है कि उस अध्यापक को हर हाल में अपने संस्थापक के ही पक्ष में ही रहना पडता है। भली ही संस्थापक का पक्ष अन्याय का ही क्यों न हो। उपन्यास में चित्रित दृश्य स्तर पर पांडव और कौरवों के बीच की लड़ाई अदृष्य स्तर पर न्याय और अन्याय के बीच की लड़ाई है। वेतनभोगी बने द्रोण को अपने संस्थापक कौरवों के पक्ष में सहयोग देना पड़ता है। इस सहयोग में उनकी भावनाएँ कौरवों के साथ नहीं हैं। वे मन से पांडवों की जीत चाहते हैं। न्याय की जीत चाहते है। परंतु पक्ष वे कौरवों का लेते हैं, अन्याय का लेते हैं। अंत तक वे कौरव के पक्ष से ही युद्ध करते है, जिसके लिए उनका हृदय कतई तैयार नहीं था। उपन्यास में चित्रित द्रोण की यह कश्मकश आधुनिक युग के अध्यापक के आंतरिक द्वंद्व के साथ ही चुनाव में अपने संस्थापक को जीत दिलाने के लिए अध्यापक को अपनी इच्छा के विरुद्ध जाकर जिस प्रकार सहयोग देना पड़ता है और संस्थापक की जीत के लिए अपनी अध्यापकीय नैतिकता की बलि देनी पड़ती है, इसको मिथक रूप में प्रकट करता है। औपन्यासिक द्रोण का कथन, ''दंतहीन सर्प, बंधा हुआ सिंह और बिका हुआ आचार्य सचमुच बड़ा निरीह प्राणी होता है।'' आधुनिक संस्थागत अध्यापकों की परवशता को

प्रकट करता है।

3. गुरुपद से स्खलित -

भारतीय महान गुरु-शिष्य परंपरा में गुरू द्रोणाचार्य तथा उनका शिष्य अर्जुन का नाम लिया जाता है लेकिन परंपरा को खंडित करनेवाले तथा अध्यापक की स्वार्थी, दृष्य तथा पक्षपाती मनोवृत्ती के दर्शन करानेवाले आचार्य के रूप में भी गुरू द्रोण का ही नाम लिया जाता है। एकलव्य के संदर्भ में उनका आचरण निःसंदेह गुरू की गरिमा को धूलधूसरित करनेवाला रहा है, फिर चाहे कारण कोई भी क्यों न हो। परमार प्रीति रणवीर सिंह के मतानुसार, ''गुरू द्रोण की आत्मकथा का काला पृष्ठ यहाँ एकलव्य प्रसंग है। जिसकी चर्चा आज के दलित विमर्श के साहित्य में खूब हो रही है।'' यही कारण है कि शिक्षा से वंचित दलित जातियाँ आज एकलव्य को अपना प्रतिक मानती है और द्रोण को वर्णवादी व्यवस्था के संरक्षक के रूप में देखती है। ''एकलव्य ने द्विजो की वर्णव्यवस्था को खुली चुनौती दी थी इसलिए द्विजों की सत्ता के पक्षधरों में एकलव्य का अंगूठा काटकर व्यवस्था को भंग करने का उसे दंड दिया था। यह एक ऐसी हिंसा थी, जिसका उपयोग हिंदूओं ने अपनी धर्मरक्षा के लिए किया था और इसका उन्हें आज तक कोई पछतावा नहीं है। आखिर कटे हुए अंगुठे का आचार्य द्रोण के लिए क्या उपयोग हो सकता था?'' दलितों के इस प्रश्न का मनु शर्मा के औपन्यासिक द्रोण के पास कोई जवाब नहीं। उपन्यास में भी द्रोण कोई उच्च मूल्यप्रधान अध्यापक नहीं है। बल्कि उनका अध्यापन का कार्य एक वेतन पानेवाली नौकरी है। छात्रों को जानकारी देना यही उनका पेशा नजर आता है। उपन्यास के द्रोण एक अर्थ में 'व्होकेशनल टीचर' है। जो शस्त्रज्ञानी थे और अपने छात्रों को भी शस्त्रज्ञान ही देते थे। द्रोण के संदर्भ में सूर्यकांत बाली लिखते हैं, ''द्रोण के जीवन में आयुधजीवी ब्राह्मण होने के अतिरिक्त ऐसा कुछ नहीं है जो उन्हें महान सिद्ध कर सके। द्रोण के चरित्र में शस्त्र है, शास्त्र नहीं हैं, बल है, बुद्धि नहीं है। शौर्य है विचार नहीं है, प्रतिशोध का भाव है, उदात्त जीवन दर्शन नहीं है, जैसे वे थे वैसे ही शिष्य उन्होंने बनाए जो राज्य पाने की अंधी लालसा में आपस में लड़ मरे और लड़कर मरने के इस नरमेध में द्रोण ने पुरोहिती की।''

द्रोण के जीवन का लक्ष्य महान सिद्धांत या आदर्श की स्थापना करना कतई नहीं था। 'आचार्य' पद उनके लिए परिवार पालने का एक रोजगार है। रोजगार का संबंध पेट से होता है, नैतिकता से नहीं। इसलिए अपने प्रोडक्ट रुपी अर्जुन को महान बनाने के चक्कर में वे पक्षपाती बन गए। सूर्यकांत बाली लिखते हैं, ''द्रोण अपनी इस नई महत्त्वाकांक्षा में इतने मोहांध हो गए कि अर्जुन के संभावित प्रतिद्वंद्वी एकलव्य का जीवनपथ खत्म करने के लिए उस भील बालक के दाहिने हाथ का अंगुठा गुरुदक्षिणा में मांगते हुए उनकी वाणी नहीं काँपी।'' उपन्यासकार मनु शर्मा भी इसे द्रोण का नीचतापूर्ण कार्य मानते हुए औपन्यासिक आचार्य द्रोण की स्वीकृति प्रदान कराते हैं, ''रक्त से सना हुआ अँगूठा समर्पण के लिए अंजुलि में रखकर जब वह (एकलव्य) मेरे पास खड़ा हो गया तब मेरे पैर के नीचे से धरती खिसक गई। मैंने कभी सोचा नहीं था कि कोई शिष्य ऐसा भी कर सकता है, अंगुठे के माध्यम से अपनी सारी धनुर्विद्या मुझे समर्पित कर सकता है। मुझे आकाश काँपता नजर आता, धरती हिलती नजर आई। एक शिष्य के महासमर्पण पर या आचार्य की नीचता पर?'' अपने इस स्खलन से वे कभी उभर नहीं पाए साथ ही अपनी इस गलती को सुधारने की कोशिश उन्होंने कभी नहीं की। एकलव्य को न तो द्रोण ने पढ़ाया न ही अपना शिष्य बनाया था। ऐसे में गुरुदक्षिणा माँगने का उन्हें कोई नैतिक अधिकार नहीं था। यहाँ उनकी ईर्ष्या भावना के कारण उनका स्खलन हुआ। आचार्य द्रोण का दूसरी बार नैतिक स्खलन तब हुआ जब उन्होंने गुरुदक्षिणा में अर्जुन द्वारा द्रुपद को बंदी बनाया। एक तो आचार्य द्रोण वेतनभोगी आचार्य थे। उनके ज्ञानदान के परिश्रम के रूप में उन्हें वेतन मिलता था, ऐसी स्थिति में उन्हें गुरुदक्षिणा माँगने का नैतिक या व्यवसायगत अधिकार नहीं था। दुसरी बात गुरुदक्षिणा के रूप में किसी को बंदी बना लेना कहाँ तक उचित है? यहाँ उनकी प्रतिशोध की भावना के कारण स्खलन हुआ। द्रोण के इस चारित्रिक स्खलन की ओर निर्देशित करते हुए औपन्यासिक द्रुपद कहते हैं, ''तुम्हारा ब्राह्मणत्व सबसे पहले उस समय पराजित हुआ जब मात्र पारिवारिक सुविधा के लोभ में तुमने अपनी विद्या राजपरिवार के हाथों बेच दी। एक आचार्य का स्वाभिमान थोड़े से स्वर्मखंडो में खरीद लिया गया। आश्रम के मुक्त वातावरण से हटकर तुम्हें वैभव की दीवारों के बीच बंदी बना लिया गया। तुम भरद्वाज के पुत्र, अग्निवेश के शिष्य अपने पिता की तरह आश्रम चला सकते थे, सारे आर्यावर्त के आचार्य बन सकते थे, पर तुमने मात्र एक परिवार के घेरे में ही अपने कर्तव्य को बाँध रखा।'' आचार्य द्रोण के चरित्र का तिसरी बार स्खलन युद्धभूमि में नजर आता है, जब वे युद्धभूमि में योजना बनाकर अर्जुन को युद्धभूमि से बाहर करके अभिमन्यू के लिए चक्रव्यूह की रचना करते हैं। इस चक्रव्यूह में अभिमन्यू को पहले अकेला करके छह-सात महारथियों के द्वारा उसे मार देते हैं। द्रोण के इस कर्म पर सवाल उठाते हुए सूर्यकांत बाली लिखते हैं, ''अगर अनैतिकता के इस झंझावात में गुरुपद पर प्रतिष्ठित लोग भी अपने आपको नहीं बचा सके तो कैसे उन्हें बड़प्पन का ऊँचा आसन दे दे? कैसे उन्हें भारत की सभ्यता के विकास में योगदान करनेवाले नायक मान ले ?'' मनु शर्मा के उपन्यास में भी द्रोण का स्वप्नदृश्य भी उनके इस कार्य के लिए उन्हें अपराधी सिद्ध करता है। इस बार उनका यह स्खलन दुर्योधन के दबाव के कारण हुआ था।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि महाभारत के महत्त्वपूर्ण पात्र 'द्रोण' की पहचान आचार्य पद से है। इसलिए सिर्फ 'द्रोण' कहने से आधुनिक काल

में इस पात्र को विशेष परिचय देने की आवश्यकता महसूस होती है। द्रोण के साथ आचार्य पद जोड़ने से ही उनकी पहचान पूरी होती है। आधुनिक मिथकीय समीक्षात्मक दृष्टि से देखे तो द्रोण की पहचान ही उनके पद से है। पद से प्राप्त गरिमा बाहरी खोल की तरह होती है। इस पद ने द्रोण की न्यूनताओं पर परदा डालने का काम किया लेकिन गरिमा का खोल भी व्यक्ति के अविवेक को ढँक नहीं सकता। महाभारतकार ने आचार्य द्रोण को हमेशा गौरवान्वित किया है। सिर्फ अंतिम महायुद्ध के समय व्यास तथा अन्य ऋषियों ने द्रोण को शस्त्र त्याग के लिए प्रेरित करने की घटना दिखाई देती है। परंतु आधुनिक साहित्यकारों ने तथा समीक्षकों ने गुरूपद से स्खलित द्रोण के कुटिल, प्रतिहिंसावादी, अविवेकी रूप को प्रकट किया है। इसलिए आधुनिक काल में द्रोण उच्चादर्श अध्यापक का मिथक न होकर पदस्खलित अध्यापक का मिथक है। मनु शर्मा ने अपने उपन्यासों में आधुनिक संस्थागत अध्यापकों की परवशता को मिथकीय द्रोण के माध्यम से प्रकट किया है। उपन्यास में चित्रित द्रोण का नैतिक स्खलन एक व्यक्ति का स्खलन न होकर वह पूरे अध्यापकीय पेशे का स्खलन है। आधुनिक काल में अध्यापक पद मात्र नई पीढ़ी के निर्माण का साधन नहीं रहा। वह एक रोजगार दिलानेवाला पद है। द्रोण का जीविकोपार्जन के लिए कौरव-पांडवों का आचार्य बनना आधुनिक काल के अध्यापकीय शिक्षा प्राप्त एक बेरोजगार तथा जीविकोपार्जन की गंभीर समस्यावाले व्यक्ति की किसी निजी विद्यालय में नौकरी स्वीकारने जैसा दिखाई देता है। ऐसे आधुनिक अध्यापकों का मुख्य लक्ष्य जीविकोपार्जन करना तथा अपनी व पारिवारिक जिम्मेदारियों के लिए धन अर्जित करना होता है। मनु शर्मा के उपन्यासों में चित्रित द्रोण यहाँ आधुनिक अध्यापकों का मिथक बन जाते हैं, क्योंकि दोनों का लक्ष्य एक ही है - जीविकोपार्जन व धनार्जन। नौकरी प्राप्ति के पश्चात द्रोण ने अपने ज्ञानात्मक विकास की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया, उनका सारा ध्यान भौतिक विकास व विलासी जीवन की ओर रहा। उपन्यास के ऐसे प्रसंगों में भी द्रोण आधुनिक अध्यापकों का ही मिथक बनकर उभरते हैं। क्योंकि नौकरी प्राप्ति के पश्चात आधुनिक अध्यापक भी बौद्धिक विकास को नजर अंदाज कर भौतिक साधन जुटाने के पीछे लग जाते हैं। इस प्रकार संपूर्ण उपन्यासों में आचार्य द्रोण का व्यक्तित्व वेतनभोगी अध्यापक के आदर्शहीन जीवन का मिथक बना है।

प्रा. श्री. सचिन जाधव,
कराड

कर्ज जिंदगी का

आ, जिंदगी! तेरा भी हिसाब कर दूँ,
दोस्त, दुश्मन सबसे मिल लिए आज तुझसे भी सुलह कर लूँ।

अकेली राह में, अधुरी चाह में,
बेवक्त, बे लम्हा यूँ ही भटकता रहा हूँ मैं।
खुशी, गम, जनम, मरण
हर वक्त तुझ संग मुस्कुराता रहा हूँ मैं।

दोस्त बनकर कभी आए थे तेरी आँचल में,
वो भी बरस कर चले गए, छोड मुश्किलो में।
हँसता रहा हूँ मैं तब भी, मुस्कुरा रहा हुँ मैं अब भी,
जी रहा हूँ मैं, उन अनचाहे सपनों में।

अब बस भी कर ए जिंदगी,
यूँ अश्क ना लुटा, मुझ निकम्मे राही पर
खुशबू लूटाकर अपनी, बसे जो दिलो में,
उस कलम की स्थाई पर।

ले चल मुझे ए जिंदगी कहीं दूर, चाहकर भी मैं ना लौटू,
दोस्त, दुश्मन सबसे मिल लिए आज तुझसे भी सुलह कर लूँ।

''नीलश्रावण''
निलेश श्रावणजी बारई
बैंक ऑफ़ इंडिया

वर्तमान में बैंकिंग परिवेश

'बैंकिंग विनियमन अधिनियम - 1949' की धारा 5 (1) (ब) के अनुसार बैंकिंग की व्याख्या की गई हैं। ग्राहकों को ऋण के रूप में ब्याज पर आबंटित करना ही बैंकिंग कहलाता हैं। बैंकिंग की यह मूल परिभाषा आज2018 तक बहुत ही विस्तृत हुई दिखाई देती है। बैंकिंग व्यवसाय का मूल ढाँचा तो पूँजी स्वीकार कर ऋण आबंटित करना ही रहा हैं यद्यपि अगर भारतीय बैंकिंग के 2000 साल के समृद्ध इतिहास से लेकर आज की बैंकिंग को देखा जाए तो समय एवं आवश्यकता नुसार काफ़ी बदलाव दिखते है।

1770 में अलेक्झांडर तथा कंपनी द्वारा भारत में 'बैंक ऑफ हिंदुस्तान' की स्थापना की गयी। भारत में आधुनिक बैंकिंग की शुरुआत ब्रिटिश राजा द्वारा स्थापित 3 प्रेसीडेंसी बैंकों से हुई। इन्ही 3 बैंकों के विलय से 'इंपेरियल बैंक' का आगाज़ हुआ, जो 1955 से 'भारतीय स्टेट बैंक' के नाम से जानी जाती है। 1865 में स्थापित 'इलाहबाद बैंक' भारत की पहली नीजि बैंक हैं। उसके बाद 1894 में पीएनबी, 1906 में बीओआई, 1908 में बीओबी तथा अन्य बडी बैंकों की नींव रखी गई। दरअसल इन सभी का स्वामित्व तथा नियंत्रण नीजि स्वरूप का था। 1 अप्रैल 1935 में 'भारतीय रिजर्व बैंक' सर्वोच्च नियंत्रक के रूप में स्थापित की गई। 19 जुलाई 1969 को 14 तथा 15 अप्रैल 1980 को 6 नीजि बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। भारतीय बैंकिंग के इतिहास में यह कालखंड बहुत ही अहम माना जाता हैं। राष्ट्रीयकरण के बाद बैंकों द्वारा सरकारी नीतियों तथा योजनाओ कों आम जनता तक पहुचाया जाने लगा। बैंकिंग के शुरू के दौर में ग्राहकों के खाते तथा अन्य जानकारी लेजरों पे लिखी जाती थी। ग्राहकों को बैंक से जुडी कोई भी सेवा का लाभ लेना हो तो उन्हें शारीरिक रूप से बैंक की किसी शाखा में जाना ही पड़ता था। उस दौर से लेकर आज 2018 तक बैंकिंग परिवेश पूरी तरह से तबदील हो चुका हैं।

आज की बैंकिंग काफ़ी सहज, सरल, सुलभ एवं तकनीकीयुक्त हो चुकी है। आज बैंकिंग की पूरी प्रक्रिया कम्प्युटर एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक साधनों पर पूरी तरह से निर्भर है। विविध प्रकार के खाते जैसे बचत, चालू तथा ऋण खाते कम्प्युटर की सहायता से खोले जाते है। उनका रखरखाव भी ऑनलाईन ही होता हैं। आज ग्राहक शाखा मे न जाकर भी अपने खातों से लेन देन कर सकते हैं। मोबाइल बैंकिंग, डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग तथा भीम, चिल्लर, बीओआई मोबाईल जैसे विवध बैंकिंग ऐप की देन से ग्राहकों को 24 * 7 बैंकिंग सुविधा उपलब्ध हो चुकी हैं। एटीएम, कॅश डिपॉजिट मशीन तथा ई-गैलरी से कई सुविधाएँ आज आसानी से मिल जाती हैं। कांटैक्टलेस कार्ड भी आज ग्राहकों ने स्वीकार किए हैं। एचडीएफसी बैंक की बंगलुरू शाखा ने तकनीकी से परिपूर्ण 'इंटरॲक्टिव्ह हुमनोइड' - आईआरए 2.0 का रोपण किया हैं जो आवाज़ पर आधारित नेविगेशन तकनीक से कार्य करता हैं। सीडबी ने 'उद्यममित्रा' के तहत नए एवं होनहार उद्यमियों के लिए एक सराहनीय अभियान शुरू किया हैं। ग्रामीण तथा कृषि क्षेत्र में अग्रेसर 'नाबार्ड' ने कई राज्यों कों सहायता राशि प्रदान की हैं। गृह वित्त के लिए विशिष्ट रुप से कार्य करनेवाली 'एनएचबी' ने 50 प्रमुख शहरों में 'रेसिडेक्स' नाम से एक मालमत्ता निर्देशांक बनाया हैं। आईसीआईसीआई बैंक ने सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यगों के लिए सालाना रु. 15 लाख तक की 'इन्स्टा ओडी' सुविधा शुरू की है। आज के इस तकनीकी के दौर में कई बैंक नयी-नयी उत्पाद के साथ कारोबार बढ़ा रही हैं। जन धन योजना के तहत देश में सबसे बड़ा वित्तीय समावेशन का कार्यक्रम चल रहा हैं। इसमें करोडो खाते शून्य राशि जमा कर खोले गए हैं। आज मोबाइल पर बैंकिंग सुविधा उपलब्ध की गयी हैं। आधार कार्डस् ग्राहकों के खातों से बड़े पैमाने जोड़े गए हैं। कई सरकारी योजनाओं का लाभ आज 'प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण' के जरिए जनता कों मिल रहा हैं। पीएमजेजेबीवाई और पीएमएसबीवाई के द्वारा बैंक में बीमा सुविधा भी दी जाती हैं, जिसे 'बैंकएश्युरेंस' कहते हैं। बैंकिंग कोरस्पोंडेंट्स के सहायता से दुर्गम तथा गैरबैंकिंग क्षेत्रों में भी आज बैंकिंग सुविधा उपलब्ध कराई जा रही हैं। बेशक बैंकिंग का जाल तकनिकीपूर्ण फैलता जा रहा हैं। ग्राहकों की संख्या भी हर दिन बढ़ रही हैं। फिर भी आज बैंकिंग परिवेश तनावपूर्ण दिखाई देता है। इस तनाव की सबसे बडी जड़ बैंकों की बढ़ती हुई अनुत्पादक मालमत्ता (एनपीए) है।

भारत में कूल रु. 8.40 ट्रिलियन एनपी हैं, जिनमें से रु. 2.00 ट्रिलियन एनपीए भारतीय स्टेट बैंक के नाम है। बढ़ते हुए एनपीए कम करने के लिए सरकार ने कुछ अहम एक्ट भी पारित किए है, जिनमें 'इंसोल्वेंसी ॲंड बॅंकरप्सी' कोड़ काफ़ी मददगार साबित हो सकता हैं। हाल ही में ऋण की चुकौती से बचने हेतू गैरकानूनी तरीके से विदेश में जा बसने वाले ऋणकर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई के प्रवाधना 'फ्युगुटिव इकनॉमिक ओफ़ेण्डेर्स' बिल में प्रदान किए गए है। यह बिल ऋण राशि रू. 100 करोड व अधिक के मामले में लागू किया जा सकता हैं। बैंकिंग क्षेत्र में ऋण चुकौती के बारे में हो रहे यह सुधार भविष्य में काफी मददगार साबित हो सकते हैं। हाल ही में भारत में कई राज्यों ने कृषि ऋण माफी घोषित की है। सिसे किसानों को कुछ हद तक राहत भी मिल रही है। मगर अर्थव्यवस्था के्न्य क्षेत्रों से भी ऋण माफी की मांग होने के आसार भविष्य में दिखते हैं। देश में 'विलफुल डिफोल्टर्स' की कुल संख्या बहुत ज्यादा है। यह स्थिति ऋणकर्ताओं की नकारात्मक मानसिकता को दर्शाती है। 'इंद्रधनुष्य अभियान' के तहत सरकार ने भी रु. 70 हजार करोड़ की राशि का प्रावधान बैंकों की पुनर्वित्त हेतू कर दिया है।

सरकारी उपायों के साथ-साथ बैंकों की इस स्थिति में अपने कौशल तथा विद्वत्ता से सुधार लाने मे देश के बैंकर्स का बहुत बड़ा योगदान मिल

रहा है। ऋणकर्ताओं की सकारात्मक मानसिकता, सरकारी नीतियों का योग्य कार्यान्वयन, ग्राहकों में जागरूकता तथा तमाम बैंकर्स की विवेकपूर्ण भूमिका भारत में बैंकिंग व्यवस्था कों और मजबूत तथा सुलभ बनाने हेतू आश्वासित करती हैं।

सूरज महादेव माने
बैंक ऑफ़ इंडिया, रत्नागिरी

संघर्ष

माना की अँधेरा है घनघोर घना,
किसने किया है दीप जलाने से मना।
माना कि पथ है कठिनाईयों से भरा
चलते रहना ही जीवन है, मौत उसकी जो ठहरा।
माना कि पर्वत-सी उँची है निराशा
नदियों की भाँति रखो तुम अपनी आशा
जो बहती रहे शांत और आहिस्ता
किंतु पर्वतों को चिरकर जो बनाले अपना रास्ता।
दुनिया को ये ज्ञान हुआ है
क्यूँ हिमालय महान हुआ है
अपने पथ पर अडिग रहो
लाख मुश्किलें आने दो।
वो तो अँधेरे में गुम हो जाएगा,
नहीं महान वो बन पाएगा,
जो जीवन पथ पर डगमगाएगा।
जीवन एक संग्राम है
नहीं इसमें कोई विराम है।
जान ले तू मान ले तू
इस बा को ठान ले तू।
रखकर हिम्मत आगे बढना है
अब तुझे कुछ कर गुजरना है।
ना ही कल ना ही बाद में
कर तू आज ही जो तुझे करना है।

मनीष अरुणकुमार पडिया
बैंक ऑफ़ इंडिया

साहित्य

हिंदी साहित्य में पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांकों की प्रासंगिकता एवं उपादेयता

वर्ष 1921 के बाद हिंदी पत्रकारिता का समसामयिक युग आरंभ होता है। इसी समय के लगभग हिंदी का प्रवेश विश्वविद्यालयों में हुआ और कुछ ऐसे कृती संपादक सामने आए जो अंग्रेजी की पत्रकारिता से पूर्णतः परिचित थे और जो हिंदी पत्रों को अंग्रेजी, मराठी और बंगला के पत्रों में समकक्ष लाना चाहते थे। फलतः साहित्यिक पत्रकारिता में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। इस युग में जिन साहित्यिक पत्रों का साहित्य जगत में पदार्पण हुआ उनमें प्रमुख है - 'प्रभा' (1913), 'स्वार्थ' (1922), 'माधुरी', 'मर्यादा' एवं 'चाँद' (1923), 'मनोरमा', 'समालोचक' (1924), 'चित्रपट' (1925), 'कल्याण' (1926), 'सुधा' (1927), 'विशाल भारत', 'त्यागभूमी' (1928), 'गंगा' (1930), 'विश्वमित्र' (1933), 'रुपाभ', 'साहित्य संदेश' (1938), 'कमला' (1939), 'मधुकर', 'जीवनसाहित्य' (1940), 'विश्वभारती', 'संगम' (1942), 'कुमार' (1944), 'नया साहित्य', 'पारिजात' (1945), 'हिमालय' (1946) आदि। अगर इन पत्रिकाओं के इतिहास पर नजर डाले तो हम पाते हैं कि इनमें से अधिकांश पत्रिकाएँ पाठकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय लेखकों पर पत्रिकाओं के विशेषांक प्रकाशित करते रहते थे, यह विशेषांक पाठकों के बीच अपनी धारदार सामग्री के कारण बेहद लोकप्रिय भी होते थे। फलतः कई पत्रिकाएँ ऐसी थी जिनके प्रकाशित विशेषांक आज किसी ऐतिहासिक दस्तावेज से कम नहीं है। उनमें प्रकाशित सामग्री आज भी ओजपूर्ण एवं धारदार है। प्रस्तुत आलेख में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं द्वारा समय-समय पर प्रकाशित किए गए प्रमुख प्रमुख विशेषांको का एक परिचय करने का प्रयास किया गया है।

1. 'प्रभा' पत्रिका : इस पत्रिका का प्रकाशन वर्ष 1913 में खण्डवा से प्रारंभ हुआ था। इसका प्रकाशन श्रीयुत कालुरामजी गंगारोठ के संपादकत्व में 'रिव्यू ऑफ रिव्यू' पत्रिका के आदर्श को अपनाते हुए किया था। बाद में इस पत्रिका प्रकाशन कानपुर से प्रारंभ हुआ जिसके संपादक मंडल में पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' एवं पंडित माखनलाल चतुर्वेदी भी जुड़ गये थे। द्विवेदी युग के लगभग सभी प्रमुख लेखकों जैसे - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, इलाचन्द्र जोशी, देवदत्त शर्मा, पंडित बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', पंडित माखनलाल चतुर्वेदी आदि के लेख पत्रिका में प्रमुख रुप से छपते थे। द्विवेदी युग की पत्रिकाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि, इस युग की पत्रिकाओं में हिंदी भाषा के संस्कार एवं परिष्कार पर विशेष बल दिया गया। पत्रिकाओं में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक जैसे विविध विषयों का प्रकाशन किया गया ताकि भारतीय जनमानस को जागृत करते हुए देशप्रेम तथा स्वतंत्रता की भावना उत्पन्न की जा सकें। असहयोग आंदोलन के असफल होने के बाद वर्ष 1923 में स्वाधीनता संग्राम में नई जान फूंकने के प्रयास के तहत झंडा आंदोलन की शुरूआत हुई। पूरे देश में झंडा जत्थों ने स्वाधीनता का झंडा फहराया व गिरफ्तारियाँ दी। उसी वर्ष प्रभा पत्रिका ने अपना ऐतिहासिक 'झंडा अंक' निकाला। इसमें झंडा आंदोलन के जत्थों में शामिल आंदोलनकारियों का सचित्र विवरण मिलता है। इस अंक के लेखक श्रीयुत बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' थे।

2. 'चाँद' मासिक पत्रिका : 'चाँद' मासिक पत्रिका का प्रकाशन वर्ष नवम्बर 1922 में इलाहाबाद से हुआ था इसके संपादक एक उत्साही राष्ट्रप्रेमी श्री. रामरख सिंह सहगल तथा श्री. रामकृष्ण मुकुन्द लघाटे, बी.ए. थे। इस पत्रिका के संपादक मंडल में श्री. नंदगोपाल सिंह सहगल, श्रीमती महादेवी वर्मा, श्री. नंदकिशोर तिवारी भी जुड़े थे। कुछ दिनों तक इसका संपादन मुंशी नवजादिक लाल ने भी किया था। इनके संपाद में समय-समय पर सत्यभक्त आदि अपने समय के कई प्रखर और गतिशील व्यक्तियों ने योगदान किया था। 'चाँद' भारतीय महिलाओं की सचित्र मासिक पत्रिका थी, क्योंकि इस पत्रिका में विशेषतः महिला केन्द्रित आलेख ही प्रमुख तौर पर संकलित किए जाते थे, इस कारण इस पत्रिका को महिलाओं की पत्रिका भी कहा जाता था। इस महत्वपूर्ण पत्रिका ने कई ऐसे विशेषांक निकाले थे, जिन्होंने अपने समय संदर्भो को प्रभावित किया था।

अप्रैल 1923 में 'चाँद' ने 'विधवा अंक' प्रकाशित किया। इस अंक में उस समय के विद्वान लेखकों द्वारा लिखी गयी 52 रचनाएँ संकलित की गयी थी जो विधवाओं की दुर्दशा, उनका जीवन, उनका सामाजिक परिवेश, उनके सुधार की आवश्यकता आदि पर केन्द्रित थी। इस सामग्री का उस समय कितना विरोध हुआ होगा यह आज सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है, क्योकि उस समय विधवाओं का जीवन किसी नरक यातना से कम नही था। विधवाओं का पुनर्विवाह समाज में घोर अपराध समझा जाता था। इसी अंक में विधवा समस्या पर आधारित प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'नैराश्य लीला' प्रकाशित हुई थी जो आज भी धारदार है।

जनवरी 1926 में 'चाँद' ने 'प्रवासी अंक' निकाला जिसका संपादन प्रसिद्ध विद्वान पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी ने किया था। इसमें प्रवासी भारतीयों की समस्याओं की गहराई से उठाया गया था। 225 पृष्ठों की पत्रिका का यह 39 वां अंक था। इसी अंक में प्रेमचंद ने मॉरीशस जाने वाले भारतीयों के जीवन पर एक कहानी 'शुद्रा' लिखी। एक तो चाँद पत्रिका का प्रवासी अंक निकालना ही महत्वपूर्ण था जो इस बात का प्रमाण था की हिंदी साहित्यकार तथा पत्रिका संपादक भारत के प्रवासियों के प्रति कितने संवेदनशील थे और दुसरे प्रेमचंद जैसे हिंदी-उर्दू के विख्यात कहानीकार का इस विषय पर कहानी लिखना तो और भी महत्त्वपूर्ण था। 'शुद्रा' प्रवासी भारतीयों पर लिखी गयी हिंदी की पहली कहानी थी।

इसी पत्रिका के लोकप्रिय कथाकार मुंशी ने दिसम्बर 1926 के 'गल्पांक विशेषांक' का संपादन किया था जो काफी प्रसिद्ध रहा था। इसका प्रकाशन 'चाँद कार्यालय इलाहादाबाद' से हुआ था। इस गल्पांक विशेषांक

में प्रकाशित प्रेमचंद जी 'गल्पांक का प्रस्ताव' नामक संपादकीय में कहते है कि - ''विशेषांक के निकालने में कदाचित समस्य हिंदी पत्रिकाओं में 'चाँद' ही को प्रथम स्थान प्राप्त है। अपने जन्म से लेकर अब तक 'चाँद' के नौ विशेषांक निकल चुके है। इस वर्ष भी उसने चार विशेषांक निकालने का निश्चय कर लिया है। आज से एक महिना पहले जब 'चाँद' के सुयोग्य संपादक ने मुझसे गल्पांक प्रकाशित करने का प्रस्ताव किया तो मै विस्मित रह गया। प्रस्ताव बिल्कुल नूतन और असाधारण था। मुझे भय हुआ कि कहीं गल्पांक का मजाक न उड़ाया जाये। नये विचार सनातन धर्मावलम्बियो की दृष्टी में हास्याष्पद होते ही है। लोग नाक न सिकोड़ने लगे, यह क्या खुराफात है। भला कोई तुक भी तो हो गल्पो में ऐसी कौन सी विशेषता है कि उनको यह महत्त्व दिया जाये, किन्तु साहित्य में गल्प के महत्त्व पर जब विचार किया तो मुझे इस प्रस्ताव का सहर्ष स्वागत करने और इस अंक का संपादन भार लेने में कोई बाधा न दिखाई दी।'' इस प्रकार प्रेमचंद के इस गल्पांक विशेषांक के निकालने के संबंध में स्पष्ट विचार परिलक्षित होते है।

मई 1972 में इस पत्रिका का 'अछूतांक' प्रकाशित हुआ जिसका संपादन पंडित नंदकिशोर तिवारी ने किया था। श्री. तिवारी क्रांतिकारी विचारों के संपादक थे। इसका सबसे बड़ा उदाहरण 'चाँद' के इस अंक का मुखपृष्ठ है जिसमें पंडित नंदकिशोर तिवारी प्रेस के हिंदी विभाग के दलित कंपोजीटर वंशीलाल कोरी के साथ एक ही थाली में भोजन कर रहे है। उस युग में इसका कितना विरोध हुआ होगा इसकी सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है। 'चाँद' का अछूत अंक मिशन पत्रकारिता का अन्यतम उदाहरण है। इस विशेषांक का संपादन इस प्रकार से किया गया था कि अछूत समस्या का कोई भी पक्ष छूटने न पाए इसके लिये इसके संपादक पंडित नंदकिशोर तिवारी जी ने उस समय के प्रसिद्ध लेखकों से इस अंक के लिए सामग्री जुटाई थी। इस अंक की उत्तेजित सामग्री आज भी सोचने पर मजबूर कर देती है। इसी प्रसिद्ध अंक में अछूत समस्या पर केन्द्रित प्रेमचंद जी की मशहूर कहानी 'मंदिर' छपी थी। इस विशेषांक की सामग्री आज भी दलित चेतना को सही दिशा देने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। तिवारी जी के ही संपादन में 'चाँद' का एक 'पत्रांक' भी छपा जिसकी खूब चर्चा हुई। बावू जयशंकर प्रसाद, अवध उपाध्याय, नवीन जी, श्रीधर पाठक, रामचरित उपाध्याय, रामदास गौड़, आचार्य चतुरसेन, हरिऔध जी जैसे प्रतिष्ठित लेखकों ने इस अंक के लिए खास तौर पर अपनी विशिष्ट रचनाएँ दी थी। जून 1928 तक तिवारी जी 'चाँद' के संपादन से जुड़े रहे। इसके बाद पूरा भार रामरख सिंह सहगल जी ने उठाया।

लेकिन 'चाँद' के 'फाँसी अंक' ने जो इतिहास बनाया, वह अपने आप में बेजोड़ है। इस अंक का प्रकाशन नवम्बर 1928 में हुआ था तथा इस अंक के संपादक आचार्य चतुरसेन शास्त्री थे। शास्त्री जी ने अपनी उत्कृष्ठ संपादकीय दृष्टि से इस अंक को महत्वपूर्ण व कालजयी बना दिया। यह विशेषांक दीपावली के अवसर पर प्रकाशित हुआ था और चाँद पत्रिका के सातवें वर्ष का प्रथम अंक था। 'चाँद' के 'फाँसी अंक' में जो सामग्री प्रकाशित की गयी थी, वह अत्यंत मूल्यवान थी। फाँसी को एक क्रूर कर्म मानते हुये इस समाज को अमानवीय और असभ्य राज संस्कारों से जोड़ा गया था। इस सवा तीन सौ पृष्ठों के अंक में जो सामग्री संकलित की गयी थी वह देश और विदेशों से प्राप्त अनेक प्रमाणिक, ऐतिहासिक और मार्मिक सामग्री के आधार पर थी जो विद्रोह और बगावत को बढ़ावा देने वाली थी, इस कारण ब्रिटिश सरकारने 'चाँद के इस अंक का जब्त कर लिया। एवं इसके प्रकाशन पर रोक लगा दी तथा घोषणा करवा दी कि जिस किसी सज्जन के पास इसकी एक प्रति भी पायी जाते, इसे इसी आरोप में जेल की हवा खानी पड़ सकती है। परन्तु 'फाँसी अंक' की जो प्रतियाँ बाहर बिक्री हेतु चली गयी थी, वे पचास-पचास रुपए में बिकी जबकि उसका मूल्य केवल दस या पन्द्रह रुपए था। 'चाँद' के शुरूआती दिनों में कुछ माह तक रामकृष्ण मुकुन्द लघाटे भी सहगल जी के साथ इसके संपादक के रूप में जुड़े रहे थे, परन्तु उनका 24 वर्ष की अल्पायु में ही निधन हो गया था। इस अंक में अनेक क्रान्तिकारियों ने छद्म नाम से लेख लिखे थे, कई आलेख भगत सिंह के लिखे बताए जाते है। अपनी तरह का यह विस्फोटक अंक भारतीय क्रान्तिकारी आंदोलन का विशिष्ट दस्तावेज है।

'चाँद' का 'फाँसी अंक' जैसे प्रसिद्ध हुआ था उसी प्रकार 'चाँद' का 'मारवाडी अंक' अपने समय में काफी बहुचर्चित रहा था। परन्तु चर्चित होना एवं हिन्दी साहित्य में अपना स्थान बनाना, दोनो अलग-अलग बात है। इस अंक के साथ भी लगभग यही हुआ था क्योंकि अपने ही भाइयों के एक वर्ग और जाति विशेष के विरुद्ध सामग्री होने के कारण उसको वह स्थान नहीं मिल पाया जो 'फाँसी अंक' को मिला था। साहित्यिक होते हुये भी इसमें समाज सुधार की प्रवृत्ति बलवती रही। इस अंक को लोग आज भी नही भूले हैं। चाँद पत्रिका ने इस विशेषांक के साथ अपने जीवन के आठवें वर्ष में प्रवेश किया तथा चाँद का यह 'मारवाडी अंक' नवम्बर 1929 में प्रकाशित हुआ था। यह एक विशेषांक नही विस्तृत पोती है इसमें लगभग 400 पृष्ठ, करीब 50 व्यंग चित्र, बहुत से रंगीन चित्र तथा कई सौ सादे चित्र है। इसमें बहुत से लेख हैं, जो बहुत ही रोचक हैं, तथा कुछ कविताएँ भी है। इसके प्रथम लेख में, जो इस अंक के साठ पृष्ठों से अधिक में लिखा गया है, मारवाड़ी समाज का विस्तृत निरीक्षण किया गया है। इस अंक के व्यंग्य चित्रों में मारवाडी जीवन के उस अंश पर प्रकाश डाला गया है, जिसमें आमूल परिवर्तन और सुधार की आवश्यकता है। 'चाँद' का यह विशेषांक हृदय से प्रशंसा करने के योग्य है। पत्रिका ने 'वेश्या' विशेषांक भी निकाला था। 'चाँद' के संचालक रामरख सिंह सहगल अत्यन्त मेधावी,

कल्पनाशील और प्रबन्ध-कुशल व्यक्ति थे उन्होंने समय की नाड़ी को पकड़कर न केवल तत्कालीन श्रेष्ठ साहित्यिकों की रचनाओं से ही अपनी पत्रिका का शृंगार किया, बल्कि समय की आवश्यकता के अनुसार इसकी गतिविधियों में विविध परिवर्तन करते हुए चाँद को सर्वप्रिय और सर्वग्राह्य पत्रिका बना दिया था। उस जमाने में चाँद के एक के बाद एक जो विशेषांक निकले थे वे अपने ढंग के अनूठे एवं पठनीय थे। सह समस्य विशेषांक हिंदी साहित्य की अनमोल धरोहर है। पाठक आज भी इन विशेषांकों को पढ़कर उनसे प्रभावित हुए बगैर नही रह सकता। कह सकते है इन अंकों में प्रकाशित सामग्री की धार आज भी उतनी ही धारदार है जितनी इनके प्रथम प्रकाशन पर थी।

3. 'स्वदेश' हिंदी साप्ताहिक पत्र : 'स्वदेश' नाम का हिंदी समाचार पत्र गोरखपुर से प्रकाशित होता था। पंडित दशरथ प्रसाद द्विवेदी इसके संपादक थे। इस पत्र का 'विजय अंक वर्ष 1924 में प्रकाशित हुआ था। यह अंक काफी लोकप्रिय हुआ थां इस पत्रिका का 'दशहरा अंक' भी अपने समय में काफी प्रसिद्ध हुआ था, इन अंकों का संपादन पांडेय बेचन प्रसाद शर्मा 'उग्र' ने किया था। इन पत्रों को अंग्रेजी सरकार ने जब्त कर लिया था।

4. 'हिंदू पंच' पत्रिका : भारत के स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी पत्रों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है, इन पत्रों में 'हिंदू पंच' का स्थान बहुत उँचा है। हिंदू पंच अंग्रेजी शासनकाल में कलकत्ता से निकलने वाली एक हिंदी पत्रिका थी। इसका प्रकाशन वर्ष 1926 में कलकत्ता से आरंभ हुआ था और उसका संपादन का दायित्व वहन किया था द्विवेदी युग के प्रसिद्ध लेखक पंडित ईश्वरी दत्त शर्मा ने। पत्रिका के ध्येय वाक्य के रूप में प्रत्येक अंक के प्रथम पृष्ठ पर दो काव्य पंक्तियाँ इस प्रकार छपी रहती थी -

लज्जा रखने हिंदू की, हिंदू नाम बचाने को।
आया 'हिंदू पंच' हिंद में, हिंदू जाति जगाने को।।

यहाँ 'हिंदू' शब्द पर विशेष बल है और वह पुनर्वार आया है, लेकिन इसे आज के हिंदुत्व के बजाय 'कौम' या 'जाति' के अर्थ में लेना होगा। हिंदू अर्थात हिंदू, अर्थात हिंदुस्तान में रहने वाले सभी धर्मों, सम्प्रदायों का जातीय समूह जो अपने राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि मानता हो। हिंदू पंच का 'बलिदान अंक' पहली जनवरी, 1930 को कोलकाता से प्रकाशित हुआ था। यह अंक वर्ष-5 का पहला अंक था। इस अंक को अंग्रेजी सरकार ने प्रतिबंधित कर दिया था। यह अंक आज भी अमर है। इस 'बलिदान अंक' के संपादक श्री. कमलादत्त पाण्डेय थे, वे इस अंक की भूमिका में इस विशेषांक की सार्थकता को स्पष्ट करते हुए कहते है, ''यह एक अत्यंत आंदोलनकारी समय है। इस समय न केवल इस देश में बल्कि समग्र भूमण्डल पर और समस्त देशों और जातियों में एक अभूतपूर्व अतिक्रांति की उत्ताल तरंग उठी है। प्राचीन परम्पराओं और दास्ता को पकड़ने वाली रूढ़ियों के विरुद्ध एक धार विप्लव मचा है। ऐसे उथल-पुथलकारी युग में लाहौर राष्ट्रीय काँग्रेस के शुभ अवसर पर हम सहर्ष आपकी सेवा में यह विप्लवकारी 'बलिदान अंक' सादर समर्पित करते है।

'बलिदान अंक' का संयोजन पाँच विभागों के अन्तर्गत किया गया था। 1 - प्राचीन भारत के बलिदान - जिसमें वेद, महाकाव्य, पुराण आदि संस्कृत वाङ्मय में से शिवि, दीधीचि, प्रल्हाद, राम, कृष्ण, भीष्म, कर्ण, अभिमन्यू, जटायू, हरिश्चंद्र आदि की चर्चा की गयी है। कुल मिलाकर इस खण्ड में 13 आलेख संकलित किए गए है। 2 - मध्यकालीन भारत के बलिदान में उन बलिदानियों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है, जो मुगलों से लड़े थे। इनमें राणाप्रताप, शिवाजी, हमीर, हकीकत राय, बंदा वैरागी और सिख गुरुओं आदि को लेखर 1857 के नाना साहब, लक्ष्मी बाई, कुँअर सिंह आदि तक की त्याग और बलिदान की कथाएँ 30 आलेखों के तहत की गयी है. इनके साथ पन्ना, पद्मिनी, दुर्गावती, हाड़ा रानी, महारानी विन्दा आदि वीर नारियों की कथाएँ भी लिखी गयी है। 3 - वर्तमान भारत के बलिदानियों में लेखकों ने महाराष्ट्र और बंगाल के साथ 20 वीं सदी के शहिदों और जेल में बंद हिंदी प्रदेश के क्रांतिकारियों की जीवनियाँ दी गयी है। एक लेख जलियां वाला बाग पर है। इस खण्ड में कुल मिलाकर 32 आलेख विभिन्न लेखकों द्वारा लिखे गए है। 4 - कविता खण्ड में राष्ट्रीय कविताओं का चयन प्रस्तुत किया गया है। इस खण्ड में लगभग 21 कविताएँ संकलित की गई है। 5 - विदेशों में बलिदान, इसमें एक ओर जहाँ सुकरात, ईसा, जॉन ऑफ आर्क के त्याग और बलिदान पूर्ण जीवन की झलकियाँ दी गई है, वहीं फ्रेंच, आयरिश, तुर्की, चीनी, जापानियों की क्रांतियों की कथाएँ और कालमार्क्स, लेनिन तक अन्य अनेक बोल्शेविक क्रांतिकारियों की संघर्षगाथाएँ दी गई है। इस तरह हम देखते है किं हिंदू पंच के बलिदान अंक का फलक बहुत व्यापक है। इस अंक में लगभग 111 श्वेत-श्याम दुर्लभ चित्र भी संकलित किए गए है जो इस अंक को ऐतिहासिक रूप प्रदान करते है। यह अंक राजनीतिक विचारधारा के दृष्टिकोण से बहुत महत्त्वपूर्ण है। बलिदान अंक में संकलित सामग्री आज के लिए भी बहुत प्रासंगिक है इसमें पुराने इतिहास के बारे में तथा पत्रकारिता एवं स्वाधीनता आंदोलन के बारे में बहुत सी जानकारी प्राप्त होती हैं।

5. 'विशाल भारत' मासिक पत्रिका : 'प्रवासी' और 'मॉडर्न रिव्यू' के संपादक श्री. रामानंद बाबू हिंदी की व्यापकता से भली भाँती वाकिफ थे। देश के ज्यादा से ज्यादा पाठकों तक अपने विचार पहुँचाने के लिये वर्ष 1928 में उन्होंने हिंदी मासिक पत्रिका 'विशाल भारत' का प्रकाशन किया। इस पत्रिका का प्रकाशन कोलकाता से किया गया। बनारसीदास चतुर्वेदी उसके संस्थापक संपादक नियुक्त हुए। जनवरी 1928 में 'विशाल भारत' का प्रवेशांक निकला। साहित्य, समाज सुधार, राजनीति, इतिहास और

अर्थशास्त्र पर पठनीय लेखों से सुसज्जित पुरे 144 पृष्ठों में। बनारसीदास चतुर्वेदी के संपादन में 'विशाल भारत' जल्द ही हिंदी का सर्वश्रेष्ठ मासिक बन गया। शुरू के तीन वर्षो में ही उसने 'साहित्यांक' (मई, 1931 इसी अंक में प्रेमचंद की कहानी 'प्रेरणा' प्रकाशित हुई थी।) 'प्रवासी अंक' तथा 'कला अंक (जनवरी 1931) जैसे विशेषांक निकालकर अपनी धाक जमा ली। आगे चलकर इस पत्रिका के 'रवीन्द्र अंक', 'एंड्रूज अंक, 'पद्म सिंह शर्मा अंक' एवं 'राष्ट्रीय अंक आदि के कई विशिष्ट अंक निकले थे।

बनारसीदास चतुर्वेदी ने वर्ष 1928 से 1937 (लगभग 10 वर्षो तक) इस पत्रिका का संपादन कार्य किया। आगे चलकर बनारसी दास चतुर्वेदी के आग्रह पर वर्ष 1937 में 'विशाल भारत' का संपादन करने के लिए 'अज्ञेय' कलकत्ता आ गए, उन्होंने 'विशाल भारत' का लगभग ड़ेढ़ वर्ष तक संपादन का भार संभाला। इस अल्प अवधि में ही उन्होंने अपनी अमिट छाप छोड़ी। बाद मेंश्री. मोहन सिंग सेंगर तथा श्रीराम शर्मा भी इस प्रमुख पत्रिका का संपादन कार्य करते रहे। 'विशाल भारत' को उसका वास्तविक रुपाकार बनारसीदास चतुर्वेदी ने ही प्रदान किया था। यह पत्र 'सरस्वती' पत्रिका के बाद सबसे अधिक ख्याति प्राप्त पत्र रहा। इसी पत्र में प्रथम बार जनपदीय साहित्य की ओर ध्यान दिया गया था। संस्मरण और पत्र संग्रह की दृष्टि से भी इस पत्र का बहुत अधिक महत्व है। प्रवासी भारतीयों के प्रसंग में जो आंदोलन प्रारम्भ हुआ था, उसका प्रमुख माध्यम 'विशाल भारत' ही था। इसके लेखकों में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामानंद चटर्जी तथा कालिदास नाग प्रभृति थे। सामग्री चयन और कलात्मक मुद्रण, दोनो ही दृष्टियों से 'विशाल भारत' के प्रारम्भिक स्वरूप में हिंदी पत्रकारिता के श्रेष्ठतम रूप का दर्शन होता है।

6. 'हंस' मासिका पत्रिका : प्रेमचंद ने साहित्यिक पत्रिका 'हंस' की स्थापना वर्ष 1930 में बनारस में की थी। शुरू के दो वर्षो में महात्मा गांधी और कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी भी इसके संपादक मण्डल में शामिल रहे। 'हंस' का नामकरण जयशंकर प्रसाद जी ने किया था तथा 'हंस' का पहला अंक 10 मार्च 1930 को प्रकाशित हुआ। इस अंक के संपादकीय में प्रेमचंद जी कहते है कि, ''जब श्री रामचन्द्र जी समुद्र पर पुल बांध रहे थे, उस वक्त छोटे-छोटे-पशु-पक्षियों ने मिट्टी ला-लाकर समुद्र के पाटने में मदद की थी इस समय देश में उससे कही विकट संग्राम छिडा हुआ है। भारत ने शांतिमय समर की भेरी बजा दी है। हंस भी मानसरोवर की शांती छोड़कर अपनी नन्ही सी चोंच में चुटकी भर मिट्टी लिये हुए समुद्र पाटने, आजादी की जंग में योग देने चला है। समुद्र का विस्तार देखकर उसकी हिम्मत छूट रही है, लेकिन संघशक्ति ने उसका दिल मजबूत कर दिया है।'' प्रेमचंद मृत्यूपर्यंन्त मासिक रूप में इस पत्र को नियमित निकालते रहे। उनकी मृत्यू के बाद प्रसिद्ध कथाकार श्री. जैनेन्दर कुमार और प्रेमचंद जी की पत्नी श्रीमती शिवरानी देवी संयुक्त रूप से इसके संपादक रहे।

'हंस' पत्रिका के विश्वप्रसिद्ध विशेषांक आज भी हिंदी साहित्य मे अपना महत्वपूर्ण स्थान रकते है। हंस के विशेषांकों में स्वयं प्रेमचंद द्वारा वर्ष 1933 मे संपादित 'काशी अंक' के अलावा 'प्रेमचंद स्मृति अंक', 'एकांकी नाटक अंक', 'रेखाचत्रि अंक', 'कहानी अंक', 'प्रगती अंक', 'आचार्य द्विवेदी अभिनन्दनांक', 'स्वदेशांक', 'शान्ति अंक' एवं 'आत्मकथा अंक' आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय रहे। जैनेन्दर और शिवरानी देवी के बाद इसके सम्पादक शिवदान सिंह चौहान और श्रीपतराय और उसके बाद अमृतराय और तत्पश्चात नरोत्तम नागर रहे। प्रेमचंद की मृत्यू के बाद हंस कुछेक साल निकलने के बाद फिर बंद हो गया व कुछ अंतराल के बाद फिर शुरू हुआ लेकिन फिर कुछ वर्ष चलकर इसको बंद हो जाना पड़ा। कई दिनों बाद वर्ष 1959 में हंस का एक वृहत संकलन सामने आया जिसमें बालकृष्ण राव और अमृतराय के संयुक्त संपादन में आधुनिक साहित्य एवं उससे संबंधित नवीन मूल्यों पर विचार किया गया था।

इस पत्रिका 'आत्मकथा अंक' अपने दौर में काफी लोकप्रिय हुआ था। यह अंक पौष-माघ 1998 वि0 : जनवरी फरवरी 1932 ई0 को प्रकाशित हुआ था। इस आत्मकथा अंक में 52 आत्मकथात्मक लेखों को शामिल किया गया था। इन लेखों को लिखने वाले लेखक भी उस समय के विश्वप्रसिद्ध साहित्यकार थे जिनमें कुछेक नाम इस प्रकार है : - श्रीयुत जयशंकर प्रसाद जी, पं. रामचंद्र शुक्ल जी, शिवपूजन सहाय जी, जैनेन्द्र कुमार जी, श्रीमती शिवरानी देवी जी, धर्मपत्नी श्री. प्रेमचंद जी बी. ए., मुंशी दयानारायण निगम सम्पादक जमाना, श्रीयुत सुदर्शन जी एवं खुद प्रेमचंद जी। इस अंक की शुरुआत में जयशंकर प्रसाद जी की एक कविता आत्मकथा के रूप मे दर्शित की गयी है जो अद्वितीय है। अंक में एक से बढ़कर एक आत्मकथात्मक लेखों को शामिल किया गया था जो प्रसिद्ध कथाकारों के व्यक्तित्व व कृतित्व को दर्शाते है, इसी ऐतिहासिक अंक में प्रेमचंद जी की एकमात्र जीवनी जो खुद उन्होंने आत्मकथा के रूप में लिखी थी 'जीवन सार' शीर्षक से प्रकाशित हुई थी। इस अंक में प्रेमचंद जी की धर्मपत्नी श्रीमती शिवरानी देवी का 'मेरी गिरफ्तारी' नाम से एक आत्मकथात्मक लेख शामिल है जो उनकी देश के प्रति पूर्ण समर्पणता व निष्ठा को बखूबी दर्शित करता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि प्रेमचंद अपने पूरे जीवन में एक बार भी गिरफ्तार होकर जेल जाने के प्रमाण नही मिलते है जबकि उनकी पत्नी कई बार गिरफ्तार होकर जेल गई थी।

हंस का 'स्वदेशांक' वर्ष-3 के अक्तूबर-नवम्बर 1932 में प्रकाशित हुआ था। इस विशेषांक में लगभग 42 रचनाएँ स्वदेशी भावना से ओत-प्रोत संकलित की गई थी। इसी अंक में प्रेमचंद की कहानी 'डामुल का कैदी' एवं एक आलेख 'नवयुग' भी संकलित हुआ था। यह अंक आज भी रोचक

सामग्री के कारण हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

'हंस का प्रेमचंद : स्मृति अंक' के संबंध में भी पाठकों का परिचय कराना आवश्यक है। यह अंक मई 1937 में प्रेमचंद की मृत्यू के आठ महिने बाद प्रकाशित हुआ था। इस विशेषांक में अनेक विद्वान रचनाकारों के लेखों को शामिल कर इसका महत्व बढ़ा दिया था। इस विशेषांक का पहला ही लेख प्रेमचंद जी की धर्मपत्नी श्रीमती शिवरानी देवी द्वारा लिखित 'मैं लुट गई' शीर्ष से संकलित किया गया था जो एक पत्नी की नजरिये से अपनी पति को अश्रुपूरित एक छोटी सी श्रद्धांजली थी। इस लेख को पढ़ते समय पाठक भाव विभोर हुये बगैर नही रह सकता। प्रत्येक पाठक को एक बार अवश्य ही इस विशेषांक को पढ़ना चाहिए।

हंस काफी लंबे समय तक बंद रहने के पश्चात प्रेमचंद की मृत्यू की अर्धशती पर वर्ष 1986 में इसको पुनः शुरू किया गया। इस बार इसके संपादन और प्रकाशन का दायित्व वरिष्ठ कथाकार, उपन्यासकार श्री. राजेंद्र यादव जी ने संभाला। जिसे वे 27 साल से ज्यादा समय तक निर्वाध रूप से निकालते रहे। 28 अक्तूबर 2013 को अपनी मृत्यू तक श्री. राजेंद्र यादव ने हंस के 325 अंको का संपादन किया। इस दौरान साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में हंस एक परिघटना की तरह स्थापित हुआ। श्री. राजेन्द्र यादव जी की उत्कृष्ट संपादकीय की वजह से यह पत्र आम जनमानस में बेहद लोकप्रिय हुआ व आज भी इस पत्र को श्री. यादव की दमदार संपादकीय के लिये याद किया जाता है। हंस के अतिथि संपादकों द्वारा निकाले गये 'औरत उत्तरकथा अंक', 'मुसलमान अंक', 'इलेक्ट्रॉनिक मिडिया अंक' एवं 'सिनेमा अंक' आदी काफी लोकप्रिय हुये। राजेन्द्र यादव की मृत्यू के तत्काल बाद उन पर केन्द्रित एक 'स्मृति अंक' भी निकाला गया फिलहाल इस पत्रिका के संपादन का भार कथाकार संजय सहाय संभाल रहे है। हम उम्मीद करते है कि वे पूर्व की भांति ही इस लोकप्रिय पत्र की गरिमा बनाये रखेंगे व इसकी विचारोत्तक सामग्री से आज जनमानस का ज्ञानवर्धन करते रहेंगे।

समग्रतः कहा जा सकता है कि भारत के स्वाधीनता आंदोलन में उपरोक्त पत्र-पत्रिकाओं का कितना महत्वपूर्ण स्थान है यह सहर्ष ही समझा जा सकता है। तथा इन पत्रिकाओं की इन आंदोलन में जो भूमिका रही उससे इन्कार नहीं किया जा सकता है। यह कुछ महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ है जिनका विवरण प्रस्तुत किया जा चुका है। इन पत्रिकाओं के अलावा भी कई और भी पत्रिकाएँ है जिन्होंने विशेषांकों के तौर पर पाठकों की अतुलनीय सेवा की। पाठक इन पत्रिकाओं के विशेषांकों को देखे और इनकी ओजपूर्ण सामग्री का लाभ ले। आज भी इन पत्रिकाओं का महत्व किसी भी प्रकार से कम नही है। तथा ऐतिहासिक दृष्टीकोण से इनका अपना महत्व भी है।

- कृष्ण वीर सिंह सिकरवार, गांधीनगर भोपाल

बीते लम्हे

बीत गये जो लम्हें, अब वो हमेशा याद आएंगे,
गैर से पाया हुआ अपनों-सा प्यार आँखो को नम कर जाएंगे।
ज़िंदगी ने दिया था एक खूबसूरत सा पल,
जहाँ कदम रखे थे हमने वो था एक उम्मीदों भरा कल।
अनजानों के बीच एक अजीब सी घबराहट थी, नए चेहरे,
नई जगह और नए वक़्त की दिल को डरानेवाली सनसनाहट थी।
पर जब तुमने दे दिया दोस्ती का हाथ,
और कहा मैं हूँ तुम्हारे साथ।
सारे अनजाने बन गए अपने बंध गई प्रीत की डोर,
निकल पड़े हम बेखौफ होकर अपनी मंजिल की ओर।
न देखा हमने फिर कभी मुड़कर पीछे,
मिला था रास्ता मंजिल का और था सबकुछ कदमों के नीचे।
उम्मीदों के सपने कभी सोने नहीं देते थे,
पाया वो सब कुछ जिसके लिए कभी रोते थे।
सब कुछ मिलने की खुशी है मगर हो रही तुझसे जुदाई है,
इसी बात से आज फिर आँख भर आई है।
तेरा कर्ज चुका पाना शायद ही किसी के बस की बात है,
ज़िंदगी का हर पल, हर लम्हा अब तो तेरी ही सौगात है।
वादा है तुझसे हर कदम पर तेरा साथ निभाएंगे,
ज़िंदगी कि जंग हारने से पहले तेरा दीदार करने जरूर आएंगे।

- अभिषेक रंजन,
बैंक ऑफ़ इंडिया

मातृभाषा का गौरव

भारत माता का गौरव, अपनी मातृभाषा को हम भूल गये।
बचपन में सीखा था जिसको, आज उसको ही भूल गये।
अंग्रेजी के हुए दिवाने, अंग्रेजों की भाषा थी,
हिंद देश को गुलाम रखना, अंग्रेजों की ये अभिलाषा थी।
उसी अंग्रेजी के चक्कर में पडकर हिंदी से मुख मोड गये।
बचपन में सीखा था जिसको, आज उसी को ही भूल गये।

स्वतंत्रता की चिंगारी बनकर, जिसने आग लगाई थी,
अखबारों, नारों की भाषा बनकर जिसने अलख जगाई थी।
हिंदी भाषा के इस उपकार को भी हम भूल गये,
बचपन में सीखा था जिसको, आज उसी को ही भूल गये।

ज्ञान बुरा नहीं है, विदेशी भाषा का,
पर मुद्दा है, अपनी मातृभाषा को ठेस पहुंचाने का।
हिंदी है हम, वतन है हिंदोस्ता हमारा, इस नारे को भी हम भूल गये।
बचपन में सीखा था जिसको, आज उसी को ही भूल गये।

हिंदी भाषा तो हमारे सपनों की भाषा है, हिंदी भाषा तो हमारे अपनों की भाषा है।
हिंदी भाषा तो, भारत माता के गौरव की गाथा है।
विदेशी भाषा के चक्कर में, हम इस गौरव गान को ही भूल गये।
बचपन में सीखा था जिसको, आज उसी को ही भूल गये।

हिंदी भाषा तो ममता और प्रीत की भाषा है,
भारत माता की शोभा, उसके माथे की बिंदी है।
उस हिंदी भाषा से रिश्ते नाते क्यों भूल गये,
बचपन में सीखा था जिसको, आज उसको ही भूल गये।

हम कब तक हिंदी दिवस मनाते रह जायेंगे,
हिंदी में कार्य करने का सिर्फ संकल्प दोहराते रह जायेंगे।
हम सबका है सम्मान हिंदी ये प्रण हम कैसे भूल गए,
बचपन में सीखा था जिसको, आज उसको ही भूल गये।

आओ एक सच्चा कदम उठाए हम, हिंदी भाषा के गौरव को पूरी दुनिया में फैलाएँ हम,
एक नए सवेरे की शुरुआत करें हम, मंजिल ज्योति बूझे ना।
जाये में प्रण आज आत्मसात करें हम,
फिर गर्व से आने वाली नस्लों को हम बताएँगे, हिंदी है हम वतन है हिंदोस्ता हमारा।

- आनंद पाल, प्रधान नाविक
भारतीय तटरक्षक अवस्थान, रत्नागिरी

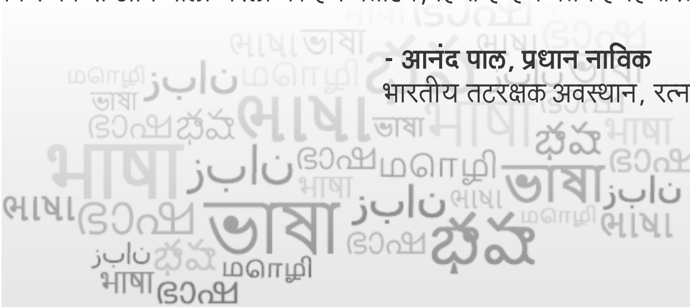

व्हाट्स अप्प में डूबा जमाना

सुबह सुबह आँखे खुलते ही,
शुरू होती ये कहानी सारी।
प्रभु के दर्शन हो ना हो,
मोबाइल के दर्शन बिना हो जाए जीना भारी।

आँखे खुली, मोबाइल उठा,
पढ़ डाली व्हाटस् अप्प चाट सारी।
गुड मॉर्निंग सर, गुड मॉर्निंग ब्रो कह के
की ऑफिस जाने की तैयारी।

चाहे हो रिश्तेदारों से मुलाक़ात,
या हो वरिष्ठ अधिकारी लेक्चर।
व्हाट्स अप्प के सहारे ही,
झेला जाता है ये टॉर्चर।

घर वालों से फोन पे बात करने का फैशन हुआ पुराना।
अब तो व्हाट्स अप्प पे मेसेज भेजकर,
पड़ता है अपना धर्म निभाना।

व्हाट्स अप्प ग्रुप पे होते हैं वरिष्ठ अधिकारियों के आदेश पास,
एकनोलेज ना करो तो कहते हैं,
एक मेसेज पढ़ने का टाइम भी नहीं तुम्हारे पास।

पार्टी की शान तो तभी बढ़ती है,
जब हो ग्रुप पे सेल्फी पोस्ट।
वरना काहे की पार्टी और काहे का होस्ट।

रात होते होते फोन भी,
चीख चीखकर ये कहता है।
अरे बस भी कर अब पगले,
दुनिया में और भी काम होते है।

तो भाइयों और बहनों हंसी और मज़ाक सब अपनी जगह,
दोस्तों और परिवार के साथ पर्सनल टच अपनी जगह।
मोबाइल छोड़ो, जरा आसपास नजर घुमाओ,
व्हाट्स अप्प पर मैसेज करने की बजाय,
फ़ेस तो फ़ेस इनट्रेक्शन बढ़ाओ।

व्हाट्स अप्प हमसे है, हम व्हाट्स अप्प से नहीं,
जितना जल्दी ये बात समझ लो,
ज़िदगी सुधार जाएगी वहीं।

अनू यादव
उप समादेशक,
भारतीय तटरक्षक अवस्थान, रत्नागिरी

हे रावण, क्यों तुझे लोग हर साल जला रहे है

हे रावण, क्यों तुझे लोग हर साल जलाते हैं,
क्यों तेरी ही इस तरह अग्निपरीक्षा लेते है।

ऐसा क्या किया तुने, तुझे ये लोग जलाते है,
क्यों तेरे अवगुणों को बार बार याद करते है।

तुने तो मात्र एक परस्त्री से विवाह करना चाहा था,
उसकी मर्जी के खिलाफ तूने उसे अपनाया नही था।

तू तो विद्वान, ब्राह्मण, शूर तथा शिवभक्त था,
तूझे मृत्यू देखकर भी भगवान के हाथों मरना था।

देख रावण, कलयुग में राम के नाम क्या चल रहा है,
कानून भी परस्त्री के साथ रहने पर अनुमति दे रहा है।

राजनेता भी राम के नाम रोटी सेक रहा है,
लुटेरा राम के नाम से धन कमा रहा है।

रावण, अरे क्या बना रखा इन्होंने इस राम को,
उसकी झूठी कसमें खाकर उसे बदनाम कर रहे है।

रावण तेरे अवगुण दूर करना तो दूर रहा,
तेरे से भी ज्यादा जघन्य अपराध कर रहे है।

रावण तुझे तो लोग हर साल जला रहे है,
राम तो यह देख के दिल ही दिल में जल रहा है।

क्या पता रावण, क्यों तुझे लोग हर साल जला रहे है
क्यों तेरी ही बार बार इस तरह अग्निपरीक्षा ले रहे है।

- डॉ. रवि गिरहे
बैंक ऑफ़ इंडिया

तस्वीर

मेरे कन्धे से ऊपर भी मैं ही हूँ,पर तुम देखते ही नहीं
जब तुम सड़क पे गुजरते हुवे,
अपने दोस्त को कुहनियां कर मेरी तरफ इशारा करते हो,
तब तुम भूल जाते हो कि मेरे पास भी आँखे हैं,
जिन्हें भान होता है, तुम्हारी नजरों का,
ये आँखे जो समझती चलती हैं, दुनिया की तस्वीरों को,
जब तुम कहते हो अपने अंतरतम की गहराइयों में, ''माल अच्छा है''
तुम देख नहीं पाते, मंजिलों की खोज में निकली,
अनन्त संभावनाओं को, तुम्ही दिखते हैं बस
आसपास घुमते हुवे मांस के लोथड़े,क्योंकि तुमने कभी कंधे से ऊपर देखा ही नहीं,
मेरे कंधे से ऊपर भी मैं ही हूँ, पर तुम देखते ही नहीं,
तुम आते हो मेरे पास, चाचाओं और फूफाओं की शक्लों में
और फिर देखकर कंधे के नीचे
कहते हो, ''लड़की अब बड़ी हो गयी है'' इस पर बंदिशें लगाओ।
कंधे से ऊपर जो देखते... तो देखते मेरी आँखों को,
कितने सपने मैंने बुने हैं, 'कल' के लिए...
कभी सुनते तो सुनते मेरी चहकती घुंघराली आवाज को,
तब तुम फतवे ना जारी करते...
पढ़ते मेरा दिमाग, जो बिखरे बिंदुओं को जोड़कर राह बनाने लगा है,
ये चुनना चाहता है अरमानो के पंख लगाकर उड़ने की आजादी,
जब में सोचना और तर्क करना चाहती हूँ, और पूछना,
सवाल करना चाहती हूँ,
तब तुम डपट देते हो कहकर, ''नारी तुम केवल श्रद्धा हो''
और छीन लेते हो मुझसे चुनने का अधिकार,
दब जाऊँ मैं, अपनी ही महानता के बोझ से...
ये आजादी 'घर की वस्तु' छोड़ 'बाहर की वस्तु' बनने की नहीं है,
जो परोसता है बाजार,
बेढ़बता और फूहड़ता को आधुनिकता के लबादे में,
वो आजादी जो मुझे मेरे अलग अलग पुर्जो में बाँट देती है,
जो बताती है की मैं कितनी खूबसूरत हूँ, मेरे अंडरआर्म्स पर निर्भर करता है,
मैं इतनी आजाद भी नहीं होना चाहती की तुम छिड़को ''डिओ''
और मैं उड़ती हुई गिरूँ तुम्हारे ऊपर, चीज़ें इतनी आसान तो कभी ना थीं।
कभी बातें करते मुझसे ढेर सारी, प्यार और सेक्स की बातों के अलावा,
तुम चौंकते ये जानकर, की मुझे भी 'दुनियादारी' आती है,
तब तुम टालते ना मुझे कहकर, ''लड़की का मैटर''
पर अफ़सोस, तुमने मुझे कभी कंधे से ऊपर देखा ही नहीं,
मेरे कंधे से ऊपर भी मैं ही हूँ, पर तुम देखते ही नहीं....

- शशांक सिंह,
आयकर निरीक्षक, रत्नागिरी

दौर जज्बातों का...

याद आता है कभी-कभी एक ख़ाकी पोशाख हुआ करता था।
बड़े आदब से उसे पहना जाता था।एक पुरानी साइकिल, चहरे पे चश्मा और
कंधे से लटका बड़ा सा थैला दूर से ही दिखता था।
कस्बे की हर चौकट को था जिसका इंतजार वो डाकिया कहलाता था।
गाँव की पंचायत की बेंच पर बैठता
तो बेचारा थकान से थोड़ी सी राहत पाता।
पसीने से लतपत अपने चेहरे को फटे रुमाल से फिर वौ पौछता।
गुड्डी, मुन्नी, पिंकी दौड़कर उसे पानी लाते
तो कोई मुहब्बत से उसे चाय पिलाता।
'डाकिया आया, डाकिया आया' खबर पूरे कस्बे मे पहूंचती
तो दादी-नानी सबसे पहले भागकर आती।
मेला-सा लग जाता था अपनी-अपनी चिठ्ठी पाने का,
हर खुशी हर गम साथ-साथ जीने का। पढ़े हुए खत का जवाब लिखवाने
फिर कतार सी लग जाती थी। सभी के ज़ज़्बात कागज पर सजाते
उस फरिश्ते में इन्सानियत झलकती थी।
अगली बार जल्द लौटूंगा यह वादा फिर वो निभाता।
गाँव की ज़ज़्बातों की लड़िया बरसों से वो सँवारता।
आज शहर से अपने क़स्बे जाता हूँ कभी-कभी
तो याद आती हैं व्याह गयी गुड्डी, मुन्नी, पिंकी और गुजर गयी दादी-नानी।
पंचायत का वो बेंच सुना लगता हैं उजड़े आँगन की तरह
लाल रंग का वो डाक-डिब्बा बरसों से वीरान हुआ।
अब कहाँ कोई खत आता हैं? कहाँ कोई जवाब लिखता हैं?
कहाँ दौड़कर कोई पानी लाता हैं? अब कहाँ कोई चाय पिलाता हैं?
अब कहाँ वो फरिश्ता भी दिखाता हैं?
अब कोई खबर चौकट तक नही पहोंचती,
अब तो खबरे वायरल होती हैं मोबाईल पे।
अब खत का जवाब लिखती डाकिया की इन्सानियत कही नज़र नही आती।
ज़ज़्बातों को भड़काने की लत और साजिश ही हर तरफ पनपती।
डाकिया की वो कलम इश्क़ करती थी कागज़ के साथ।
कागज़ भी तो ज़ज़्बातों का सिंगार करता था अपनों के साथ।
अब मोबाइल की चिकनी स्क्रीन पे ज़ज़्बात लुप्त हैं, दिल से ज्यादा तो तेज
उँगलियाँ ही तृप्त हैं।
'इंस्टंट-इंस्टंट' के दौर ने तो रिश्तों में डिस्टन्स बढ़ाया है।
हर ज़ज़्बात की नमी अब सुक चुकी हैं,
ज़माने के इशारों पे नाचती अंतरात्मा बिक चुकी हैं।
सीधा-सादा डाकिया जादू करता था महान,
एक ही थैले में भरता था गम और मुस्कान।

तकनीक का विवेक से प्रयोग ही हैं हर ज़ज़्बात का सम्मान।
तकनीक का विवेक से प्रयोग ही हैं हर ज़ज़्बात का सम्मान।
याद आता हैं कभी कभी ....

- सूरज महादेव माने
बैंक ऑफ़ इंडिया

क्या करें महंगाई जो बढ रही है

अखबारो में खबर आ रही है,
इन्फ्लेशन रेट बढ गई है,
खबरो मे बाजार बना है,
प्राईस इन्डेक्स बढ रहा है,
क्या करे महंगाई जो बढ रही है।

मिर्च से तिख़ापन दूर हो रहा है,
चीनि से मिठापन कम हो रहा है,
करेले से कडवापन खत्म हो रहा है,
दूध-घी का सौंधापन कम हो रहा है,
क्या करें महंगाई जो बढ रही है।

चावल ने पकना छोड दिया है,
गेंहु ने सब से मुंह मोड लिया है,
हलदी भी पिली लगती नही है,
मसालों से खुशबू आती नही है,
क्या करे महंगाई जो बढ रही है।

खुशियाँ सारी क्रेडिट हुई है,
परेशानियाँ भी डेबिट हुई है,
शादियो का करना हो गया मुश्कील,
घर भी अब होता नही आसानी से हासील,
क्या करे महंगाई जो बढ रही है।

पुछिए ना ''बात मन की''
आज कुछ क्रोध सा आ रहा है
आंसुओं का एक दरिया
सब के अंदर से बह रहा है
चिंता और चिंतन दोनो

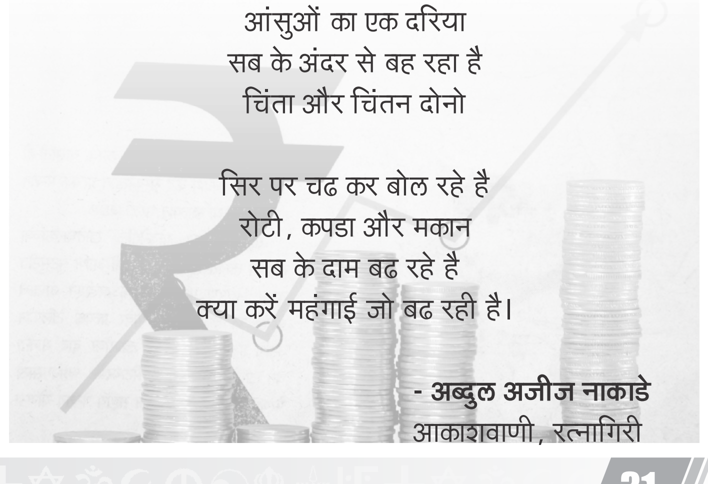

सिर पर चढ कर बोल रहे है
रोटी, कपडा और मकान
सब के दाम बढ रहे है
क्या करें महंगाई जो बढ रही है।

- अब्दुल अजीज नाकाडे
आकाशवाणी, रत्नागिरी

नगर राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता वर्ष 2017 -18

प्रथम क्रमांक का शील्ड तथा प्रमाणपत्र लेते समय कोंकण रेलवे, क्षेत्रीय प्रबंधक श्री. उपेंद्र शेंड्ये तथा उपमुख्य राजभाषा अधिकारी श्री. कृष्णा लंबानी

द्वितीय क्रमांक का शील्ड तथा प्रमाणपत्र लेते समय आकाशवाणी रत्नागिरी केंद्रप्रमुख श्री. सुहास विद्वांस तथा श्री. डोंगरे

तृतीय क्रमांक का शील्ड तथा प्रमाणपत्र लेते समय भारतीय तटरक्षक अवस्थान,रत्नागिरी के समादेशक श्री. सुधाकर पाटील तथा उत्तम अधिकारी जे. गौतम

प्रोत्साहन शील्ड तथा प्रमाणपत्र लेते समय सीमा शुल्क कार्यालय, रत्नागिरी के
सहायक आयुक्त एस. कृष्णमूर्ती तथा राजभाषा सहायक श्रीमती कांबळे, श्री. लक्ष्मीकांत भाटकर

हिंदी पख़वाडा 15 अगस्त से 31 अगस्त 2018 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में प्रतियोगिता का आयोजन

प्रतियोगिता आयोजक	प्रतियोगिता	पुरस्कार प्राप्त
सीमा शुल्क कार्यालय	प्रशासनिक शब्दावली	1. जे. गौतम - भारतीय तटरक्षक 2. मुकेश कुमार कुशवाह - सीमा शुल्क मनीष कुमार - भारतीय तटरक्षक (सं.) 3. दीप देवानी - सीमा शुल्क मो. नदीम - भारतीय तटरक्षक (सं.) प्रोत्साहन : फत्तेसिंह - भा.जी.बिमा निगम (सं.) श्रीमती सावनी माईनकर - कोंकण रेलवे (सं.)
भारतीय जीवन बीमा निगम	श्रुत लेखन प्रतियोगिता	1. आनंद पाल - भारतीय तटरक्षक 2. दिनेश के राम - भारतीय तटरक्षक 3. नेहा गिरीष तोरसकर - कोंकण रेलवे प्रोत्साहन : दत्ताराम ढेपसे - भारतीय जीवन बिमा निगम मनीषा शेंड्ये - भारतीय जीवन बिमा निगम
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर/ जीएसटी कार्यालय	निबंध लेखन	1. अब्दुल अजीज वजीर नाकाडे - आकाशवाणी 2. सूरज महादेव माने - बैंक ऑफ़ इंड़िया 3. प्रशांत शिंदे - भारतीय तटरक्षक प्रोत्साहन : विकास हेलोडे - न्यू इंडिया इश्योरन्स कं. हेमंत लिम्हारे अभिषेक पाल - केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर
भारतीय तटरक्षक अवस्थान	काव्य वाचन प्रतियोगिता	1. सूरज माने - बैंक ऑफ़ इंडिया 2. शशांक सिंह - आयकर 3. आनंद पाल - भारतीय तटरक्षक प्रोत्साहन : श्रीमती अन्नू यादव - भारतीय तटरक्षक अब्दुल अजीज वजीर नाकाडे - आकाशवाणी वासुदेव गवस - कोंकण रेलवे मनीषकुमार पडिया - बैंक ऑफ़ इंडिया
आयकर कार्यालय	आशुभाषण प्रतियोगिता	1. शशांक सिंह - आयकर 2. पूजा खानवाले - बैंक ऑफ़ इंडिया सूरज माने - बैंक ऑफ़ इंडिया (सं.) 3. चंद्रकांत कुमार - भारतीय तटरक्षक सुभाष सिंह - भारतीय तटरक्षक (सं.) प्रोत्साहन : अब्दुल अजीज वजीर नाकाडे - आकाशवाणी नितिन रसाल - सीमा शुल्क (सं.)

हिंदी पख़वाडा 15 अगस्त से 31 अगस्त 2018
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में प्रतियोगिता का आयोजन

राजभाषा रत्नसिंधु

सीमा शुल्क कार्यालय - प्रशासनिक शब्दावली

भारतीय जीवन बीमा निगम - श्रुत लेखन प्रतियोगिता

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर - निबंध लेखन

भारतीय तटरक्षक अवस्थान - काव्य वाचन प्रतियोगिता

आयकर कार्यालय - आशुभाषण प्रतियोगिता

राजभाषा विभाग, भारत सरकार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रत्नागिरी

बैंक ऑफ़ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, शिवाजीनगर, रत्नागिरी 415 639 (महाराष्ट्र)